सर्वशक्तिवान
बाप(भगवान) का
साथ

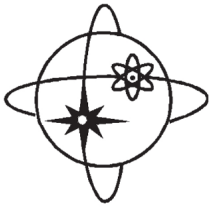

कृति

(संकलन)

स्पार्क *(SpARC)*

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय
एवं
राजयोग एज्युकेशन एवं शोध प्रतिष्ठान
पाण्डव भवन, आबू पर्वत, राजस्थान

COMPANION OF GOD

सर्वशक्तिवान
बाप(भगवान) का
साथ

सर्वशक्तिवान
बाप(भगवान) का
साथ

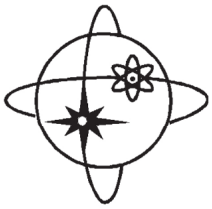

कृति
(संकलन)
स्पार्क (SpARC)

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय
एवं
राजयोग एज्युकेशन एवं शोध प्रतिष्ठान
पाण्डव भवन, आबू पर्वत, राजस्थान

COMPANION OF GOD

सर्वशक्तिवान
बाप(भगवान) का
साथ

➢ जिन बच्चों की जीवन रूपी नईया बाप के साथ में होगी वह हिलेगी नहीं। अभी तुम परीक्षाओं रूपी सागर के बीच में चल रहे हो। तो जिनका कनेक्शन अर्थात् जिनका हाथ बापदादा के हाथ में होगा उनकी यह जीवन रूपी नैया न हिलेगी न डूबेगी। तुम बच्चे इसको ड्रामा का खेल समझकर चलेंगे तो डगमग नहीं होंगे। और जिसका बुद्धि रूपी हाथ -साथ ढीला होगा वह डोलते रहेंगे। इसलिए बच्चों को बुद्धि रूपी हाथ मजबूत रखने का खास ध्यान रखना है।

22.1.69

➢ कल्याणकारी बाप जो कहते हैं, जो कराते हैं - उसमें ही कल्याण है। इसमें एक-एक महावाक्य में, एक-एक नज़र में बहुत कल्याण है।

23.1.69 .

➢ आपके उमंगों के साथ बापदादा की भी मदद है। जितना आप अपने में निश्चय रखेंगे उतना बापदादा भी अवश्य मददगार बनते हैं।

28.9.69

➢ साथ किसके रहेंगे? साथी अंगुली छोड़ दे तो क्या करेंगे? सभी अपना साथ निभायें। बापदादा तो किस न किस रुप से साथ निभाने अर्थात् अंगुली पकड़ने की कोशिश करते रहते हैं। इतने तक जो बिल्कुल साँस निकलने तक, साँस निकलने वाला भी होता है तो भी जान भरते हैं। लेकिन कोई आक्सीजन लगाने ही न दे, नली को ही निकाल दे तो क्या करेंगे!

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करेः-
स्पार्क – आध्यात्मिक अनुप्रयोग अनुसन्धान केन्द्र
(SpARC – Spiritual Applications Research Centre),
बेहतर विश्व निर्माण अकादमी,
ज्ञानसरोवर, आबू पर्वत–307501
राजस्थान, भारत
मोबाईलः +919414003497, +919414082607
फैक्स – 02974-238951
ई-मेल – bksparc@gmail.com,
sparc@bkivv.org

➢ जिन बच्चों की जीवन रूपी नईया बाप के साथ में होगी वह हिलेगी नहीं। अभी तुम परीक्षाओं रूपी सागर के बीच में चल रहे हो। तो जिनका कनेक्शन अर्थात् जिनका हाथ बापदादा के हाथ में होगा उनकी यह जीवन रूपी नैया न हिलेगी न डूबेगी। तुम बच्चे इसको ड्रामा का खेल समझकर चलेंगे तो डगमग नहीं होंगे। और जिसका बुद्धि रूपी हाथ -साथ ढीला होगा वह डोलते रहेंगे। इसलिए बच्चों को बुद्धि रूपी हाथ मजबूत रखने का खास ध्यान रखना है।

22.1.69

➢ कल्याणकारी बाप जो कहते हैं, जो कराते हैं - उसमें ही कल्याण है। इसमें एक-एक महावाक्य में, एक-एक नज़र में बहुत कल्याण है।

23.1.69 .

➢ आपके उमंगों के साथ बापदादा की भी मदद है। जितना आप अपने में निश्चय रखेंगे उतना बापदादा भी अवश्य मददगार बनते हैं।

28.9.69

➢ साथ किसके रहेंगे? साथी अंगुली छोड़ दे तो क्या करेंगे? सभी अपना साथ निभायें। बापदादा तो किस न किस रुप से साथ निभाने अर्थात् अंगुली पकड़ने की कोशिश करते रहते हैं। इतने तक जो बिल्कुल साँस निकलने तक, साँस निकलने वाला भी होता है तो भी जान भरते हैं। लेकिन कोई आक्सीजन लगाने ही न दे, नली को ही निकाल दे तो क्या करेंगे!

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करेः-
स्पार्क – आध्यात्मिक अनुप्रयोग अनुसन्धान केन्द्र
(SpARC – Spiritual Applications Research Centre),
बेहतर विश्व निर्माण अकादमी,
ज्ञानसरोवर, आबू पर्वत–307501
राजस्थान, भारत
मोबाईलः +919414003497, +919414082607
फैक्स – 02974-238951
ई-मेल – bksparc@gmail.com,
sparc@bkivv.org

➢ अधिकारी समझो तो फिर माँगने की आवश्यकता नहीं।

28.11.69

➢ बाप को सदैव साथ रखेंगे तो माया देखेगी इसके साथ सर्वशक्तिवान बाप है तो वह दूर से ही भाग जायेगी। अकेला देखती है तब हिम्मत रखती है।

25.1.70

➢ यह कब सोचा था कि हम ही देवता थे? सोचा क्या था और बनते क्या हो? बिन मांगे अमूल्य रत्न मिल जाते हैं। ऐसे पद्मापदम भाग्यशाली अपने को समझते हो? प्रेजीडेंट आदि भी आपके आगे क्या हैं? इतनी ऊंची दृष्टि, इतना ऊंचा स्वमान याद रहता है कि कब भूल भी जाते हो?

➢ एक बात सदैव याद रखो कि बाप मेरा सर्वशक्तिवान है। हम सभी से श्रेष्ठ सूर्यवंशी हैं। हमारे ऊपर माया कैसे वार कर सकती है। अपना बाप, अपना वंश याद रखेंगे तो माया कुछ भी नहीं कर सकेगी।

26.1.70

➢ सर्वशक्तिमान के बच्चे अर्थात् सर्वशक्तिमान। ऐसे कभी नहीं कहें कि मैं यह नहीं कर सकती। सब कुछ कर सकती हूँ। कोई भी असम्भव बात नहीं। कोई मुश्किल बात भी सहज। उनके लिए कुछ मुश्किल होता है? नहीं। मास्टर सर्वशक्तिमान बनना है। एक शक्ति की भी कमी न रहे। जहाँ भी अकेला बनो वहाँ साथ समझो।

➢ बाप अकेला रहता है या साथ में रहता है? अकेला रहना ही साथ

➢ अधिकारी समझो तो फिर माँगने की आवश्यकता नहीं।

28.11.69

➢ बाप को सदैव साथ रखेंगे तो माया देखेगी इसके साथ सर्वशक्तिवान बाप है तो वह दूर से ही भाग जायेगी। अकेला देखती है तब हिम्मत रखती है।

25.1.70

➢ यह कब सोचा था कि हम ही देवता थे? सोचा क्या था और बनते क्या हो? बिन मांगे अमूल्य रत्न मिल जाते हैं। ऐसे पद्मापदम भाग्यशाली अपने को समझते हो? प्रेजीडेंट आदि भी आपके आगे क्या हैं? इतनी ऊंची दृष्टि, इतना ऊंचा स्वमान याद रहता है कि कब भूल भी जाते हो?

➢ एक बात सदैव याद रखो कि बाप मेरा सर्वशक्तिवान है। हम सभी से श्रेष्ठ सूर्यवंशी हैं। हमारे ऊपर माया कैसे वार कर सकती है। अपना बाप, अपना वंश याद रखेंगे तो माया कुछ भी नहीं कर सकेगी।

26.1.70

➢ सर्वशक्तिमान के बच्चे अर्थात् सर्वशक्तिमान। ऐसे कभी नहीं कहें कि मैं यह नहीं कर सकती। सब कुछ कर सकती हूँ। कोई भी असम्भव बात नहीं। कोई मुश्किल बात भी सहज। उनके लिए कुछ मुश्किल होता है? नहीं। मास्टर सर्वशक्तिमान बनना है। एक शक्ति की भी कमी न रहे। जहाँ भी अकेला बनो वहाँ साथ समझो।

➢ बाप अकेला रहता है या साथ में रहता है? अकेला रहना ही साथ

है। बाहर का अकेलापन और अन्दर का साथ। बाहर के साथ से अकेला-पन भूल जाते हैं। लेकिन बाहर से अकेले अन्दर से अकेले नहीं।

14.5.70

➢ जब बाप का स्नेह स्मृति में रहेगा तो सर्वशक्तिमान के स्नेह के आगे समस्या क्या है।

➢ अपने को अकेला कभी भी नहीं समझो। साथी के बिना जीवन का एक सेकेण्ड भी न हो। जो स्नेही साथी होते हैं वह अलग नहीं होते हैं। साथी को साथ न रखने से, अकेला होने से माया जीत लेती है।

23.10.70

➢ महारथी बनने लिए सिर्फ दो बातें याद रखो। कौन सी? एक तो अपने को सदैव साथी के साथ रखो। साथी और सारथी, वह है महारथी।

➢ पुरुषार्थ में कमजोरी के दो कारण हैं। बाप के स्नेही बने हो लेकिन बाप को साथी नहीं बनाया है। अगर बापदादा को सदैव साथी बनाओ तो जहाँ बापदादा साथ है वहाँ माया दूर से मूर्छित हो जाती है।

➢ बापदादा को अल्प समय के लिये साथी बनाते हैं इसलिये शक्ति की इतनी प्राप्ति नहीं होती है। सदैव बापदादा साथ हो तो सदैव बापदादा से मिलन मनाने में मग्न हों। और जो मग्न होता है उसकी लगन ओर कोई तरफ लग न सके।

➢ अगर सारे दिनचर्या में हर कार्य बाप के साथ करो तो क्या माया डिस्टर्ब कर सकती है? बाप के साथ होंगे तो माया डिस्टर्ब नहीं करेगी।

प्यार का अनुभव कर सकते, सारे कल्प में आत्माओं का प्यार, महात्माओं का, धर्मात्माओं का प्यार अनुभव किया लेकिन परमात्म प्यार सिर्फ अब संगमयुग पर होता है, जो आप सभी बच्चे अनुभव कर रहे हैं। कोई आपसे पूछे परमात्मा कहाँ है? तो क्या जवाब देंगे? मेरे साथ है। मेरे साथ ही रहते हैं। मेरे दिल में ही रहते हैं। ऐसा अनुभव कर रहे हो ना! आप ही जानते हो और आपको ही इस प्यार का अनुभव है कि हमारे दिल में बाप रहते और बाप के दिल में हम रहते। जानते हो कि यह परमात्म प्यार का नशा हमें ही अनुभव करने का भाग्य प्राप्त हुआ है। जब किसी से भी प्यार हो जाता है तो उसकी निशानी क्या होती है? उसकी निशानी है उसके ऊपर कुर्बान होना। तो परमपिता परमात्मा आप बच्चों से क्या चाहते हैं, वह तो आप सब जानते हो। बाप की हर एक बच्चे के प्रति यही चाहना है कि मेरा एक एक बच्चा बाप समान बने।

➢ 15-3-10

है। बाहर का अकेलापन और अन्दर का साथ। बाहर के साथ से अकेला-पन भूल जाते हैं। लेकिन बाहर से अकेले अन्दर से अकेले नहीं।

14.5.70

➢ जब बाप का स्नेह स्मृति में रहेगा तो सर्वशक्तिमान के स्नेह के आगे समस्या क्या है।

➢ अपने को अकेला कभी भी नहीं समझो। साथी के बिना जीवन का एक सेकेण्ड भी न हो। जो स्नेही साथी होते हैं वह अलग नहीं होते हैं। साथी को साथ न रखने से, अकेला होने से माया जीत लेती है।

23.10.70

➢ महारथी बनने लिए सिर्फ दो बातें याद रखो। कौन सी? एक तो अपने को सदैव साथी के साथ रखो। साथी और सारथी, वह है महारथी।

➢ पुरुषार्थ में कमजोरी के दो कारण हैं। बाप के स्नेही बने हो लेकिन बाप को साथी नहीं बनाया है। अगर बापदादा को सदैव साथी बनाओ तो जहाँ बापदादा साथ है वहाँ माया दूर से मूर्छित हो जाती है।

➢ बापदादा को अल्प समय के लिये साथी बनाते हैं इसलिये शक्ति की इतनी प्राप्ति नहीं होती है। सदैव बापदादा साथ हो तो सदैव बापदादा से मिलन मनाने में मग्न हों। और जो मग्न होता है उसकी लगन ओर कोई तरफ लग न सके।

➢ अगर सारे दिनचर्या में हर कार्य बाप के साथ करो तो क्या माया डिस्टर्ब कर सकती है? बाप के साथ होंगे तो माया डिस्टर्ब नहीं करेगी।

4

प्यार का अनुभव कर सकते, सारे कल्प में आत्माओं का प्यार, महात्माओं का, धर्मात्माओं का प्यार अनुभव किया लेकिन परमात्म प्यार सिर्फ अब संगमयुग पर होता है, जो आप सभी बच्चे अनुभव कर रहे हैं। कोई आपसे पूछे परमात्मा कहाँ है? तो क्या जवाब देंगे? मेरे साथ है। मेरे साथ ही रहते हैं। मेरे दिल में ही रहते हैं। ऐसा अनुभव कर रहे हो ना! आप ही जानते हो और आपको ही इस प्यार का अनुभव है कि हमारे दिल में बाप रहते और बाप के दिल में हम रहते। जानते हो कि यह परमात्म प्यार का नशा हमें ही अनुभव करने का भाग्य प्राप्त हुआ है। जब किसी से भी प्यार हो जाता है तो उसकी निशानी क्या होती है? उसकी निशानी है उसके ऊपर कुर्बान होना। तो परमपिता परमात्मा आप बच्चों से क्या चाहते हैं, वह तो आप सब जानते हो। बाप की हर एक बच्चे के प्रति यही चाहना है कि मेरा एक एक बच्चा बाप समान बने।

➢ 15-3-10

69

31.12.2008

➢ बापदादा कम्बाइन्ड है, कहते हो ना, साथ है नहीं कहते हो, कम्बाइन्ड है। तो ऐसे समय पर अगर कुछ भी हो तो बापदादा कम्बाइन्ड है उसको सामने लाके फिर अर्पण कर दो।

➢ जो भी बातें ऐसी आवे जो बेकार है, आनी नहीं चाहिए लेकिन आ जाती है क्योंकि पेपर तो होना है ना! तो क्या करेंगे? अगर ऐसी कोई बात आवे तो बापदादा को दे देना। देना आता है ना! लेना तो आता है लेकिन देना भी आता है ना। छोटे बन जाना। जैसे छोटे बच्चे होते है ना वह क्या करते है कोई भी चीज़ पसन्द नहीं आती है तो क्या करते है? मम्मी यह आप सम्भलो। ऐसे ही छोटे बनके बाप को दे दो। फिर अगर आवे, आयेगी, बापदादा ने देखा है कि बहुत समय रखी है ना, तो छोड़ने से फिर आती भी ह ै लेकिन अगर आवे भी तो यही सोचना कि दी हुई चीज़ यूज़ की जाती है क्या! देना अर्थात् आपके पास आई, तो अमानत आई। आपने तो दे दी ना! तो आपकी रही नहीं। अमानत में ख्यानत नहीं करना चाहिए। आपको मदद मिलेगी तो यह मेरी नहीं है, यह अमानत है। मैंने दे दी इसमें फायदा हो जायेगा। क्योंकि समय कम है और पुरुषार्थ आपको तीव्र करना है।

31-12-09

➢ परमात्म प्यारे कोटो में कोई बच्चे हैं क्योंकि इस समय ही परमात्म माया का डिस्ट्रक्शन हो जायेगा। तो भल बाप के स्नेही बने हो लेकिन साथी नहीं बनाया है। हाथ पकड़ा है साथ नहीं लिया है इसलिए माया द्वारा घात होता है। गलतियों का कारण है गफलत। गफलत गलतियां कराती है।

29.10.70

➢ कम्बाइन्ड अपने को समझो। बापदादा तो सेकेण्ड, सेकेण्ड का साथी है। जब से जन्म लिया है तब से लेकर साथ है। यहाँ जन्म भी इस समय होता है, साथी भी इस समय मिलता है। लौकिक में जन्म पहले होता है और साथी बाद में। यहाँ अभी-अभी जन्म, अभी-अभी साथी।

21.1.71

➢ एक तो साथी को सदैव साथ रखो। दूसरा-साक्षी बनकर हर कर्म करो। तो साथी और साक्षी-ये दो शब्द प्रैक्टिस में लाओ तो यह बन्धनमुक्त की अवस्था बहुत जल्दी बन सकती है।

13.3.71

➢ एक का संग है तो अनेक संगदोष से छूट जायेंगे। संगदोष कई प्रकार के दोष पैदा कर देते हैं। इसलिए इसका बहुत ध्यान रखना। एक बाप दूसरे हम, तीसरा न कोई। जब ऐसी स्थिति होगी तो फिर सदैव आप लोगों के मस्तक से तीसरे नेत्र का साक्षात्कार होगा।

25.3.71

➢ जितना समय साक्षी अवस्था की स्थिति रहती है उतना ही बाप साथी भी याद रहता है अर्थात् साथ रहता है। तो साथ भी है और साक्षी भी है।

31.12.2008

➢ बापदादा कम्बाइन्ड है, कहते हो ना, साथ है नहीं कहते हो, कम्बाइन्ड है। तो ऐसे समय पर अगर कुछ भी हो तो बापदादा कम्बाइन्ड है उसको सामने लाके फिर अर्पण कर दो।

➢ जो भी बातें ऐसी आवे जो बेकार है, आनी नहीं चाहिए लेकिन आ जाती है क्योंकि पेपर तो होना है ना! तो क्या करेंगे? अगर ऐसी कोई बात आवे तो बापदादा को दे देना। देना आता है ना! लेना तो आता है लेकिन देना भी आता है ना। छोटे बन जाना। जैसे छोटे बच्चे होते है ना वह क्या करते है कोई भी चीज़ पसन्द नहीं आती है तो क्या करते है? मम्मी यह आप सम्भलो। ऐसे ही छोटे बनके बाप को दे दो। फिर अगर आवे, आयेगी, बापदादा ने देखा है कि बहुत समय रखी है ना, तो छोड़ने से फिर आती भी ह ै लेकिन अगर आवे भी तो यही सोचना कि दी हुई चीज़ यूज़ की जाती है क्या! देना अर्थात् आपके पास आई, तो अमानत आई। आपने तो दे दी ना! तो आपकी रही नहीं। अमानत में ख्यानत नहीं करना चाहिए। आपको मदद मिलेगी तो यह मेरी नहीं है, यह अमानत है। मैंने दे दी इसमें फायदा हो जायेगा। क्योंकि समय कम है और पुरुषार्थ आपको तीव्र करना है।

31-12-09

➢ परमात्म प्यारे कोटो में कोई बच्चे हैं क्योंकि इस समय ही परमात्म माया का डिस्ट्रक्शन हो जायेगा। तो भल बाप के स्नेही बने हो लेकिन साथी नहीं बनाया है। हाथ पकड़ा है साथ नहीं लिया है इसलिए माया द्वारा घात होता है। गलतियों का कारण है गफलत। गफलत गलतियां कराती है।

29.10.70

➢ कम्बाइन्ड अपने को समझो। बापदादा तो सेकेण्ड, सेकेण्ड का साथी है। जब से जन्म लिया है तब से लेकर साथ है। यहाँ जन्म भी इस समय होता है, साथी भी इस समय मिलता है। लौकिक में जन्म पहले होता है और साथी बाद में। यहाँ अभी-अभी जन्म, अभी-अभी साथी।

21.1.71

➢ एक तो साथी को सदैव साथ रखो। दूसरा-साक्षी बनकर हर कर्म करो। तो साथी और साक्षी-ये दो शब्द प्रैक्टिस में लाओ तो यह बन्धनमुक्त की अवस्था बहुत जल्दी बन सकती है।

13.3.71

➢ एक का संग है तो अनेक संगदोष से छूट जायेंगे। संगदोष कई प्रकार के दोष पैदा कर देते हैं। इसलिए इसका बहुत ध्यान रखना। एक बाप दूसरे हम, तीसरा न कोई। जब ऐसी स्थिति होगी तो फिर सदैव आप लोगों के मस्तक से तीसरे नेत्र का साक्षात्कार होगा।

25.3.71

➢ जितना समय साक्षी अवस्था की स्थिति रहती है उतना ही बाप साथी भी याद रहता है अर्थात् साथ रहता है। तो साथ भी है और साक्षी भी है।

68 5

एक साक्षीपन की शक्ति, दूसरा बाप के साथी बनने की खुशी की खुराक।

3.6.71

➢ सर्व शक्तियों को विल किया तो बाप सर्व शक्तियाँ विल कर देते हैं। सर्वशक्तिवान साथी बन गये और सर्व शक्तियाँ साथी बन गयीं, तो फिर विजय ही विजय है।

➢ भक्ति-मार्ग में भी कोई कार्य करते हैं तो समझते हैं नामालूम पूरा हो या न हो। इसलिए भगवान के ऊपर छोड़ देते हैं कि - हे भगवान्! आप का कार्य आप ही जानो। तो यह जो भक्ति-मार्ग में संस्कार भरे वह अब प्रेक्टिकल किया है। भक्तिमार्ग में कहने मात्र था। यहाँ ज्ञान मार्ग में किया है। ज्ञान-मार्ग में करने की शक्ति, भक्ति -मार्ग में कहने की शक्ति। रात दिन का फर्क है।

8.6.71

➢ कोई भी कार्य करो तो सदैव बापदादा को अपना साथी समझकर डबल फोर्स से कार्य करो तो बताओ क्या स्टेज रहेगी? एक तो स्मृति बहुत सहज रहेगी। जैसे अभी सम्मुख समझने से सहज याद है ना। इस रीति अगर सदैव हर कर्म में बाप को अपना साथी समझकर चलो तो यह सहज याद नहीं है? जो कोई सदैव ही साथ रहता है उस साथ के कारण याद स्वत: ही रहती है ना। तो ऐसे साथी रहने से वा बुद्धि को निरन्तर सत का संग बनाने से निरन्तर सतसंग होना चाहिए।

तो कुछ - न -कुछ सेक लगेगा, कुछ-न - कुछ प्रभाव होगा। साथ में कम्बाइन्ड होंगे, एक सेकण्ड भी अकेले नहीं होंगे तो सेफ रहेंगे।

➢ बाप को क्यों नहीं साथी बनाते! दो भुजा वालों को साथी बना देते, हजार भुजा वाले को क्यों नहीं साथी बनाते। कौन ज्यादा सहयोग देगा? हजार भुजा वाला या दो भुजा वाला?

➢ संगमयुग पर ब्रह्माकुमार वा ब्रह्माकुमारी अकेले नहीं हो सकते। सिर्फ जब सेवा में, कर्मयोग में बहुत बिजी हो जाते हो ना तो साथ भी भूल जाते हो और फिर थक जाते हो। फिर कहते हो थक गये, अभी क्या करें! थको नहीं, जब बापदादा आपको सदा साथ देने के लिए आये हैं, परमधाम छोड़कर क्यों आये हैं? सोते, जागते, कर्म करते, सेवा करते, साथ देने के लिए ही तो आये हैं। ब्रह्मा बाप भी आप सबको सहयोग देने के लिए अव्यक्त बनें।

1-3-99

➢ अभी अपने जीवन की डिक्शनरी से मूंझना शब्द निकाल दो। एकदम मिटा दो। परमात्मा के बच्चे और मौज में नहीं रहे तो और कौन रहेगा और कोई है क्या? तो सदा मौज ही मौज है।

1-3-99

➢ बापदादा आपका साथी है, जहाँ भी मुश्किल आवे ना बस दिल से कहना, बाबा, मेरा बाबा, मेरा साथी आ जाओ, मदद करो। तो बाबा भी बंधा हुआ है। सिर्फ दिल से कहना।

एक साक्षीपन की शक्ति, दूसरा बाप के साथी बनने की खुशी की खुराक।

3.6.71

➢ सर्व शक्तियों को विल किया तो बाप सर्व शक्तियाँ विल कर देते हैं। सर्वशक्तिवान साथी बन गये और सर्व शक्तियाँ साथी बन गयीं, तो फिर विजय ही विजय है।

➢ भक्ति-मार्ग में भी कोई कार्य करते हैं तो समझते हैं नामालूम पूरा हो या न हो। इसलिए भगवान के ऊपर छोड़ देते हैं कि - हे भगवान्! आप का कार्य आप ही जानो। तो यह जो भक्ति-मार्ग में संस्कार भरे वह अब प्रेक्टिकल किया है। भक्तिमार्ग में कहने मात्र था। यहाँ ज्ञान मार्ग में किया है। ज्ञान-मार्ग में करने की शक्ति, भक्ति -मार्ग में कहने की शक्ति। रात दिन का फर्क है।

8.6.71

➢ कोई भी कार्य करो तो सदैव बापदादा को अपना साथी समझकर डबल फोर्स से कार्य करो तो बताओ क्या स्टेज रहेगी? एक तो स्मृति बहुत सहज रहेगी। जैसे अभी सम्मुख समझने से सहज याद है ना। इस रीति अगर सदैव हर कर्म में बाप को अपना साथी समझकर चलो तो यह सहज याद नहीं है? जो कोई सदैव ही साथ रहता है उस साथ के कारण याद स्वत: ही रहती है ना। तो ऐसे साथी रहने से वा बुद्धि को निरन्तर सत का संग बनाने से निरन्तर सतसंग होना चाहिए।

6

तो कुछ - न -कुछ सेक लगेगा, कुछ-न - कुछ प्रभाव होगा। साथ में कम्बाइन्ड होंगे, एक सेकण्ड भी अकेले नहीं होंगे तो सेफ रहेंगे।

➢ बाप को क्यों नहीं साथी बनाते! दो भुजा वालों को साथी बना देते, हजार भुजा वाले को क्यों नहीं साथी बनाते। कौन ज्यादा सहयोग देगा? हजार भुजा वाला या दो भुजा वाला?

➢ संगमयुग पर ब्रह्माकुमार वा ब्रह्माकुमारी अकेले नहीं हो सकते। सिर्फ जब सेवा में, कर्मयोग में बहुत बिजी हो जाते हो ना तो साथ भी भूल जाते हो और फिर थक जाते हो। फिर कहते हो थक गये, अभी क्या करें! थको नहीं, जब बापदादा आपको सदा साथ देने के लिए आये हैं, परमधाम छोड़कर क्यों आये हैं? सोते, जागते, कर्म करते, सेवा करते, साथ देने के लिए ही तो आये हैं। ब्रह्मा बाप भी आप सबको सहयोग देने के लिए अव्यक्त बनें।

1-3-99

➢ अभी अपने जीवन की डिक्शनरी से मूंझना शब्द निकाल दो। एकदम मिटा दो। परमात्मा के बच्चे और मौज में नहीं रहे तो और कौन रहेगा और कोई है क्या? तो सदा मौज ही मौज है।

1-3-99

➢ बापदादा आपका साथी है, जहाँ भी मुश्किल आवे ना बस दिल से कहना, बाबा, मेरा बाबा, मेरा साथी आ जाओ, मदद करो। तो बाबा भी बंधा हुआ है। सिर्फ दिल से कहना।

6

67

18-1-98

➢ बाप तो कहते हैं मेरे साथ खाओ। आप बच्चों का भी वायदा है - साथ रहेंगे, साथ खायेंगे, साथ पियेंगे, साथ सोयेंगे और साथ चलेंगे..... सोना भी अकेले नहीं है। अकेले सोते हैं तो बुरे स्वप्न वा बुरे ख्यालात स्वप्न में भी आते हैं।

➢ कभी उदास हो जाते हो तो बाप फ्रेन्ड बनकर बहलाते हैं। फ्रेन्ड भी बन जाता है। कभी प्रेम में रोते हो, आंसू आते हैं तो बाप पोछने के लिए भी आते हैं और आपके आंसू दिल के डिब्बी में मोती समान समा देते हैं।

➢ अगर कभी-कभी नटखट होके रूठ भी जाते हो, रूसते भी हो बहुत मीठा-मीठा। लेकिन बाप रूठे हुए को भी मनाने आते हैं। बच्चे कोई बात नहीं, आगे बढ़ो। जो कुछ हुआ बीत गया, भूल जाओ, बीती सो बीती करो, ऐसे मनाते भी हैं। तो हर दिनचर्या किसके साथ है? बापदादा के साथ।

31-1-98

➢ पूछते क्यों हो कि बाबा विनाश कब होगा? सोचते हो ना - पता नहीं विनाश कब होगा? क्या होगा? हम कहाँ होंगे? बापदादा कहते हैं जहाँ भी होंगे - याद में होंगे, बाप के साथ होंगे। साकार में या आकार में साथ होंगे तो कुछ नहीं होगा। साकार में कहानी सुनाई है ना। बिल्ली के पूंगरे भट्ठी में होते हुए भी सेफ रहे ना! या जल गये? सब सेफ रहे। तो आप परमात्म बच्चे जो साथ होंगे वह सेफ रहेंगे। अगर और कहाँ बुद्धि होगी

➢ अपना रिश्ता पक्का है तो फरिश्ता बन ही जायेंगे। अभी सिर्फ यह अपने रिश्ते को ठीक करो। अगर एक के साथ सर्व रिश्ते हैं तो सहज और सदा फरिश्ते हैं। और है भी क्या जहां बुद्धि जाये। अभी कुछ रहा है क्या? सर्व संबंध वा सर्व रिश्ते, सर्व रास्ते ब्लाक हैं? रास्ता खुला हुआ होगा तो बुद्धि भागेगी।

➢ अब तो बीती सो बीती कर सदैव ऐसे समझो कि मैं बच्चा हूँ, बाप के साथ हूँ। यह समझने से वह बचपन की जीवन स्मृति में रहेगी। जितना यह स्मृति में रहेगा तो उससे मदद मिलेगी। फिर मुश्किल कार्य सहज हो जायेगा। अभी से ही अपने को एक सेकेण्ड भी बाप से अलग न समझो। सदैव समझो-बाप का साथ भी है और बाप के हाथ में मेरा हाथ भी है।

➢ अगर कोई बड़े के हाथ में हाथ होता है तो छोटे की स्थिति बेफिक्र होती, निश्चिंत रहती है। तो समझना चाहिए-हर कर्म में बापदादा मेरे साथ भी है और हमारे इस अलौकिक जीवन का हाथ उनके हाथ में है अर्थात् जीवन उनके हवाले है।जिम्मेवारी उनकी हो जाती है।

➢ बाप का हाथ और साथ। यह तो सहज है ना। फिर चाहे बाप स्मृति में आये, चाहे दादा स्मृति में आये। बाप की स्मृति आयेगी तो साथ में दादा की भी रहेगी ही। दादा की स्मृति से बाप की स्मृति भी रहेगी। अलग नहीं हो सकते।

4.7.71

18-1-98

➢ बाप तो कहते हैं मेरे साथ खाओ। आप बच्चों का भी वायदा है - साथ रहेंगे, साथ खायेंगे, साथ पियेंगे, साथ सोयेंगे और साथ चलेंगे..... सोना भी अकेले नहीं है। अकेले सोते हैं तो बुरे स्वप्न वा बुरे ख्यालात स्वप्न में भी आते हैं।

➢ कभी उदास हो जाते हो तो बाप फ्रेन्ड बनकर बहलाते हैं। फ्रेन्ड भी बन जाता है। कभी प्रेम में रोते हो, आंसू आते हैं तो बाप पोछने के लिए भी आते हैं और आपके आंसू दिल के डिब्बी में मोती समान समा देते हैं।

➢ अगर कभी-कभी नटखट होके रूठ भी जाते हो, रूसते भी हो बहुत मीठा-मीठा। लेकिन बाप रूठे हुए को भी मनाने आते हैं। बच्चे कोई बात नहीं, आगे बढ़ो। जो कुछ हुआ बीत गया, भूल जाओ, बीती सो बीती करो, ऐसे मनाते भी हैं। तो हर दिनचर्या किसके साथ है? बापदादा के साथ।

31-1-98

➢ पूछते क्यों हो कि बाबा विनाश कब होगा? सोचते हो ना - पता नहीं विनाश कब होगा? क्या होगा? हम कहाँ होंगे? बापदादा कहते हैं जहाँ भी होंगे - याद में होंगे, बाप के साथ होंगे। साकार में या आकार में साथ होंगे तो कुछ नहीं होगा। साकार में कहानी सुनाई है ना। बिल्ली के पूंगरे भट्ठी में होते हुए भी सेफ रहे ना! या जल गये? सब सेफ रहे। तो आप परमात्म बच्चे जो साथ होंगे वह सेफ रहेंगे। अगर और कहाँ बुद्धि होगी

66

➢ अपना रिश्ता पक्का है तो फरिश्ता बन ही जायेंगे। अभी सिर्फ यह अपने रिश्ते को ठीक करो। अगर एक के साथ सर्व रिश्ते हैं तो सहज और सदा फरिश्ते हैं। और है भी क्या जहां बुद्धि जाये। अभी कुछ रहा है क्या? सर्व संबंध वा सर्व रिश्ते, सर्व रास्ते ब्लाक हैं? रास्ता खुला हुआ होगा तो बुद्धि भागेगी।

➢ अब तो बीती सो बीती कर सदैव ऐसे समझो कि मैं बच्चा हूँ, बाप के साथ हूँ। यह समझने से वह बचपन की जीवन स्मृति में रहेगी। जितना यह स्मृति में रहेगा तो उससे मदद मिलेगी। फिर मुश्किल कार्य सहज हो जायेगा। अभी से ही अपने को एक सेकेण्ड भी बाप से अलग न समझो। सदैव समझो-बाप का साथ भी है और बाप के हाथ में मेरा हाथ भी है।

➢ अगर कोई बड़े के हाथ में हाथ होता है तो छोटे की स्थिति बेफिक्र होती, निश्चिंत रहती है। तो समझना चाहिए-हर कर्म में बापदादा मेरे साथ भी है और हमारे इस अलौकिक जीवन का हाथ उनके हाथ में है अर्थात् जीवन उनके हवाले है।जिम्मेवारी उनकी हो जाती है।

➢ बाप का हाथ और साथ। यह तो सहज है ना। फिर चाहे बाप स्मृति में आये, चाहे दादा स्मृति में आये। बाप की स्मृति आयेगी तो साथ में दादा की भी रहेगी ही। दादा की स्मृति से बाप की स्मृति भी रहेगी। अलग नहीं हो सकते।

4.7.71

7

➢ वर्तमान समय कम्पलेन क्या करते हो? बाप की याद भूल जाती है। बहुत जन्मों से साथ रही हुई वस्तु देह वा देह के सम्बन्धी नहीं भूलते तो जिससे सर्व खज़ानों की प्राप्ति होती है और सदा पास है वह क्यों भूलना चाहिए? चढ़ाने वाला याद आना चाहिए वा गिराने वाला? अगर ठोकर लगाने वाला भूल से भी याद आयेगा तो उनको हटा देंगे ना। तो चढ़ाने वाला क्यों भूलता है?

24.10.71

➢ संकल्प को श्रेष्ठ बनाओ और सदैव सर्वशक्तिवान बाप के साथ बुद्धि का संग हो।

➢ माया भी चतुर है। पहले सर्वशक्तिवान बाप से बुद्धि को दूर करती है, फिर जब कमजोर बन जाते हैं तब वार करती है। कोई भी साथ नहीं रहता है। क्या भी हो जाये-अपनी बुद्धि को कभी बाप के साथ से दूर न करना। अपने को अधिकारी समझ सर्वशक्तियों को काम में लाओ। फिर कब भी माया आपकी बुद्धि की लगन को दूर नहीं कर सकेगी। न दूर होंगे, न कमजोर होंगे, न हार खायेंगे। फिर सदा विजयी होंगे। तो यह स्लोगन याद रखना कि हम अनेक बार के विजयी हैं, अब भी विजयी बनकर ही दिखायेंगे

➢ जैसे अज्ञानी के लिए विजयी बनना असम्भव है, इस प्रकार ज्ञानी आत्मा को हार खाना असम्भव अनुभव होना चाहिए।

4.3.72

➢ ब्रह्मा बाप से दिल का प्यार है, ब्रह्मा बाप का भी बच्चों से अति स्नेह है। सदा एक-एक बच्चे को इमर्ज कर विशेष समान बनने की सकाश देते रहते हैं। जैसे पास्ट जीवन में एक-एक रत्न को देखते, हर एक रत्न के मूल्य को जानते विशेष कार्य में लगाते, ऐसे अभी भी एक-एक रत्न को विशेष रूप से विशेषता को कार्य में लगाने का सदा संकल्प देते रहते। और हर एक के विशेषता की वाह-वाह गाते रहते। वाह मेरा अमूल्य रत्न।

➢ बाप कहते हैं जैसे साकार रूप में सदा बच्चों के साथ रहे, ऐसे वतन में भी रहते हैं। बच्चों के साथ ही रहते हैं, अकेले नहीं रहते हैं। बच्चों के बिना बाप को भी मजा नहीं आता। जैसे बच्चों को बाप के बिना कुछ सूझता नहीं, ऐसे बाप को भी बच्चों के बिना और कुछ नहीं सूझता। अकेले नहीं रहते हैं, साथ में रहते हैं। साकार में तो साथ का अनुभव साकार रूप में थोड़े बच्चे कर सकते थे, अब तो अव्यक्त रूप में, हर बच्चे के साथ जिस समय चाहे, जब चाहे साथ निभाते रहते हैं।

➢ जैसे चित्रों में दिखाते हैं ना - उन्होंने एक-एक गोपी के साथ कृष्ण को दिखा दिया लेकिन यह इस समय का गायन है। अब अव्यक्त रूप में हर बच्चे के साथ जब चाहे, चाहे रात को दो बजे, अढ़ाई बजे हैं, किसी भी टाइम साथ निभाते रहते हैं। साकार में तो सेन्टर्स पर चक्कर लगाना कभी-कभी होता लेकिन अब अव्यक्त रूप में तो पवित्र प्रवृत्ति में भी चक्कर लगाते हैं। बाप को काम ही क्या है, बच्चों को समान बनाके साथ ले जाना, यही तो काम है ना

➢ वर्तमान समय कम्पलेन क्या करते हो? बाप की याद भूल जाती है। बहुत जन्मों से साथ रही हुई वस्तु देह वा देह के सम्बन्धी नहीं भूलते तो जिससे सर्व खज़ानों की प्राप्ति होती है और सदा पास है वह क्यों भूलना चाहिए? चढ़ाने वाला याद आना चाहिए वा गिराने वाला? अगर ठोकर लगाने वाला भूल से भी याद आयेगा तो उनको हटा देंगे ना। तो चढ़ाने वाला क्यों भूलता है?

24.10.71

➢ संकल्प को श्रेष्ठ बनाओ और सदैव सर्वशक्तिवान बाप के साथ बुद्धि का संग हो।

➢ माया भी चतुर है। पहले सर्वशक्तिवान बाप से बुद्धि को दूर करती है, फिर जब कमजोर बन जाते हैं तब वार करती है। कोई भी साथ नहीं रहता है। क्या भी हो जाये-अपनी बुद्धि को कभी बाप के साथ से दूर न करना। अपने को अधिकारी समझ सर्वशक्तियों को काम में लाओ। फिर कब भी माया आपकी बुद्धि की लगन को दूर नहीं कर सकेगी। न दूर होंगे, न कमजोर होंगे, न हार खायेंगे। फिर सदा विजयी होंगे। तो यह स्लोगन याद रखना कि हम अनेक बार के विजयी हैं, अब भी विजयी बनकर ही दिखायेंगे

➢ जैसे अज्ञानी के लिए विजयी बनना असम्भव है, इस प्रकार ज्ञानी आत्मा को हार खाना असम्भव अनुभव होना चाहिए।

4.3.72

8

➢ ब्रह्मा बाप से दिल का प्यार है, ब्रह्मा बाप का भी बच्चों से अति स्नेह है। सदा एक-एक बच्चे को इमर्ज कर विशेष समान बनने की सकाश देते रहते हैं। जैसे पास्ट जीवन में एक-एक रत्न को देखते, हर एक रत्न के मूल्य को जानते विशेष कार्य में लगाते, ऐसे अभी भी एक-एक रत्न को विशेष रूप से विशेषता को कार्य में लगाने का सदा संकल्प देते रहते। और हर एक के विशेषता की वाह-वाह गाते रहते। वाह मेरा अमूल्य रत्न।

➢ बाप कहते हैं जैसे साकार रूप में सदा बच्चों के साथ रहे, ऐसे वतन में भी रहते हैं। बच्चों के साथ ही रहते हैं, अकेले नहीं रहते हैं। बच्चों के बिना बाप को भी मजा नहीं आता। जैसे बच्चों को बाप के बिना कुछ सूझता नहीं, ऐसे बाप को भी बच्चों के बिना और कुछ नहीं सूझता। अकेले नहीं रहते हैं, साथ में रहते हैं। साकार में तो साथ का अनुभव साकार रूप में थोड़े बच्चे कर सकते थे, अब तो अव्यक्त रूप में, हर बच्चे के साथ जिस समय चाहे, जब चाहे साथ निभाते रहते हैं।

➢ जैसे चित्रों में दिखाते हैं ना - उन्होंने एक-एक गोपी के साथ कृष्ण को दिखा दिया लेकिन यह इस समय का गायन है। अब अव्यक्त रूप में हर बच्चे के साथ जब चाहे, चाहे रात को दो बजे, अढ़ाई बजे हैं, किसी भी टाइम साथ निभाते रहते हैं। साकार में तो सेन्टर्स पर चक्कर लगाना कभी-कभी होता लेकिन अब अव्यक्त रूप में तो पवित्र प्रवृत्ति में भी चक्कर लगाते हैं। बाप को काम ही क्या है, बच्चों को समान बनाके साथ ले जाना, यही तो काम है ना

65

सोने के समय आप अलबेलेपन में सोये। कई कहते हैं कि सारे दिन में मेरा कोई संकल्प तो चला ही नहीं, कुछ हुआ ही नहीं फिर भी स्वप्न आ गया। तो चेक करो-सोने समय बापदादा को सारे दिन का पोतामेल देकर, खाली बुद्धि हो करके नींद की? ऐसे नहीं कि थके हुए आये और बिस्तर पर गये और गये -ये अलबेलापन है। चाहे विकर्म नहीं किया और संकल्प भी नहीं किया लेकिन ये अलबेलेपन की सज़ा है। क्योंकि बाप का फरमान है कि सोते समय सदा अपने बुद्धि को क्लीयर करो, चाहे अच्छा, चाहे बुरा, सब बाप के हवाले करो और अपने बुद्धि को खाली करो। दे दिया बाप को और बाप के साथ सो जाओ, अकेले नहीं। अकेले सोते हो ना तभी स्वप्न आते हैं। अगर बाप के साथ सोओ तो कभी ऐसे स्वप्न भी नहीं आ सकते।

16.11.95

➢ बापदादा तो खेल देखते हैं, बाप साथ बैठे हैं और अपनी परिस्थिति में, उसको सामना करने में इतना मस्त हो जाते हैं जो देखते नहीं हैं कि साथ में कौन है। तो बाप भी क्या करते? बाप भी साथी से साक्षी बनकर खेल देखते हैं। ऐसे तो नहीं करो ना। जब साथी कहते हो तो साथ तो निभाओ, किनारा क्यों करते हो? बाप को अच्छा नहीं लगता। बाप यही शुभ आशा रखते हैं और है भी कि एक-एक बच्चा स्वराज्य अधिकारी सो विश्व अधिकारी है।

23-2-97

➢ अभी जो भाग्य बनाया वह सारे कल्प में भोगना पड़ता है- चाहे श्रेष्ठ, चाहे नीच।

➢ संगमयुग ही है जिसमें भाग्य बना सकते हो। जितना चाहो उतना बना सकते हो क्योंकि भाग्य बनाने वाला बाप का साथ है। फिर यह बाप साथ नहीं रहेगा, न यह प्राप्ति रहेगी। प्राप्ति कराने वाला भी अब है और प्राप्ति भी अब होनी है। अब नहीं तो कब नहीं -यह स्लोगन स्मृति में रखो।

15-3-72

➢ सदा सहयोगी वा सदा स्नेही उसको कहते हैं जिसका एक सेकेण्ड भी बाप के साथ स्नेह न टूटे वा एक सेकेण्ड, एक संकल्प भी सिवाए बाप के सहयोगी बनने के न जाये।

9.5.72

➢ कहावत भी है - दो दस के बराबर होते हैं। तो जब शिव और शक्ति दोनों का साथ हो गया तो ऐसी शक्ति के आगे कोई कुछ कर सकता है? इन डबल शक्तियों के आगे और कोई भी शक्ति अपना वार नहीं कर सकती वा हार खिला नहीं सकती।

➢ सदा अपने को शिव-शक्ति वा अष्ट भुजाधारी अथवा अष्ट शक्तिधारी समझने से एक तो सदा साथीपन का अनुभव करेंगे और दूसरा सदा अपनी स्टेज साक्षीपन की अनुभव करेंगे। एक साथी और दूसरा साक्षी, यह दोनों अनुभव होंगे

सोने के समय आप अलबेलेपन में सोये। कई कहते हैं कि सारे दिन में मेरा कोई संकल्प तो चला ही नहीं, कुछ हुआ ही नहीं फिर भी स्वप्न आ गया। तो चेक करो-सोने समय बापदादा को सारे दिन का पोतामेल देकर, खाली बुद्धि हो करके नींद की? ऐसे नहीं कि थके हुए आये और बिस्तर पर गये और गये -ये अलबेलापन है। चाहे विकर्म नहीं किया और संकल्प भी नहीं किया लेकिन ये अलबेलेपन की सज़ा है। क्योंकि बाप का फरमान है कि सोते समय सदा अपने बुद्धि को क्लीयर करो, चाहे अच्छा, चाहे बुरा, सब बाप के हवाले करो और अपने बुद्धि को खाली करो। दे दिया बाप को और बाप के साथ सो जाओ, अकेले नहीं। अकेले सोते हो ना तभी स्वप्न आते हैं। अगर बाप के साथ सोओ तो कभी ऐसे स्वप्न भी नहीं आ सकते।

16.11.95

➢ बापदादा तो खेल देखते हैं, बाप साथ बैठे हैं और अपनी परिस्थिति में, उसको सामना करने में इतना मस्त हो जाते हैं जो देखते नहीं हैं कि साथ में कौन है। तो बाप भी क्या करते? बाप भी साथी से साक्षी बनकर खेल देखते हैं। ऐसे तो नहीं करो ना। जब साथी कहते हो तो साथ तो निभाओ, किनारा क्यों करते हो? बाप को अच्छा नहीं लगता। बाप यही शुभ आशा रखते हैं और है भी कि एक-एक बच्चा स्वराज्य अधिकारी सो विश्व अधिकारी है।

23-2-97

64

➢ अभी जो भाग्य बनाया वह सारे कल्प में भोगना पड़ता है- चाहे श्रेष्ठ, चाहे नीच।

➢ संगमयुग ही है जिसमें भाग्य बना सकते हो। जितना चाहो उतना बना सकते हो क्योंकि भाग्य बनाने वाला बाप का साथ है। फिर यह बाप साथ नहीं रहेगा, न यह प्राप्ति रहेगी। प्राप्ति कराने वाला भी अब है और प्राप्ति भी अब होनी है। अब नहीं तो कब नहीं -यह स्लोगन स्मृति में रखो।

15-3-72

➢ सदा सहयोगी वा सदा स्नेही उसको कहते हैं जिसका एक सेकेण्ड भी बाप के साथ स्नेह न टूटे वा एक सेकेण्ड, एक संकल्प भी सिवाए बाप के सहयोगी बनने के न जाये।

9.5.72

➢ कहावत भी है - दो दस के बराबर होते हैं। तो जब शिव और शक्ति दोनों का साथ हो गया तो ऐसी शक्ति के आगे कोई कुछ कर सकता है? इन डबल शक्तियों के आगे और कोई भी शक्ति अपना वार नहीं कर सकती वा हार खिला नहीं सकती।

➢ सदा अपने को शिव-शक्ति वा अष्ट भुजाधारी अथवा अष्ट शक्तिधारी समझने से एक तो सदा साथीपन का अनुभव करेंगे और दूसरा सदा अपनी स्टेज साक्षीपन की अनुभव करेंगे। एक साथी और दूसरा साक्षी, यह दोनों अनुभव होंगे

9

➢ साक्षी अवस्था अर्थात् बिन्दू रुप की स्टेज कहा जाता है और साथीपन का अनुभव अर्थात् अव्यक्त स्थिति का अनुभव कहा जाता है।

➢ जैसे कोई साकार में साथ होता है तो फिर कब भी अपने में अकेलापन वा कमजोरीपन अनुभव नहीं होती है। इस रीति से जब सर्व शक्तिवान शिव और शक्ति दोनों की स्मृति रहती है तो चलते-फिरते बिल्कुल ऐसे अनुभव करेंगे जैसे साकार में साथ हैं और हाथ में हाथ है। गाया जाता है ना साथ और हाथ। तो साथ है बुद्धि की लगन। और सदा अपने साथ श्रीमत रुपी हाथ अनुभव करेंगे।

➢ शक्तियों का चित्र भी देखेंगे तो वरदान का हाथ भक्तों के ऊपर दिखाते हैं। मस्तक के ऊपर हाथ दिखाते हैं। इसका अर्थ भी यही है कि मस्तक अर्थात् बुद्धि में सदैव श्रीमत रुपी हाथ अगर है तो हाथ और साथ होने कारण सदा विजयी हैं।

➢ कितनी भी कमजोर आत्मा हो लेकिन साथ अगर सर्वशक्तिवान है तो कमजोर आत्मा में भी स्वत: ही बल भर जाता है। कितना भी भयानक स्थान है लेकिन साथी शूरवीर है तो कैसा भी कमजोर शूरवीर हो जायेगी। फिर कब माया से घबरायेंगे नहीं। माया से घबराने वा माया का सामना ना करने का कारण साथ और हाथ का अनुभव नहीं करते हो। बाप साथ दे रहे हैं, लेकिन लेने वाला ना लेवे तो क्या करेंगे? जैसे बाप बच्चे का हाथ पकड़ कर उनको सही रास्ते पर लाना चाहते हैं, लेकिन बच्चा बार-बार हाथ छुड़ा कर अपनी मत पर चले तो क्या होगा? मूँझ जाएगा।

अपने ब्राह्मण जीवन की भिन्न-भिन्न समय की रमणीक अनुभव की कहानियाँ स्मृति में लाओ। अनुभव की कहानियों का किताब सभी के पास है। जब बोर हो जाते हैं तो नॉवेल्स पढ़ते हैं ना। तो आप अपने कहानियों का किताब खोलो और उसे पढ़ने में बिज़ी हो जाओ।

➢ जब भी कोई बात दिमाग में आती है तो वह निकलती भी जल्दी है। लेकिन दिल में समा जाती है तो उसको चाहे सारी दुनिया भी दिल से निकालना चाहे, तो भी नहीं निकाल सकती। तो सर्व सम्बन्धों को समय प्रमाण, जिस समय जिस सम्बन्ध की आवश्यकता है, आवश्यकता है फैन्ड की और याद करो बाप को तो मज़ा नहीं आयेगा। इसलिये जिस समय, जिस सम्बन्ध की अनुभूति चाहिये, उस सम्बन्ध को स्नेह से, दिल से अनुभव करो। फिर मेहनत भी नहीं लगेगी और बोर भी नहीं होंगे, सदा मनोरंजन।

18-2-94

➢ जब सर्वशक्तिमान् साथ है तो माया तो उसके आगे पेपर टाइगर है। इसलिये घबराना नहीं। पता नहीं का संकल्प कभी नहीं करना। मास्टर नॉलेजफुल बन हर कर्म करते चलो। साथ का अनुभव सदा ही सहज और सेफ रखता है। साथ भूल जाते हैं तो मुश्किल हो जाता है।

17.11.94

➢ कई कहते हैं कि हम कर्म में नहीं आते लेकिन स्वप्न आते हैं। लेकिन अगर कोई व्यर्थ वा विकारी स्वप्न, लगाव का स्वप्न आता है तो अवश्य

➢ साक्षी अवस्था अर्थात् बिन्दू रुप की स्टेज कहा जाता है और साथीपन का अनुभव अर्थात् अव्यक्त स्थिति का अनुभव कहा जाता है।

➢ जैसे कोई साकार में साथ होता है तो फिर कब भी अपने में अकेलापन वा कमजोरीपन अनुभव नहीं होती है। इस रीति से जब सर्व शक्तिवान शिव और शक्ति दोनों की स्मृति रहती है तो चलते-फिरते बिल्कुल ऐसे अनुभव करेंगे जैसे साकार में साथ हैं और हाथ में हाथ है। गाया जाता है ना साथ और हाथ। तो साथ है बुद्धि की लगन। और सदा अपने साथ श्रीमत रुपी हाथ अनुभव करेंगे।

➢ शक्तियों का चित्र भी देखेंगे तो वरदान का हाथ भक्तों के ऊपर दिखाते हैं। मस्तक के ऊपर हाथ दिखाते हैं। इसका अर्थ भी यही है कि मस्तक अर्थात् बुद्धि में सदैव श्रीमत रुपी हाथ अगर है तो हाथ और साथ होने कारण सदा विजयी हैं।

➢ कितनी भी कमजोर आत्मा हो लेकिन साथ अगर सर्वशक्तिवान है तो कमजोर आत्मा में भी स्वत: ही बल भर जाता है। कितना भी भयानक स्थान है लेकिन साथी शूरवीर है तो कैसा भी कमजोर शूरवीर हो जायेगी। फिर कब माया से घबरायेंगे नहीं। माया से घबराने वा माया का सामना ना करने का कारण साथ और हाथ का अनुभव नहीं करते हो। बाप साथ दे रहे हैं, लेकिन लेने वाला ना लेवे तो क्या करेंगे? जैसे बाप बच्चे का हाथ पकड़ कर उनको सही रास्ते पर लाना चाहते हैं, लेकिन बच्चा बार-बार हाथ छुड़ा कर अपनी मत पर चले तो क्या होगा? मूँझ जाएगा।

अपने ब्राह्मण जीवन की भिन्न-भिन्न समय की रमणीक अनुभव की कहानियाँ स्मृति में लाओ। अनुभव की कहानियों का किताब सभी के पास है। जब बोर हो जाते हैं तो नॉवेल्स पढ़ते हैं ना। तो आप अपने कहानियों का किताब खोलो और उसे पढ़ने में बिज़ी हो जाओ।

➢ जब भी कोई बात दिमाग में आती है तो वह निकलती भी जल्दी है। लेकिन दिल में समा जाती है तो उसको चाहे सारी दुनिया भी दिल से निकालना चाहे, तो भी नहीं निकाल सकती। तो सर्व सम्बन्धों को समय प्रमाण, जिस समय जिस सम्बन्ध की आवश्यकता है, आवश्यकता है फैन्ड की और याद करो बाप को तो मज़ा नहीं आयेगा। इसलिये जिस समय, जिस सम्बन्ध की अनुभूति चाहिये, उस सम्बन्ध को स्नेह से, दिल से अनुभव करो। फिर मेहनत भी नहीं लगेगी और बोर भी नहीं होंगे, सदा मनोरंजन।

18-2-94

➢ जब सर्वशक्तिमान् साथ है तो माया तो उसके आगे पेपर टाइगर है। इसलिये घबराना नहीं। पता नहीं का संकल्प कभी नहीं करना। मास्टर नॉलेजफुल बन हर कर्म करते चलो। साथ का अनुभव सदा ही सहज और सेफ रखता है। साथ भूल जाते हैं तो मुश्किल हो जाता है।

17.11.94

➢ कई कहते हैं कि हम कर्म में नहीं आते लेकिन स्वप्न आते हैं। लेकिन अगर कोई व्यर्थ वा विकारी स्वप्न, लगाव का स्वप्न आता है तो अवश्य

साथी है। तो स्थिति में साथ है और सेवा में साथी है। जहाँ सदा साथ भी है और साथी भी है तो वहाँ क्या मुश्किल है!

➢ सर्व सम्बन्धों की सर्व समय प्रमाण बाप स्वयं हर बच्चे को ऑफर करते हैं। जैसा समय वैसे सम्बन्ध से साथ रहो वा साथी बनाओ। कोई समय तो सम्बन्ध से साथी बनाते हो और कोई समय साथी को किनारे कर देते हो। फिर कहते हैं कि अकेलापन फ़ील होता है। चलते-चलते अकेलापन लगता है। और अकेलापन होने से क्या होता है? अपना श्रेष्ठ जीवन साधारण जीवन अनुभव होती है। फिर कहते हैं बोरिंग लाइफ हो गई है, कुछ चेंज चाहिये।

➢ वैसे भी देखो दुनिया में अगर चेंज चाहते हैं तो कोई सागर के किनारे पर जाकर सो जाते हैं, कोई मनोरंजन में चले जाते हैं, डांस करते हैं, कोई गीतों के मौज़ में मौज़ मनाते हैं, कोई कम्पनी या कम्पैनियन का साथ लेते है। यही करते हो ना! खेल करते हो? खेलों की दुनिया में बगीचे में चले जाते हो! यहाँ ज्ञान सागर का किनारा है यह भूल जाते हो। अगर सागर पसन्द है तो सागर के किनारे बैठ जाओ। बाप ज्ञान सागर है ना। बाप कम्पैनियन नहीं है क्या? उससे मज़ा नहीं आता है?

➢ समझते हो बिन्दी से क्या मज़ा आयेगा! आप सभी को सदा बहलाने के लिये तो ब्रह्मा बाप भी अव्यक्त हुए। लेकिन यहाँ तो सदा का साथी चाहिये ना। जब भी अपने को अकेलापन अनुभव करो तो उस समय बिन्दु रूप नहीं याद करो। वह मुश्किल होगा, उससे बोर हो जायेंगे। लेकिन

➢ माया भी पहले साथ और हाथ छुड़ा कर फिर वार करेगी। अगर साथ और हाथ छोड़ो ही नहीं तो फिर सर्वशक्तिवान साथ होते माया क्या कर सकती है? मायाजीत हो जायेंगे।

➢ आज की पुरानी दुनिया में अगर कोई छोटे-मोटे मर्तबे वाले का भी कोई साथी अच्छा होता है तो भी अपनी खुमारी में और खुशी में रहते हैं। समझते हैं हमारा बैकबोन पावरफुल है। इसलिए खुमारी और खुशी में रहते हैं। आप लोगों का बैकबोन कौन है! जिनका सर्वशक्तिवान् बैकबोन है तो कितनी खुमारी और खुशी होनी चाहिए! कब खुशी की लहर खत्म हो सकती है?

➢ पाप कर्म अकेलेपन में होता है। कोई चोरी करता है, झूठ बोलता है वा कोई भी विकार वश होता है जिसको अपवित्रता के संकल्प वा कर्म कहा जाता है, वह अकेलेपन में ही होता है। अगर सदा अपने को बाप के साथ-साथ अनुभव करो तो फिर यह कर्म होंगे ही नहीं। कोई देख रहा हो तो फिर चोरी करेंगे? कोई सामने-सामने सुन रहा हो तो फिर झूठ बोलेंगे? कोई भी विकर्म वा व्यर्थ कर्म बार-बार हो जाते है तो इसका कारण यह है कि सदा साथी को साथ में नहीं रखते हो अथवा साथ का अनुभव नहीं करते हो। कभी-कभी चलते-चलते उदास भी क्यों होते हो? उदास तब होते हैं जब अकेलेपन होता है।

साथी है। तो स्थिति में साथ है और सेवा में साथी है। जहाँ सदा साथ भी है और साथी भी है तो वहाँ क्या मुश्किल है!

➢ सर्व सम्बन्धों की सर्व समय प्रमाण बाप स्वयं हर बच्चे को ऑफर करते हैं। जैसा समय वैसे सम्बन्ध से साथ रहो वा साथी बनाओ। कोई समय तो सम्बन्ध से साथी बनाते हो और कोई समय साथी को किनारे कर देते हो। फिर कहते हैं कि अकेलापन फ़ील होता है। चलते-चलते अकेलापन लगता है। और अकेलापन होने से क्या होता है? अपना श्रेष्ठ जीवन साधारण जीवन अनुभव होती है। फिर कहते हैं बोरिंग लाइफ हो गई है, कुछ चेंज चाहिये।

➢ वैसे भी देखो दुनिया में अगर चेंज चाहते हैं तो कोई सागर के किनारे पर जाकर सो जाते हैं, कोई मनोरंजन में चले जाते हैं, डांस करते हैं, कोई गीतों के मौज़ में मौज़ मनाते हैं, कोई कम्पनी या कम्पैनियन का साथ लेते है। यही करते हो ना! खेल करते हो? खेलों की दुनिया में बगीचे में चले जाते हो! यहाँ ज्ञान सागर का किनारा है यह भूल जाते हो। अगर सागर पसन्द है तो सागर के किनारे बैठ जाओ। बाप ज्ञान सागर है ना। बाप कम्पैनियन नहीं है क्या? उससे मज़ा नहीं आता है?

➢ समझते हो बिन्दी से क्या मज़ा आयेगा! आप सभी को सदा बहलाने के लिये तो ब्रह्मा बाप भी अव्यक्त हुए। लेकिन यहाँ तो सदा का साथी चाहिये ना। जब भी अपने को अकेलापन अनुभव करो तो उस समय बिन्दु रूप नहीं याद करो। वह मुश्किल होगा, उससे बोर हो जायेंगे। लेकिन

62

➢ माया भी पहले साथ और हाथ छुड़ा कर फिर वार करेगी। अगर साथ और हाथ छोड़ो ही नहीं तो फिर सर्वशक्तिवान साथ होते माया क्या कर सकती है? मायाजीत हो जायेंगे।

➢ आज की पुरानी दुनिया में अगर कोई छोटे-मोटे मर्तबे वाले का भी कोई साथी अच्छा होता है तो भी अपनी खुमारी में और खुशी में रहते हैं। समझते हैं हमारा बैकबोन पावरफुल है। इसलिए खुमारी और खुशी में रहते हैं। आप लोगों का बैकबोन कौन है! जिनका सर्वशक्तिवान् बैकबोन है तो कितनी खुमारी और खुशी होनी चाहिए! कब खुशी की लहर खत्म हो सकती है?

➢ पाप कर्म अकेलेपन में होता है। कोई चोरी करता है, झूठ बोलता है वा कोई भी विकार वश होता है जिसको अपवित्रता के संकल्प वा कर्म कहा जाता है, वह अकेलेपन में ही होता है। अगर सदा अपने को बाप के साथ-साथ अनुभव करो तो फिर यह कर्म होंगे ही नहीं। कोई देख रहा हो तो फिर चोरी करेंगे? कोई सामने-सामने सुन रहा हो तो फिर झूठ बोलेंगे? कोई भी विकर्म वा व्यर्थ कर्म बार-बार हो जाते है तो इसका कारण यह है कि सदा साथी को साथ में नहीं रखते हो अथवा साथ का अनुभव नहीं करते हो। कभी-कभी चलते-चलते उदास भी क्यों होते हो? उदास तब होते हैं जब अकेलेपन होता है।

11

➢ कहते भी हो कि सारे कल्प में एक ही बार ऐसा साथ मिलता है; फिर भी छोड़ देते हो। कोई किसको हाथ देकर किनारा करना चाहे और वह फिर भी डूबने का प्रयत्न करे तो क्या कहा जायेगा?

31-5-72

➢ निराकार आत्मा और साकार शरीर दोनों के सम्बन्ध से हर कार्य कर सकते हो। अगर दोनों का सम्बन्ध ना हो तो कोई भी कार्य नहीं कर सकते। ऐसे ही निराकार और साकार बाप दोनों का साथ वा सामने रखते हुए हर कर्म वा हर संकल्प करों तो यह चारों बातें आटोमेटिकली आ जाएंगी।

➢ बापदादा सदा साथ है यह अनुभव करो तो हैल्दी, वैल्दी नहीं रहेंगे? बापदादा निराकार और साकार दोनों के साथ होने से हैल्थ और वैल्थ दोनो आ जाती हैं और हैपी तो आटोमेटिकली होंगे। 14.6.72

➢ जैसे संगम युग का हर सेकेण्ड का मेला है, वैसे हर समय अपने आप को बाप के साथ मिलन मनाने का अनुभव करते हो? वा इस महान श्रेष्ठ मेले में चलते-चलते कब - कब बाप दादा का हाथ छोड़ मेले वा मिलन मनाने से वंचित हो जाते हो? जैसे कब-कब मेले में कई बच्चे खो जाते हैं ना। माँ-बाप का हाथ छोड़ देते। मेला होता है खुशी मनाने के लिये। अगर मेले में कोई बच्चा माँ-बाप से बिछूड़ जाये वा हाथ-साथ छोड़ दें तो उसको क्या प्राप्ति होंगी। खुशी के बजाये और ही अशान्त हो जावेंगे। तो ऐसे अपने आप को देखो कि मेले में सदा खुशी की प्राप्ति कर

➢ देखो गाया हुआ भी है कि जहाँ बाप है वहाँ विजय है ही। बाप सदा साथ है तो विजय है ही। थोड़ा भी किनारा किया तो युद्ध करनी पड़ेगी। तो युद्ध करने वाले नहीं, विजयी रत्न हो

18-11-93

➢ बाबा कहा दिल से और दिलाराम हाज़िर। इसीलिये ही कहते हैं हज़ूर हाज़िर है, हाज़िरा हज़ूर है। जहाँ भी हैं, जो भी हैं लेकिन हर स्थान पर हर के पास हाज़िर हो जाते हैं इसीलिये हाज़िरा हज़ूर हो गया। इस स्नेह की विधि को लोग नहीं जान सकते। यह ब्राह्मण आत्मायें ही जानती हैं।

➢ लोग कहते हैं जिधर देखते हैं उधर तू ही तू है और आप कहते हो जो करते हैं, जहाँ जाते हैं बाप साथ ही है अर्थात् तू ही तू है। जैसे कर्तव्य साथ है तो हर कर्तव्य कराने वाला भी सदा साथ है। इसलिये गाया हुआ है करनकरावनहार। तो कम्बाइन्ड हो गया ना-करनहार और करावनहार।

2-12-93

➢ जो लीन होता है उसको और कुछ दिखाई नहीं देता, आकर्षित नहीं करता। तो लॅव में रहते हो। ऐसा कोई होगा जो कहे-मुझे बाप से प्यार नहीं है, लॅव नहीं है! सभी का लॅव है ना! लेकिन कभी लॅव में रहते हो, कभी लॅव में लीन रहते हो। नहीं तो देखो मन-बुद्धि द्वारा स्थिति में बाप का सर्व सम्बन्धों से साथ है। साथ भी है और सेवा में बाप हर समय

➢ कहते भी हो कि सारे कल्प में एक ही बार ऐसा साथ मिलता है; फिर भी छोड़ देते हो। कोई किसको हाथ देकर किनारा करना चाहे और वह फिर भी डूबने का प्रयत्न करे तो क्या कहा जायेगा?

31-5-72

➢ निराकार आत्मा और साकार शरीर दोनों के सम्बन्ध से हर कार्य कर सकते हो। अगर दोनों का सम्बन्ध ना हो तो कोई भी कार्य नहीं कर सकते। ऐसे ही निराकार और साकार बाप दोनों का साथ वा सामने रखते हुए हर कर्म वा हर संकल्प करों तो यह चारों बातें आटोमेटिकली आ जाएंगी।

➢ बापदादा सदा साथ है यह अनुभव करो तो हैल्दी, वैल्दी नहीं रहेंगे? बापदादा निराकार और साकार दोनों के साथ होने से हैल्थ और वैल्थ दोनो आ जाती हैं और हैपी तो आटोमेटिकली होंगे। 14.6.72

➢ जैसे संगम युग का हर सेकेण्ड का मेला है, वैसे हर समय अपने आप को बाप के साथ मिलन मनाने का अनुभव करते हो? वा इस महान श्रेष्ठ मेले में चलते-चलते कब - कब बाप दादा का हाथ छोड़ मेले वा मिलन मनाने से वंचित हो जाते हो? जैसे कब-कब मेले में कई बच्चे खो जाते हैं ना। माँ-बाप का हाथ छोड़ देते। मेला होता है खुशी मनाने के लिये। अगर मेले में कोई बच्चा माँ-बाप से बिछूड़ जाये वा हाथ-साथ छोड़ दें तो उसको क्या प्राप्ति होंगी। खुशी के बजाये और ही अशान्त हो जावेंगे। तो ऐसे अपने आप को देखो कि मेले में सदा खुशी की प्राप्ति कर

12

➢ देखो गाया हुआ भी है कि जहाँ बाप है वहाँ विजय है ही। बाप सदा साथ है तो विजय है ही। थोड़ा भी किनारा किया तो युद्ध करनी पड़ेगी। तो युद्ध करने वाले नहीं, विजयी रत्न हो

18-11-93

➢ बाबा कहा दिल से और दिलाराम हाज़िर। इसीलिये ही कहते हैं हज़ूर हाज़िर है, हाज़िरा हज़ूर है। जहाँ भी हैं, जो भी हैं लेकिन हर स्थान पर हर के पास हाज़िर हो जाते हैं इसीलिये हाज़िरा हज़ूर हो गया। इस स्नेह की विधि को लोग नहीं जान सकते। यह ब्राह्मण आत्मायें ही जानती हैं।

➢ लोग कहते हैं जिधर देखते हैं उधर तू ही तू है और आप कहते हो जो करते हैं, जहाँ जाते हैं बाप साथ ही है अर्थात् तू ही तू है। जैसे कर्तव्य साथ है तो हर कर्तव्य कराने वाला भी सदा साथ है। इसलिये गाया हुआ है करनकरावनहार। तो कम्बाइन्ड हो गया ना-करनहार और करावनहार।

2-12-93

➢ जो लीन होता है उसको और कुछ दिखाई नहीं देता, आकर्षित नहीं करता। तो लॅव में रहते हो। ऐसा कोई होगा जो कहे-मुझे बाप से प्यार नहीं है, लॅव नहीं है! सभी का लॅव है ना! लेकिन कभी लॅव में रहते हो, कभी लॅव में लीन रहते हो। नहीं तो देखो मन-बुद्धि द्वारा स्थिति में बाप का सर्व सम्बन्धों से साथ है। साथ भी है और सेवा में बाप हर समय

12

61

➢ जब बाप ने आपकी जिम्मेवारी ले ली, तो जिम्मेवारी का फिक्र क्यों? अभी सिर्फ रेस्पान्सिबिल्टी है बाप के साथ-साथ चलते रहने की। वह भी बाप के साथ-साथ है, अकेले नहीं। तो क्या फिक्र है? कल क्या होगा-ये फिक्र है? जॉब का फिक्र है? दुनिया में क्या होगा- ये फिक्र है? क्योंकि जानते हो कि-हमारे लिए जो भी होगा अच्छा होगा। निश्चय है ना। पक्का निश्चय है या हिलता है कभी ? जहाँ निश्चय पक्का है, वहाँ निश्चय के साथ विजय भी निश्चित है। ये भी निश्चय है ना कि विजय हुई पड़ी है।

➢ सदैव स्मृति रखो कि- कम्बाइण्ड थे, कम्बाइण्ड हैं और कम्बाइण्ड रहेंगे। कोई की ताकत नहीं जो अनेक बार के कम्बाइण्ड स्वरूप को अलग कर सके।

➢ आत्मा और परमात्मा का साथ है। परमात्मा तो कहाँ भी साथ निभाता है और हर एक से कम्बाइण्ड रूप से प्रीत की रीति निभाने वाले हैं। हरेक क्या कहेंगे-मेरा बाबा है। या कहेंगे-तेरा बाबा है? हरेक कहेगा-मेरा बाबा है! तो मेरा क्यों कहते हो? अधिकार है तब ही तो कहते हो। प्यार भी है और अधिकार भी है। जहाँ प्यार होता है वहाँ अधिकार भी होता है।

➢ अधिकार का नशा है ना। कितना बड़ा अधिकार मिला है! इतना बड़ा अधिकार सतयुग में भी नहीं मिलेगा! किसी जन्म में परमात्म-अधिकार नहीं मिलता। प्राप्ति यहाँ है। प्रालब्ध सतयुग में है लेकिन प्राप्ति का समय अभी है।

26.3.93

रहा हूँ, सदा मिलन में रहता हूँ?

➢ संगम के मेले को अगर अब नहीं मनाया तो क्या फिर कब यह मेला लगेंगा क्या? जबकि सारे कल्प के अन्दर यह थोड़ा समय ही बाप और बच्चों का मेला लगता है, तो इतने थोड़े समय के मेले को क्या करना चाहिए? हर सेकेण्ड मनाना चाहिए। तो समय की विशेषताओं को जानते हुए अपने में भी वह विशेषता धारण करो। तो स्वत: ही श्रेष्ठ आत्मा बन जावेंगे। लक्ष्य तो सभी का श्रेष्ठ आत्मा बनने का है ना।

11-7-72

➢ हिम्मत रखने से मदद स्वत: ही मिलती है। हिम्मत में कुछ जरा-सा भी कमी होती है तब मदद में भी कमी पड़ती है। कई समझते हैं मदद मिलेगी तो करके दिखावेंगे। लेकिन मदद मिलेगी ही हिम्मत रखने वालो को। पहले हिम्मते बच्चे, फिर मददे बाप है।

➢ हिम्मत धारण करो तो आपकी एक गुणा हिम्मत बाप की सौ गुणा मदद।अगर एक भी कदम ना उठावें तो बाप भी 100 कदम ना उठावेंगे। जो करेगा वो पावेगा। हिम्मत रखना अर्थात् करना। सिर्फ बाप के ऊपर रखना कि बाबा मदद करेगा तो होगा - यह भी पुरुषार्थहीन के लक्षण हैं।

➢ बाप हमारा साथी है, बाबा सदा मददगार है। निश्चय बुद्धि विजयन्ति। ऐसा सदा स्मृति में रखते हुये, हर कदम उठाओ तो देखो विजय आपके गले का हार बन जावेगी।

6.8.72

➢ जब बाप ने आपकी जिम्मेवारी ले ली, तो जिम्मेवारी का फिक्र क्यों? अभी सिर्फ रेस्पान्सिबिल्टी है बाप के साथ-साथ चलते रहने की। वह भी बाप के साथ-साथ है, अकेले नहीं। तो क्या फिक्र है? कल क्या होगा-ये फिक्र है? जॉब का फिक्र है? दुनिया में क्या होगा- ये फिक्र है? क्योंकि जानते हो कि-हमारे लिए जो भी होगा अच्छा होगा। निश्चय है ना। पक्का निश्चय है या हिलता है कभी ? जहाँ निश्चय पक्का है, वहाँ निश्चय के साथ विजय भी निश्चित है। ये भी निश्चय है ना कि विजय हुई पड़ी है।

➢ सदैव स्मृति रखो कि- कम्बाइण्ड थे, कम्बाइण्ड हैं और कम्बाइण्ड रहेंगे। कोई की ताकत नहीं जो अनेक बार के कम्बाइण्ड स्वरूप को अलग कर सके।

➢ आत्मा और परमात्मा का साथ है। परमात्मा तो कहाँ भी साथ निभाता है और हर एक से कम्बाइण्ड रूप से प्रीत की रीति निभाने वाले हैं। हरेक क्या कहेंगे-मेरा बाबा है। या कहेंगे-तेरा बाबा है? हरेक कहेगा-मेरा बाबा है! तो मेरा क्यों कहते हो? अधिकार है तब ही तो कहते हो। प्यार भी है और अधिकार भी है। जहाँ प्यार होता है वहाँ अधिकार भी होता है।

➢ अधिकार का नशा है ना। कितना बड़ा अधिकार मिला है! इतना बड़ा अधिकार सतयुग में भी नहीं मिलेगा! किसी जन्म में परमात्म-अधिकार नहीं मिलता। प्राप्ति यहाँ है। प्रालब्ध सतयुग में है लेकिन प्राप्ति का समय अभी है।

26.3.93

60

रहा हूँ, सदा मिलन में रहता हूँ?

➢ संगम के मेले को अगर अब नहीं मनाया तो क्या फिर कब यह मेला लगेंगा क्या? जबकि सारे कल्प के अन्दर यह थोड़ा समय ही बाप और बच्चों का मेला लगता है, तो इतने थोड़े समय के मेले को क्या करना चाहिए? हर सेकेण्ड मनाना चाहिए। तो समय की विशेषताओं को जानते हुए अपने में भी वह विशेषता धारण करो। तो स्वत: ही श्रेष्ठ आत्मा बन जावेंगे। लक्ष्य तो सभी का श्रेष्ठ आत्मा बनने का है ना।

11-7-72

➢ हिम्मत रखने से मदद स्वत: ही मिलती है। हिम्मत में कुछ जरा-सा भी कमी होती है तब मदद में भी कमी पड़ती है। कई समझते हैं मदद मिलेगी तो करके दिखावेंगे। लेकिन मदद मिलेगी ही हिम्मत रखने वालो को। पहले हिम्मते बच्चे, फिर मददे बाप है।

➢ हिम्मत धारण करो तो आपकी एक गुणा हिम्मत बाप की सौ गुणा मदद।अगर एक भी कदम ना उठावें तो बाप भी 100 कदम ना उठावेंगे। जो करेगा वो पावेगा। हिम्मत रखना अर्थात् करना। सिर्फ बाप के ऊपर रखना कि बाबा मदद करेगा तो होगा - यह भी पुरुषार्थहीन के लक्षण हैं।

➢ बाप हमारा साथी है, बाबा सदा मददगार है। निश्चय बुद्धि विजयन्ति। ऐसा सदा स्मृति में रखते हुये, हर कदम उठाओ तो देखो विजय आपके गले का हार बन जावेगी।

6.8.72

13

➢ जैसे शरीर और आत्मा का जब तक पार्ट है तब तक अलग नहीं हो पाती है, वैसे बाप की याद बुद्धि से अलग न हो। बुद्धि का साथ सदैव याद अर्थात् बाप के साथ हो। ऐसे को कहा जाता है योगी जिसको और कोई भी स्मृति अपनी तरफ आकर्षित न कर पावे।

➢ अगर सर्वशक्तिवान् की याद सदा साथ है तो और कोई भी याद बुद्धि में अंदर आ नहीं सकती। इसको ही सहज और स्वत: योगी कहा जाता है।

➢ अगर स्वयं बाप के साथ लव में लवलीन रहेंगे तो औरों को भी सहज ही आप-समान व बाप-समान बना सकेंगे।

12.11.72

➢ जितना-जितना बाप-दादा से लव जुटता है, उतना ही बुद्धि का ताला खुलता जाता है। लव कम तो लक्क भी कम

18.1.73

➢ बाप-दादा बच्चों को सदैव अपने पास रहने का निमन्त्रण देते हैं, अपने साथ हर चरित्र अनुभव कराने का निमन्त्रण देते हैं तो ऐसा श्रेष्ठ निमन्त्रण स्वीकार नहीं करते हो क्या? सारे कल्प के अन्दर आत्माओं को श्रेष्ठ आत्मा द्वारा वा साधारण आत्मा द्वारा भिन्न-भिन्न प्रकार के निमन्त्रण मिलते रहे लेकिन यह निमन्त्रण अभी नहीं तो कभी नहीं। निमन्त्रण को स्वीकार करना अर्थात् अपने आपको बाप के पास रखना। यह क्या मुश्किल है? निमन्त्रण पर सिर्फ स्वयं को पहुँचना होता है। बाकी सभी निमन्त्रण देने वाले की जिम्मेवारी है। तो अपने आप को बाप के पास ले जाना अर्थात् बुद्धि से

को साथ रखा तो पहाड़ भी राई बन जायेगी। इसको कहा जाता है-एक बल, एक भरोसे में रहने वाले।

➢ योग में भी बैठते हो तो कुछ समय योग लगता है और कुछ समय युद्ध करते रहते हो! उसी समय अगर शरीर छूट जाए तो कहाँ जायेंगे? अन्त मती सो गति क्या होगी? इसलिए सदा विजयीपन के संस्कार धारण करो। जब सर्वशक्तिवान बाप साथ है, तो जहाँ भगवान् है वहाँ युद्ध है या विजय है? तो ऐसे विजयी रत्न बनो। इसको कहते हैं एक बल एक भरोसा।

18.1.93

➢ जब एक बाप के तरफ बुद्धि लग गई तो बाकी क्या करना है! यही तो पुरुषार्थ है। क्या मुश्किल है! जब है ही बाप याद, तो बाप की याद में माया तो कुछ नहीं कर सकती। आ सकती है क्या माया?

➢ जिसका बाप भाग्यविधाता है, उसका कितना बड़ा भाग्य है! तो सदा अपने श्रेष्ठ भाग्य की लकीर को देख हर्षित रहते हो और सदा रहते रहना। ये भाग्य की लकीर सिर्फ एक जन्म के लिए नहीं है लेकिन अनेक जन्म ये भाग्य साथ रहेगा। भाग्य आपके साथ जायेगा ना। गारन्टी है ना।

➢ दुनिया वाले कहते हैं-हाथ खाली आये, हाथ खाली जायेंगे। लेकिन आप कहते हो- हम भाग्यविधाता के बच्चे भरकर जायेंगे, खाली नहीं जायेंगे। ये निश्चय है ना।

7.3.93

➢ जैसे शरीर और आत्मा का जब तक पार्ट है तब तक अलग नहीं हो पाती है, वैसे बाप की याद बुद्धि से अलग न हो। बुद्धि का साथ सदैव याद अर्थात् बाप के साथ हो। ऐसे को कहा जाता है योगी जिसको और कोई भी स्मृति अपनी तरफ आकर्षित न कर पावे।

➢ अगर सर्वशक्तिवान् की याद सदा साथ है तो और कोई भी याद बुद्धि में अंदर आ नहीं सकती। इसको ही सहज और स्वत: योगी कहा जाता है।

➢ अगर स्वयं बाप के साथ लव में लवलीन रहेंगे तो औरों को भी सहज ही आप-समान व बाप-समान बना सकेंगे।

12.11.72

➢ जितना-जितना बाप-दादा से लव जुटता है, उतना ही बुद्धि का ताला खुलता जाता है। लव कम तो लक्क भी कम

18.1.73

➢ बाप-दादा बच्चों को सदैव अपने पास रहने का निमन्त्रण देते हैं, अपने साथ हर चरित्र अनुभव कराने का निमन्त्रण देते हैं तो ऐसा श्रेष्ठ निमन्त्रण स्वीकार नहीं करते हो क्या? सारे कल्प के अन्दर आत्माओं को श्रेष्ठ आत्मा द्वारा वा साधारण आत्मा द्वारा भिन्न-भिन्न प्रकार के निमन्त्रण मिलते रहे लेकिन यह निमन्त्रण अभी नहीं तो कभी नहीं। निमन्त्रण को स्वीकार करना अर्थात् अपने आपको बाप के पास रखना। यह क्या मुश्किल है? निमन्त्रण पर सिर्फ स्वयं को पहुँचना होता है। बाकी सभी निमन्त्रण देने वाले की जिम्मेवारी है। तो अपने आप को बाप के पास ले जाना अर्थात् बुद्धि से

को साथ रखा तो पहाड़ भी राई बन जायेगी। इसको कहा जाता है-एक बल, एक भरोसे में रहने वाले।

➢ योग में भी बैठते हो तो कुछ समय योग लगता है और कुछ समय युद्ध करते रहते हो! उसी समय अगर शरीर छूट जाए तो कहाँ जायेंगे? अन्त मती सो गति क्या होगी? इसलिए सदा विजयीपन के संस्कार धारण करो। जब सर्वशक्तिवान बाप साथ है, तो जहाँ भगवान् है वहाँ युद्ध है या विजय है? तो ऐसे विजयी रत्न बनो। इसको कहते हैं एक बल एक भरोसा।

18.1.93

➢ जब एक बाप के तरफ बुद्धि लग गई तो बाकी क्या करना है! यही तो पुरुषार्थ है। क्या मुश्किल है! जब है ही बाप याद, तो बाप की याद में माया तो कुछ नहीं कर सकती। आ सकती है क्या माया?

➢ जिसका बाप भाग्यविधाता है, उसका कितना बड़ा भाग्य है! तो सदा अपने श्रेष्ठ भाग्य की लकीर को देख हर्षित रहते हो और सदा रहते रहना। ये भाग्य की लकीर सिर्फ एक जन्म के लिए नहीं है लेकिन अनेक जन्म ये भाग्य साथ रहेगा। भाग्य आपके साथ जायेगा ना। गारन्टी है ना।

➢ दुनिया वाले कहते हैं-हाथ खाली आये, हाथ खाली जायेंगे। लेकिन आप कहते हो- हम भाग्यविधाता के बच्चे भरकर जायेंगे, खाली नहीं जायेंगे। ये निश्चय है ना।

7.3.93

कोई बैठा है लेकिन साथी अर्थात् मददगार है। साथ वाला अपने काम में बिज़ी होने से भूल भी सकता है लेकिन साथी नहीं भूलता। तो हर कर्म में बाप का साथ साथी रुप में है।

13.2.92

➢ सबसे बड़े ते बड़ा खजाना खुशी का अभी मिलता है। सम्भालना आता है ना। सम्भाल करने की विधि है-सदा बाप को साथ रखना। अगर बाप सदा साथ है तो बाप का साथ ही बड़े ते बड़ा सेफ्टी का साधन है।

13.10.92

➢ जो बाप का कार्य है वह हमारा कार्य है। बाप का कार्य है-पुरानी सृष्टि को नया बनाना, सबको सुख-शान्ति का अनुभव कराना। यही बाप का कार्य है। तो जो बाप का कार्य है वह बच्चों का कार्य है। तो अपने को सदा बाप के हर कार्य में साथी समझने से सहज ही बाप याद आता है।

3.11.92

➢ ब्राह्मण जीवन में कोई भी-चाहे स्थूल काम, चाहे आत्मिक पुरुषार्थ का, लेकिन कोई भी असम्भव नहीं हो सकता। ब्राह्मण का अर्थ ही है-असम्भव को भी सम्भव करने वाले। ब्राह्मणों की डिक्शनरी में असम्भव शब्द है नहीं, मुश्किल शब्द है नहीं, मेहनत शब्द है नहीं।

➢ जब बाप का साथ छोड़ देते हो, अकेले करते हो तो बोझ भी लगेगा, मेहनत भी लगेगी, मुश्किल और असम्भव भी लगेगा और बाप

बाप के पास रहना इसमें क्या मेहनत है?

➢ आज की दुनिया में किसी साधारण व्यक्ति को प्रेजीडेन्ट निमन्त्रण दे कि आज से तुम मेरे साथ रहना तो या करेंगे? (साहस नहीं रखेंगे) अगर वह साहस दिलाये तो क्या करेंगे?क्या देरी करेंगे? तो बाप के निमन्त्रण को सदा स्वीकार क्यों नहीं करते हो? कोई रस्सियाँ हैं जो कि खींचती हैं?

16.5.73

➢ किसी भी प्रकार के संस्कार वाला हो लेकिन बाप-दादा के समीप होने के कारण, परखने की पॉवर होने के कारण, चुम्बक के समान कितनी भी दूर वाली आत्मा को बाप-दादा के समीप लाने वाले हैं। बाप के गुणों, बाप के कर्तव्यों के समीप लाने वाले हैं।

6.6.73

➢ कैसी भी कोई परिस्थिति आये, कैसे भी विघ्न हिलाने के लिए आ जाएँ लेकिन जिसके साथ स्वयं बाप सर्वशक्तिवान् है उनके सामने वह विघ्न क्या हैं? उनके आगे विघ्न, परिवर्तन हो कर क्या बन जायेंगे? विघ्न लगन का साधन बन जायेंगे।

➢ हर बात में कल्याण दिखाई दे। कल्याणकारी बाप की सन्तान कल्याण-कारी हो ना? कल्याणकारी बनने के बाद कोई भी अकल्याण की बात हो नहीं सकती। यह निश्चय और स्मृति-स्वरूप हो जाओ तो आप कभी डगमगा नहीं सकेंगे।

➢ जैसे कोई हरा या लाल चश्मा पहनता है तो उसको सभी हरा अथवा लाल ही दिखाई पड़ता है। वैसे आप लोगों के तीसरे नेत्र पर कल्याणकारी का चश्मा पड़ा है। तीसरा नेत्र है ही कल्याणकारी। उसमें अकल्याण दिखाई

कोई बैठा है लेकिन साथी अर्थात् मददगार है। साथ वाला अपने काम में बिज़ी होने से भूल भी सकता है लेकिन साथी नहीं भूलता। तो हर कर्म में बाप का साथ साथी रुप में है।

13.2.92

➢ सबसे बड़े ते बड़ा खजाना खुशी का अभी मिलता है। सम्भालना आता है ना। सम्भाल करने की विधि है-सदा बाप को साथ रखना। अगर बाप सदा साथ है तो बाप का साथ ही बड़े ते बड़ा सेफ्टी का साधन है।

13.10.92

➢ जो बाप का कार्य है वह हमारा कार्य है। बाप का कार्य है-पुरानी सृष्टि को नया बनाना, सबको सुख-शान्ति का अनुभव कराना। यही बाप का कार्य है। तो जो बाप का कार्य है वह बच्चों का कार्य है। तो अपने को सदा बाप के हर कार्य में साथी समझने से सहज ही बाप याद आता है।

3.11.92

➢ ब्राह्मण जीवन में कोई भी-चाहे स्थूल काम, चाहे आत्मिक पुरुषार्थ का, लेकिन कोई भी असम्भव नहीं हो सकता। ब्राह्मण का अर्थ ही है-असम्भव को भी सम्भव करने वाले। ब्राह्मणों की डिक्शनरी में असम्भव शब्द है नहीं, मुश्किल शब्द है नहीं, मेहनत शब्द है नहीं।

➢ जब बाप का साथ छोड़ देते हो, अकेले करते हो तो बोझ भी लगेगा, मेहनत भी लगेगी, मुश्किल और असम्भव भी लगेगा और बाप

58

बाप के पास रहना इसमें क्या मेहनत है?

➢ आज की दुनिया में किसी साधारण व्यक्ति को प्रेजीडेन्ट निमन्त्रण दे कि आज से तुम मेरे साथ रहना तो या करेंगे? (साहस नहीं रखेंगे) अगर वह साहस दिलाये तो क्या करेंगे?क्या देरी करेंगे? तो बाप के निमन्त्रण को सदा स्वीकार क्यों नहीं करते हो? कोई रस्सियाँ हैं जो कि खींचती हैं?

16.5.73

➢ किसी भी प्रकार के संस्कार वाला हो लेकिन बाप-दादा के समीप होने के कारण, परखने की पॉवर होने के कारण, चुम्बक के समान कितनी भी दूर वाली आत्मा को बाप-दादा के समीप लाने वाले हैं। बाप के गुणों, बाप के कर्तव्यों के समीप लाने वाले हैं।

6.6.73

➢ कैसी भी कोई परिस्थिति आये, कैसे भी विघ्न हिलाने के लिए आ जाएँ लेकिन जिसके साथ स्वयं बाप सर्वशक्तिवान् है उनके सामने वह विघ्न क्या हैं? उनके आगे विघ्न, परिवर्तन हो कर क्या बन जायेंगे? विघ्न लगन का साधन बन जायेंगे।

➢ हर बात में कल्याण दिखाई दे। कल्याणकारी बाप की सन्तान कल्याण-कारी हो ना? कल्याणकारी बनने के बाद कोई भी अकल्याण की बात हो नहीं सकती। यह निश्चय और स्मृति-स्वरूप हो जाओ तो आप कभी डगमगा नहीं सकेंगे।

➢ जैसे कोई हरा या लाल चश्मा पहनता है तो उसको सभी हरा अथवा लाल ही दिखाई पड़ता है। वैसे आप लोगों के तीसरे नेत्र पर कल्याणकारी का चश्मा पड़ा है। तीसरा नेत्र है ही कल्याणकारी। उसमें अकल्याण दिखाई

15

पड़े, यह हो ही नहीं सकता। जिसको अज्ञानी लोग अकल्याण समझते हैं लेकिन आपका उस अकल्याण में ही कल्याण समाया हुआ है। जैसे लोग विनाश को अकल्याण समझते हैं लेकिन आप समझते हो कि इससे ही गति-सदगति के गेट्स खुलेंगे।

20.6.73

➢ इस समय मुख्य मेला है ही आत्मा रूप से परमात्मा बाप के साथ मिलने का अथवा यूँ कहें कि आत्मा और परमात्मा का मेला है। न सिर्फ एक सम्बन्ध से, लेकिन सर्व-सम्बन्धों से, सर्व सम्बन्धी बाप से मिलन का मेला है अथवा सर्व-प्राप्तियों का यह मेला है। एक सेकेण्ड में सर्व-सम्बन्धों से सर्व-सम्बन्धी बाप से मिलन मनाने से प्राप्ति स्वत: ही हो जाती है

➢ जैसे कि अपनी चीज को सम्भालने के लिए कोई सर्वेन्ट को रखा जाता है। बाप को देते भी वही हो जिसको आप कन्ट्रोल नहीं कर पाते हो बाकी बाप को और कुछ दिया है क्या? किचड़ पट्टी देकर अगर पद्मों की प्राप्ति हो जाय तो उसको देना कहेंगे या लेना? उसे लेना कहेंगे ना?

➢ मेले से बाहर निकल जाते हो तो परेशान हो जाते हो और जब हाथ छोड़ देते हैं तो भी परेशान हो । ऐसे ही तुम यहाँ भी बाप का हाथ छोड़ देते हो। 'हाथ छोड देना' क्या इसका अर्थ समझते हो? बाप का स्थूल हाथ तो है नहीं। श्रीमत है हाथ और बुद्धि-योग है साथ।

8.7.73

➢ तीन सम्बन्ध तो स्पष्ट हैं - सत् बाप, सत् शिक्षक और सदगुरु परन्तु चौथा सम्बन्ध है साजन है और सजनी का। यह भी एक विशेष सम्बन्ध है आत्मा-परमात्मा का मिलन अर्थात् सगाई। यह सम्बन्ध भी पुरुषार्थ को

जाए वह क्या रहेगा? सदा हर्षित। ऐसे हर्षित रहो जो कोई भी देखकर पूछे कि क्या मिला है? जितना-जितना पुरुषार्थ में आगे बढ़ते जायेंगे उतना आपको बोलने की भी आवश्यकता नहीं रहेगी। आपका चेहरा बोलेगा कि इनको कुछ मिला है, क्योंकि चेहरा दर्पण होता है।

18.01.91

➢ बापदादा ने सुनाया था कि तपस्या क्या है? मौज मनाना। तपस्या अर्थात् बहुत सहज नाचना और गाना बस।

➢ तपस्या का प्रत्यक्षफल है खुशी। तो खुशी में क्या होता है? नाचना। तपस्या अर्थात् खुशी में नाचना और बाप के और अपने आदि अनादि स्वरूप के गुण गाना। तो यह गीत कितना बड़ा और कितना सहज है।

26.10.91

➢ सदा अपने भाग्य को स्मृति में रखने से भाग्य विधाता बाप स्वत: ही याद आयेगा। भाग्य विधाता को याद करना अर्थात् भाग्य को याद करना और भाग्य को याद करना अर्थात् भाग्य विधाता को याद करना। दोनों का सम्बन्ध है।

11.12.91

➢ आप लोग संकल्प करते हो और बापदादा के पास पहुँच जाता है।

➢ सबसे सहज और निरन्तर याद का साधन है-सदा बाप का साथ अनुभव हो। साथ की अनुभुति याद करने की मेहनत से छुड़ा देती है। जब साथ है तो याद तो रहेगी ना। और साथ सिर्फ ऐसे नहीं है कि साथ में

पड़े, यह हो ही नहीं सकता। जिसको अज्ञानी लोग अकल्याण समझते हैं लेकिन आपका उस अकल्याण में ही कल्याण समाया हुआ है। जैसे लोग विनाश को अकल्याण समझते हैं लेकिन आप समझते हो कि इससे ही गति-सदगति के गेट्स खुलेंगे।

20.6.73

➢ इस समय मुख्य मेला है ही आत्मा रूप से परमात्मा बाप के साथ मिलने का अथवा यूँ कहें कि आत्मा और परमात्मा का मेला है। न सिर्फ एक सम्बन्ध से, लेकिन सर्व-सम्बन्धों से, सर्व सम्बन्धी बाप से मिलन का मेला है अथवा सर्व-प्राप्तियों का यह मेला है। एक सेकेण्ड में सर्व-सम्बन्धों से सर्व-सम्बन्धी बाप से मिलन मनाने से प्राप्ति स्वत: ही हो जाती है

➢ जैसे कि अपनी चीज को सम्भालने के लिए कोई सर्वेन्ट को रखा जाता है। बाप को देते भी वही हो जिसको आप कन्ट्रोल नहीं कर पाते हो बाकी बाप को और कुछ दिया है क्या? किचड़ पट्टी देकर अगर पद्मों की प्राप्ति हो जाय तो उसको देना कहेंगे या लेना? उसे लेना कहेंगे ना?

➢ मेले से बाहर निकल जाते हो तो परेशान हो जाते हो और जब हाथ छोड़ देते हैं तो भी परेशान हो । ऐसे ही तुम यहाँ भी बाप का हाथ छोड़ देते हो। 'हाथ छोड देना' क्या इसका अर्थ समझते हो? बाप का स्थूल हाथ तो है नहीं। श्रीमत है हाथ और बुद्धि-योग है साथ।

8.7.73

➢ तीन सम्बन्ध तो स्पष्ट हैं - सत् बाप, सत् शिक्षक और सदगुरु परन्तु चौथा सम्बन्ध है साजन है और सजनी का। यह भी एक विशेष सम्बन्ध है आत्मा-परमात्मा का मिलन अर्थात् सगाई। यह सम्बन्ध भी पुरुषार्थ को

जाए वह क्या रहेगा? सदा हर्षित। ऐसे हर्षित रहो जो कोई भी देखकर पूछे कि क्या मिला है? जितना-जितना पुरुषार्थ में आगे बढ़ते जायेंगे उतना आपको बोलने की भी आवश्यकता नहीं रहेगी। आपका चेहरा बोलेगा कि इनको कुछ मिला है, क्योंकि चेहरा दर्पण होता है।

18.01.91

➢ बापदादा ने सुनाया था कि तपस्या क्या है? मौज मनाना। तपस्या अर्थात् बहुत सहज नाचना और गाना बस।

➢ तपस्या का प्रत्यक्षफल है खुशी। तो खुशी में क्या होता है? नाचना। तपस्या अर्थात् खुशी में नाचना और बाप के और अपने आदि अनादि स्वरूप के गुण गाना। तो यह गीत कितना बड़ा और कितना सहज है।

26.10.91

➢ सदा अपने भाग्य को स्मृति में रखने से भाग्य विधाता बाप स्वत: ही याद आयेगा। भाग्य विधाता को याद करना अर्थात् भाग्य को याद करना और भाग्य को याद करना अर्थात् भाग्य विधाता को याद करना। दोनों का सम्बन्ध है।

11.12.91

➢ आप लोग संकल्प करते हो और बापदादा के पास पहुँच जाता है।

➢ सबसे सहज और निरन्तर याद का साधन है-सदा बाप का साथ अनुभव हो। साथ की अनुभुति याद करने की मेहनत से छुड़ा देती है। जब साथ है तो याद तो रहेगी ना। और साथ सिर्फ ऐसे नहीं है कि साथ में

आ राम तो आराम आ जायेगा। अकेले सोते हो तो और-और संकल्प चलते हैं। बाप के साथ याद की गोदी में सो जाओ। मीठे बच्चे, प्यारे बच्चे की लोरी सुनते-सुनते सो जाओ। देखो कितना अलौकिक अनुभव होता है!

7-3-88

➢ जब मैं करता हूँ - यह स्मृति रहती है तो भारी हो जाते और बाप करा रहा है - तो हल्के रहते। मैं निमित्त् हूँ, कराने वाला करा रहा, चलाने वाला चला रहा है - इसको कहते बेफिकर बादशाह।

15-3-88

➢ इतना अधिकार का नशा रहता है। जिसका भगवान मददगार है उसकी विजय नहीं होगी तो किसकी होगी! कल्प पहले का यादगार भी दिखाते हैं कि जहाँ भगवान है वहाँ विजय है। चाहे पांच पाण्डव दिखाते हैं, लेकिन विजय क्यों हुई? भगवान साथ है, तो जब कल्प पहले यादगार में विजयी बने हो तो अभी भी विजयी होंगे ना?

➢ कभी भी कोई कार्य में संकल्प नहीं उठना चाहिए कि ये होगा, नहीं होगा, विजय होगी या नहीं, होगी.. - यह क्वेश्चन उठ नहीं सकता। कभी भी बाप के साथ वाले की हार हो नहीं सकती। यह कल्प-कल्प की नूंध निश्चित है। इस भावी को कोई टाल नहीं सकता। इतना दृढ़ निश्चय सदा आगे उड़ाता रहेगा। तो सदा विजय की खुशी में नाचते गाते रहो।

➢ कोई को अल्पकाल की लॉटरी भी मिलती है तो उसका चेहरा भी दिखाता है कि उसको कुछ मिला है। तो जिसको पद्मापद्म भाग्य प्राप्त हो

सहज कर देता है।

➢ जैसे चार सब्जेक्टस हैं, वैसे ही चार सम्बन्ध सामने लाओ और इन चार सम्बन्धों के आधार से मुख्य चार धरणायें हैं। एक तो बाप के सम्बन्ध में फरमान वरदार,शिक्षक के सम्बन्ध में - ईमानदार और गुरु के सम्बन्ध में - आज्ञाकारी और साजन के सम्बन्ध में - वफ़ादार। जो यह चारों सम्बन्ध और चार विशेष धारणायें इन सभी को रिवाइज करके देखो।

➢ इसके साथ-साथ चार स्लोगन्स भी स्मृति में रखो-वह कौन-से? बाबा के सम्बन्ध में स्लोगन है- सन शोज फादर, अर्थात् सपूत बन सबूत देना है। शिक्षक के रुप में स्लोगन है-जब तक जीना है तब तक पढ़ना है, अर्थात् लास्ट घड़ी तक पढ़ना है। यह लक्ष्य अबर मजबूत है तो फिर सर्व प्राप्तियाँ स्वत: ही होती हैं। और गुरु के रुप में स्लोगन है-जहाँ बिठाये, जैसे बिठाये,जो सुनाये, जैसे सुनावें, जैसे चलावे और जैसे सुलावें अर्थात् जैसे कि सभी हुकमी हुकम चला रहा है-यह है सदगुरु का स्लोगन। अभी साजन के रुप में क्या स्लोगन है-तुम्हीं से बैठूँ, तुम्हीं से खाऊ और तुम्हीं से श्वाँसों श्वाँस साथ रहूँ। यह है साजन के रुप का स्लोगन।

21.7.73

➢ साथी क्यों बनाया जाता है? सम्पर्क क्यों और किससे रखा जाता है? आवश्यकता के समय, मुश्किल के समय सहारा अथवा सहयोग के लिए; उदास स्थिति में मन को खुशी में लाने के लिए व दु:ख के समय दु:ख को बांट लेने के लिए साथी बनाया जाता है।

20. 5. 74

आ राम तो आराम आ जायेगा। अकेले सोते हो तो और-और संकल्प चलते हैं। बाप के साथ याद की गोदी में सो जाओ। मीठे बच्चे, प्यारे बच्चे की लोरी सुनते-सुनते सो जाओ। देखो कितना अलौकिक अनुभव होता है!

7-3-88

➢ जब मैं करता हूँ - यह स्मृति रहती है तो भारी हो जाते और बाप करा रहा है - तो हल्के रहते। मैं निमित्त् हूँ, कराने वाला करा रहा, चलाने वाला चला रहा है - इसको कहते बेफिकर बादशाह।

15-3-88

➢ इतना अधिकार का नशा रहता है। जिसका भगवान मददगार है उसकी विजय नहीं होगी तो किसकी होगी! कल्प पहले का यादगार भी दिखाते हैं कि जहाँ भगवान है वहाँ विजय है। चाहे पांच पाण्डव दिखाते हैं, लेकिन विजय क्यों हुई? भगवान साथ है, तो जब कल्प पहले यादगार में विजयी बने हो तो अभी भी विजयी होंगे ना?

➢ कभी भी कोई कार्य में संकल्प नहीं उठना चाहिए कि ये होगा, नहीं होगा, विजय होगी या नहीं, होगी.. - यह क्वेश्चन उठ नहीं सकता। कभी भी बाप के साथ वाले की हार हो नहीं सकती। यह कल्प-कल्प की नूंध निश्चित है। इस भावी को कोई टाल नहीं सकता। इतना दृढ़ निश्चय सदा आगे उड़ाता रहेगा। तो सदा विजय की खुशी में नाचते गाते रहो।

➢ कोई को अल्पकाल की लॉटरी भी मिलती है तो उसका चेहरा भी दिखाता है कि उसको कुछ मिला है। तो जिसको पद्मापद्म भाग्य प्राप्त हो

56

सहज कर देता है।

➢ जैसे चार सब्जेक्टस हैं, वैसे ही चार सम्बन्ध सामने लाओ और इन चार सम्बन्धों के आधार से मुख्य चार धरणायें हैं। एक तो बाप के सम्बन्ध में फरमान वरदार,शिक्षक के सम्बन्ध में - ईमानदार और गुरु के सम्बन्ध में - आज्ञाकारी और साजन के सम्बन्ध में - वफ़ादार। जो यह चारों सम्बन्ध और चार विशेष धारणायें इन सभी को रिवाइज करके देखो।

➢ इसके साथ-साथ चार स्लोगन्स भी स्मृति में रखो-वह कौन-से? बाबा के सम्बन्ध में स्लोगन है- सन शोज फादर, अर्थात् सपूत बन सबूत देना है। शिक्षक के रुप में स्लोगन है-जब तक जीना है तब तक पढ़ना है, अर्थात् लास्ट घड़ी तक पढ़ना है। यह लक्ष्य अबर मजबूत है तो फिर सर्व प्राप्तियाँ स्वत: ही होती हैं। और गुरु के रुप में स्लोगन है-जहाँ बिठाये, जैसे बिठाये,जो सुनाये, जैसे सुनावें, जैसे चलावे और जैसे सुलावें अर्थात् जैसे कि सभी हुकमी हुकम चला रहा है-यह है सदगुरु का स्लोगन। अभी साजन के रुप में क्या स्लोगन है-तुम्हीं से बैठूँ, तुम्हीं से खाऊ और तुम्हीं से श्वाँसों श्वाँस साथ रहूँ। यह है साजन के रुप का स्लोगन।

21.7.73

➢ साथी क्यों बनाया जाता है? सम्पर्क क्यों और किससे रखा जाता है? आवश्यकता के समय, मुश्किल के समय सहारा अथवा सहयोग के लिए; उदास स्थिति में मन को खुशी में लाने के लिए व दु:ख के समय दु:ख को बांट लेने के लिए साथी बनाया जाता है।

20. 5. 74

17

➢ सदैव हर कदम, हर संकल्प में बाप-दादा को सदा साथी अनुभव करेंगे; जितना साथीपन का अनुभव होगा, उतना ही अचल, अडोल और अतीन्द्रिय सुख में रहेंगे। उनका हर बोल बाप के साथ दिखाई देगा।

11.7.74

➢ बाप-दादा अन्त तक आपके साथ है और सदा बच्चों के ऊपर स्नेह और सहयोग की छत्र-छाया के समान हैं। इसलिये घबराओ मत। बैक-बोन बाप-दादा, सामना करने के लिए किसी भी व्यक्ति द्वारा, समय पर प्रत्यक्ष हो ही जायेंगे और अब भी हो रहे हैं।

16.1.75

➢ कल्याणकारी बाप की श्रीमत पर चलने वाली आत्मायें सिवाय कल्याण के, चढ़ती कला के और कोई भी संकल्प कर नहीं सकती हैं। उनका हर संकल्प, हर कार्य के प्रति समय, वर्तमान का भविष्य के प्रति समर्थ संकल्प होगा, व्यर्थ नहीं होगा।

8.2.75

➢ कल्प पहले की यादगार में भी अर्जुन को जब बाप का साथ भूल जाता था, अर्थात् जब वह सारथी को भूल जाता था, तो क्या बन जाता था? निर्बल कहो व कायर कहो और जब स्मृति आती थी, कि मेरा साथी और सारथी बाप है तो विजयी बन जाता था। निरन्तर सहज याद की सहज युक्ति एक ही है कि सदा अपने कम्बाइन्ड रूप को सदा साथ रखो

➢ भाग्यवान बच्चों को अमृतवेले स्वयं बाप उठाते भी हैं और आह्वान भी करते हैं। जो अति स्नेही बच्चे हैं, उन्हों का अनुभव है कि सोने भी चाहे तो कोई सोने नहीं दे रहा है, कोई उठा रहा है, बुला रहा है। ऐसे अनुभव होता है ना।

➢ अपना भाग्य देखो - बाप स्वयं शिक्षक बन कितना दूर देश से आपको पढ़ाने आता है! लोग तो भगवान के पास जाने के लिए प्रयत्न करते और भगवान स्वयं आपके पास शिक्षक बन पढ़ाने आते हैं, कितना भाग्य है!

➢ कोई भी सेवा करते हो, चाहे लौकिक, चाहे अलौकिक, चाहे परिवार में, चाहे सेवाकेन्द्रों पर - कोई भी कर्म करो, कोई भी ड्यूटी बजाओ लेकिन सदा यह अनुभव करो कि करावनहार करा रहा है मुझ निमित्त करनहार द्वारा, मैं सेवा करने के लिए निमित्त बना हुआ हूँ, करावनहार करा रहा है।

➢ जब कोई समस्या आती है तो कहते हो - बाबा, अभी आप जानो। और जब समस्या समाप्त हो जाती है तो मस्त हो जाते हो।

➢ ब्रह्मा-भोजन खिलाता कौन है? नाम ही है ब्रह्मा-भोजन। ब्रह्मभोजन नहीं, ब्रह्मा भोजन। तो ब्रह्मा यज्ञ का सदा रक्षक है। हर एक यज्ञ-वत्स वा ब्रह्मा-वत्स के लिए ब्रह्मा बाप द्वारा ब्रह्मा-भोजन मिलना ही है।

➢ सुलाते भी बाप हैं लोरी देकर के। बाप की गोदी में सो जाओ तो थकावट बीमारी सब भूल जायेंगी और आराम करेंगे! सिर्फ आह्वान करो -

➢ सदैव हर कदम, हर संकल्प में बाप-दादा को सदा साथी अनुभव करेंगे; जितना साथीपन का अनुभव होगा, उतना ही अचल, अडोल और अतीन्द्रिय सुख में रहेंगे। उनका हर बोल बाप के साथ दिखाई देगा।

11.7.74

➢ बाप-दादा अन्त तक आपके साथ है और सदा बच्चों के ऊपर स्नेह और सहयोग की छत्र-छाया के समान हैं। इसलिये घबराओ मत। बैक-बोन बाप-दादा, सामना करने के लिए किसी भी व्यक्ति द्वारा, समय पर प्रत्यक्ष हो ही जायेंगे और अब भी हो रहे हैं।

16.1.75

➢ कल्याणकारी बाप की श्रीमत पर चलने वाली आत्मायें सिवाय कल्याण के, चढ़ती कला के और कोई भी संकल्प कर नहीं सकती हैं। उनका हर संकल्प, हर कार्य के प्रति समय, वर्तमान का भविष्य के प्रति समर्थ संकल्प होगा, व्यर्थ नहीं होगा।

8.2.75

➢ कल्प पहले की यादगार में भी अर्जुन को जब बाप का साथ भूल जाता था, अर्थात् जब वह सारथी को भूल जाता था, तो क्या बन जाता था? निर्बल कहो व कायर कहो और जब स्मृति आती थी, कि मेरा साथी और सारथी बाप है तो विजयी बन जाता था। निरन्तर सहज याद की सहज युक्ति एक ही है कि सदा अपने कम्बाइन्ड रूप को सदा साथ रखो

18

➢ भाग्यवान बच्चों को अमृतवेले स्वयं बाप उठाते भी हैं और आह्वान भी करते हैं। जो अति स्नेही बच्चे हैं, उन्हों का अनुभव है कि सोने भी चाहे तो कोई सोने नहीं दे रहा है, कोई उठा रहा है, बुला रहा है। ऐसे अनुभव होता है ना।

➢ अपना भाग्य देखो - बाप स्वयं शिक्षक बन कितना दूर देश से आपको पढ़ाने आता है! लोग तो भगवान के पास जाने के लिए प्रयत्न करते और भगवान स्वयं आपके पास शिक्षक बन पढ़ाने आते हैं, कितना भाग्य है!

➢ कोई भी सेवा करते हो, चाहे लौकिक, चाहे अलौकिक, चाहे परिवार में, चाहे सेवाकेन्द्रों पर - कोई भी कर्म करो, कोई भी ड्यूटी बजाओ लेकिन सदा यह अनुभव करो कि करावनहार करा रहा है मुझ निमित्त करनहार द्वारा, मैं सेवा करने के लिए निमित्त बना हुआ हूँ, करावनहार करा रहा है।

➢ जब कोई समस्या आती है तो कहते हो - बाबा, अभी आप जानो। और जब समस्या समाप्त हो जाती है तो मस्त हो जाते हो।

➢ ब्रह्मा-भोजन खिलाता कौन है? नाम ही है ब्रह्मा-भोजन। ब्रह्मभोजन नहीं, ब्रह्मा भोजन। तो ब्रह्मा यज्ञ का सदा रक्षक है। हर एक यज्ञ-वत्स वा ब्रह्मा-वत्स के लिए ब्रह्मा बाप द्वारा ब्रह्मा-भोजन मिलना ही है।

➢ सुलाते भी बाप हैं लोरी देकर के। बाप की गोदी में सो जाओ तो थकावट बीमारी सब भूल जायेंगी और आराम करेंगे! सिर्फ आह्वान करो -

55

झूले में, कभी सुख के झूले में, कभी बाप की गोदी के झूले में; आनंद, प्रेम, शान्ति के झूले में झूलते रहो। झूलना अर्थात् मौज मनाना।

➢ वरदानी समय पर भी वरदान नहीं लेंगे तो और किस समय लेंगे? समय समाप्त हुआ और समय प्रमाण यह समय की विशेषतायें भी सब समाप्त हो जायेंगी।

14.12.87

➢ दुनिया वाले बाप को ढूँढने के लिए निकलते हैं और आपको घर बैठे मिल गया। तो इतना बड़ा भाग्य प्राप्त होगा - ऐसे कभी संकल्प में भी सोचा था? यह जो गायन है घर बैठे भगवान मिला यह किसके लिए है? आपके लिए है ना। तो इसी श्रेष्ठ भाग्य को स्मृति में रख आगे बढ़ते चलो।

30-1-88

➢ बाप के साथी सदा रहेंगे तो जहाँ बाप है तो साक्षी होकर देखने से सहज ही मायाजीत बन अनेक जन्मों के लिए जगतीत बन जायेंगे।

16-2-88

➢ जो भी कर्म करो, तो कर्म करने के पहले यह स्मृति में लाओ कि यह कर्म बाप कैसे करते हैं। तो यह स्मृति स्वत: बाप के कर्म जैसा फालो करायेगी।

28-2-88

➢ अमृतवेले से अपने भाग्य की लिस्ट निकालो।

व स्मृति में रखो तो कभी भी कमजोरी के संकल्प भी क्या स्वप्न भी नहीं आयेंगे। जागते-सोते कम्बाइन्ड रूप हो।

➢ जबकि बाप स्वयं बच्चों से सदा साथ रहने का वायदा कर रहे हैं और निभा भी रहे हैं तो वायदे का लाभ उठाना चाहिए। ऐसे कम्पनी व कम्पेनियन, फिर कब मिलेंगे? बहुत जन्मों से आत्माओं की कम्पनी लेते हुए दु:ख का अनुभव करते हुए भी अब भी आत्माओं की कम्पनी अच्छी लगती है क्या, जो बाप की कम्पनी को भूल औरों की कम्पनी में चले जाते हो? कोई वैभव को व कोई व्यक्ति को कम्पेनियन बना देते हो

➢ अपने को अकेला समझने से चलते-चलते जीवन में उदासी आ जाती है। अति-इन्द्रिय सुखमय जीवन, सर्व सम्बन्धों से सम्पन्न जीवन और सर्व प्राप्तियों से सम्पन्न जीवन उस समय नीरस व बिल्कुल असार अनुभव करते हो। त्रिनेत्री होते हुए भी कोई राह नजर नहीं आती। क्या करूँ, कहाँ जाऊं कुछ समझ में नहीं आयेगा। खुद जीवन-मुक्ति के गेट्स खोलने वाले को कोई ठिकाना नजर नहीं आता, त्रिकालदर्शी होते हुए अपने वर्तमान को नहीं समझ सकते। सृष्टि के सर्व आत्माओं के भविष्य परिणाम को जानने वाले अपने उस समय के कर्म के परिणाम को जान नहीं सकते! यह कमाल करते हो न? ऐसी कमाल रोज कोइ-न-कोई बच्चे दिखाते रहते हैं।

6.9.75

झूले में, कभी सुख के झूले में, कभी बाप की गोदी के झूले में; आनंद, प्रेम, शान्ति के झूले में झूलते रहो। झूलना अर्थात् मौज मनाना।

➢ वरदानी समय पर भी वरदान नहीं लेंगे तो और किस समय लेंगे? समय समाप्त हुआ और समय प्रमाण यह समय की विशेषतायें भी सब समाप्त हो जायेंगी।

14.12.87

➢ दुनिया वाले बाप को ढूँढने के लिए निकलते हैं और आपको घर बैठे मिल गया। तो इतना बड़ा भाग्य प्राप्त होगा - ऐसे कभी संकल्प में भी सोचा था? यह जो गायन है घर बैठे भगवान मिला यह किसके लिए है? आपके लिए है ना। तो इसी श्रेष्ठ भाग्य को स्मृति में रख आगे बढ़ते चलो।

30-1-88

➢ बाप के साथी सदा रहेंगे तो जहाँ बाप है तो साक्षी होकर देखने से सहज ही मायाजीत बन अनेक जन्मों के लिए जगतीत बन जायेंगे।

16-2-88

➢ जो भी कर्म करो, तो कर्म करने के पहले यह स्मृति में लाओ कि यह कर्म बाप कैसे करते हैं। तो यह स्मृति स्वत: बाप के कर्म जैसा फालो करायेगी।

28-2-88

➢ अमृतवेले से अपने भाग्य की लिस्ट निकालो।

54

व स्मृति में रखो तो कभी भी कमजोरी के संकल्प भी क्या स्वप्न भी नहीं आयेंगे। जागते-सोते कम्बाइन्ड रूप हो।

➢ जबकि बाप स्वयं बच्चों से सदा साथ रहने का वायदा कर रहे हैं और निभा भी रहे हैं तो वायदे का लाभ उठाना चाहिए। ऐसे कम्पनी व कम्पेनियन, फिर कब मिलेंगे? बहुत जन्मों से आत्माओं की कम्पनी लेते हुए दु:ख का अनुभव करते हुए भी अब भी आत्माओं की कम्पनी अच्छी लगती है क्या, जो बाप की कम्पनी को भूल औरों की कम्पनी में चले जाते हो? कोई वैभव को व कोई व्यक्ति को कम्पेनियन बना देते हो

➢ अपने को अकेला समझने से चलते-चलते जीवन में उदासी आ जाती है। अति-इन्द्रिय सुखमय जीवन, सर्व सम्बन्धों से सम्पन्न जीवन और सर्व प्राप्तियों से सम्पन्न जीवन उस समय नीरस व बिल्कुल असार अनुभव करते हो। त्रिनेत्री होते हुए भी कोई राह नजर नहीं आती। क्या करूँ, कहाँ जाऊं कुछ समझ में नहीं आयेगा। खुद जीवन-मुक्ति के गेट्स खोलने वाले को कोई ठिकाना नजर नहीं आता, त्रिकालदर्शी होते हुए अपने वर्तमान को नहीं समझ सकते। सृष्टि के सर्व आत्माओं के भविष्य परिणाम को जानने वाले अपने उस समय के कर्म के परिणाम को जान नहीं सकते! यह कमाल करते हो न? ऐसी कमाल रोज कोइ-न-कोई बच्चे दिखाते रहते हैं।

6.9.75

19

➢ जब तक साक्षी स्वरूप की स्मृति सदा नहीं रहती तो बाप-दादा को अपना साथी भी नहीं बना सकते। साक्षी अवस्था का अनुभव, बाप के साथीपन का अनुभव कराता है।

➢ एक बाप के साथ सर्व-सम्बन्धों के सुख, सर्व-सम्बन्धों के प्रीति की प्राप्ति अनुभव करते हो तो और कहीं भी, किसी सम्बन्ध में बुद्धि जा नहीं सकती। हर श्वास, हर संकल्प में सदा बाप के सर्व-सम्बन्धों में बुद्धि मगन रहनी चाहिए।

12.10.75

➢ यहाँ अपने जीवन में, जीवन के आदि से अन्त तक बाप के साथ रहे हैं अर्थात् बुद्धियोग से साथ रहे हैं

13.10.75

➢ बाप को जीवन का साथी बनाया है? साथी के साथ सदा साथ निभाना होता है। साथ निभाना अर्थात् हर कदम उसकी मत पर चलना पड़े। तो कदम-कदम पर उसकी मत पर चलना अर्थात् साथ निभाना।

20.10.75

➢ हर समय सहारा लेने के कारण बाबा की याद रहेगी। उनके मुख से नशे से और निश्चय से यह बोल निकलेंगे - कि हमारा बाबा हमारे साथ है।

28.1.76

➢ फरिश्ता अर्थात् बाप के साथ सभी रिश्ते हों। अपनी देह के साथ भी रिश्ता नहीं।

➢ जो हर कर्म बाप के साथ करने वाले हैं, उनका हर कर्म श्रेष्ठ होगा ना। तो श्रेष्ठ कर्म करने वाली श्रेष्ठ आत्मायें हो। सदा इसी अनुभव में चलने वाले को ही मधुबन निवासी कहते हैं।

➢ जिस समय यह अनुभव नही होता तो मधुबन निवासी नहीं हुए। उस समय मधुबन में रहते भी मधुबन निवासी नहीं हैं और जो दूर रहते भी हर कर्म बाप के साथ करते, वह दूर रहते भी मधुबन निवासी है।

21.10.87

➢ हिम्मते बच्चे मददे बाप। बच्चों की हिम्मत पर सदा बाप की मदद पद्मगुणा प्राप्त होती है। बोझ तो बाप के ऊपर है। लेकिन ट्रस्टी बन सदा बाप की याद से आगे बढ़ते रहो। बाप की याद ही छत्रछाया है।

10.11.87

➢ स्वयं आफर करते हैं कि सर्व प्रकार का बोझ बाप को दे दो। बोझ उठाने की आफर करते हैं। भाग्यविधाता बन नालेजफुल बनाए, श्रेष्ठ कर्मों का ज्ञान स्पष्ट समझाए भाग्य की लकीर खींचने चाहो उतना खींच लो। सर्व खुले खजानों की चाबी आपके हाथ में दी है।

➢ सेवाधारी भी बनाते लेकिन साथ-साथ बुद्धिवानों की बुद्धि बन आत्माओं को टच भी करते जिससे नाम बच्चों का, काम बाप का सहज हो जाता है। इतना लाड और प्यार से लाडले बनाए पालना करते जो सदा अनेक झूलों में झूलाते रहते हैं! पांव नीचे नहीं रखने देते। कभी खुशी के

➢ जब तक साक्षी स्वरूप की स्मृति सदा नहीं रहती तो बाप-दादा को अपना साथी भी नहीं बना सकते। साक्षी अवस्था का अनुभव, बाप के साथीपन का अनुभव कराता है।

➢ एक बाप के साथ सर्व-सम्बन्धों के सुख, सर्व-सम्बन्धों के प्रीति की प्राप्ति अनुभव करते हो तो और कहीं भी, किसी सम्बन्ध में बुद्धि जा नहीं सकती। हर श्वास, हर संकल्प में सदा बाप के सर्व-सम्बन्धों में बुद्धि मगन रहनी चाहिए।

12.10.75

➢ यहाँ अपने जीवन में, जीवन के आदि से अन्त तक बाप के साथ रहे हैं अर्थात् बुद्धियोग से साथ रहे हैं

13.10.75

➢ बाप को जीवन का साथी बनाया है? साथी के साथ सदा साथ निभाना होता है। साथ निभाना अर्थात् हर कदम उसकी मत पर चलना पड़े। तो कदम-कदम पर उसकी मत पर चलना अर्थात् साथ निभाना।

20.10.75

➢ हर समय सहारा लेने के कारण बाबा की याद रहेगी। उनके मुख से नशे से और निश्चय से यह बोल निकलेंगे - कि हमारा बाबा हमारे साथ है।

28.1.76

➢ फरिश्ता अर्थात् बाप के साथ सभी रिश्ते हों। अपनी देह के साथ भी रिश्ता नहीं।

20

➢ जो हर कर्म बाप के साथ करने वाले हैं, उनका हर कर्म श्रेष्ठ होगा ना। तो श्रेष्ठ कर्म करने वाली श्रेष्ठ आत्मायें हो। सदा इसी अनुभव में चलने वाले को ही मधुबन निवासी कहते हैं।

➢ जिस समय यह अनुभव नही होता तो मधुबन निवासी नहीं हुए। उस समय मधुबन में रहते भी मधुबन निवासी नहीं हैं और जो दूर रहते भी हर कर्म बाप के साथ करते, वह दूर रहते भी मधुबन निवासी है।

21.10.87

➢ हिम्मते बच्चे मददे बाप। बच्चों की हिम्मत पर सदा बाप की मदद पद्मगुणा प्राप्त होती है। बोझ तो बाप के ऊपर है। लेकिन ट्रस्टी बन सदा बाप की याद से आगे बढ़ते रहो। बाप की याद ही छत्रछाया है।

10.11.87

➢ स्वयं आफर करते हैं कि सर्व प्रकार का बोझ बाप को दे दो। बोझ उठाने की आफर करते हैं। भाग्यविधाता बन नालेजफुल बनाए, श्रेष्ठ कर्मों का ज्ञान स्पष्ट समझाए भाग्य की लकीर खींचने चाहो उतना खींच लो। सर्व खुले खजानों की चाबी आपके हाथ में दी है।

➢ सेवाधारी भी बनाते लेकिन साथ-साथ बुद्धिवानों की बुद्धि बन आत्माओं को टच भी करते जिससे नाम बच्चों का, काम बाप का सहज हो जाता है। इतना लाड और प्यार से लाडले बनाए पालना करते जो सदा अनेक झूलों में झूलाते रहते हैं! पांव नीचे नहीं रखने देते। कभी खुशी के

53

➢ बाप के बन गये - यह खुशी सदा रहती है? दु:ख की दुनिया से निकल सुख के संसार में आ गये। दुनिया दु:ख में चिल्ला रही है और आप सुख के संसार में, सुख के झूले में झूल रहे हो। कितना अंतर है! दुनिया ढूँढ़ रही है और आप मिलन मना रहे हो। क्या-क्या मिला है, उसकी लिस्ट निकालो तो बहुत लम्बी लिस्ट हो जायेगी

➢ जैसे बाप ऊंचे ते ऊंचा गाया हुआ है, ऐसे बच्चे भी ऊंचे और संगमयुग भी ऊंचा है। सारे कल्प में संगमयुग जैसा ऊंचा कोई युग नहीं है क्योंकि इस युग में ही बाप और बच्चों का मिलना होता है। और कोई युग में आत्मा और परमात्मा का मेला नहीं होता है।

➢ सब कुछ तेरा करने से। मेरा कुछ नहीं, सब तेरा है। जब तेरा है तो फिकर किस बात का? जिन्होंने सब कुछ तेरा किया, वही बेफिकर बादशाह बनते हैं।

➢ तेरा और मेरा शब्द में थोड़ा-सा अन्तर है। तेरा कहना - सब प्राप्त होना, मेरा कहना - सब गँवाना। द्वापर से मेरा-मेरा कहा तो क्या हुआ? सब गँवा दिया ना। तन्दुरूस्ती भी चली गई, मन की शान्ति भी चली गई और धन भी चला गया। कहाँ विश्व के राजन और कहाँ छोटे-मोटे दफ्तर के क्लर्क बन गये

17.10.87

➢ जो जितनी जिम्मेवारी लेता, उतना ही बाप सहयोग देने का जिम्मेवार है। जब बाप जिम्मेवारी ले लेते तो मुश्किल हुआ या सहज? जब बाप को जिम्मेवारी दे दी, तो स्वयं नहीं उठानी चाहिए। जिसके निमित्त बनते, उनकी जिम्मेवारी अपनी समझते हो। तो मुश्किल हो जाती है। ज़िम्मेवार बाप है न कि आप। अपने-आप के ऊपर बोझ तो नहीं रख लेते? कइयों को बोझ उठाने की आदत होती है। कितना भी कहो फिर भी उठा लेते हैं। यह न हो जाय, ऐसा न हो जाय यह व्यर्थ का बोझ है, बोझ बाप के ऊपर छोड़ दो। बाप का बन बाप के ऊपर छोड़ने से सफ़लता भी ज्यादा, उन्नति भी ज्यादा और सहज हो जाएगा।

11-1-77

➢ यमुना के किनारे पर कौन रह सकेंगे? जिन्होंने सदा के लिए पुरानी दुनिया से किनारा किया है और बाप को सदा साथी बनाया है, वही यमुना के किनारे साथ महल वाले होंगे।

➢ श्री कृष्ण के साथ पढ़ने वाले कौन होंगे? पढ़ने पढ़ाने वाले साथी भी होंगे ना? जिसका सदैव पढ़ाई पढ़ाने और पढ़ने में विशेष पार्ट है वही वहाँ भी विशेष पढ़ाई के साथी बनेंगे। रास करने वाले कौन होंगे? जिन्होंने संगम पर बाप के साथ समान संस्कार मिलाने की रास मिलाई होगी। तो यहाँ जिनके बाप समान संस्कारों के रास मिलती है वे वहाँ रास करेंगे।

➢ रॉयल फैमली में कौन आयेंगे? जो सदैव अपनी प्यूरिटी की रॉयलटी में रहते हैं। कहाँ भी हद के आकर्षण में आँख नहीं डूबती।

➢ बाप के बन गये - यह खुशी सदा रहती है? दु:ख की दुनिया से निकल सुख के संसार में आ गये। दुनिया दु:ख में चिल्ला रही है और आप सुख के संसार में, सुख के झूले में झूल रहे हो। कितना अंतर है! दुनिया ढूँढ़ रही है और आप मिलन मना रहे हो। क्या-क्या मिला है, उसकी लिस्ट निकालो तो बहुत लम्बी लिस्ट हो जायेगी

➢ जैसे बाप ऊंचे ते ऊंचा गाया हुआ है, ऐसे बच्चे भी ऊंचे और संगमयुग भी ऊंचा है। सारे कल्प में संगमयुग जैसा ऊंचा कोई युग नहीं है क्योंकि इस युग में ही बाप और बच्चों का मिलना होता है। और कोई युग में आत्मा और परमात्मा का मेला नहीं होता है।

➢ सब कुछ तेरा करने से। मेरा कुछ नहीं, सब तेरा है। जब तेरा है तो फिकर किस बात का? जिन्होंने सब कुछ तेरा किया, वही बेफिकर बादशाह बनते हैं।

➢ तेरा और मेरा शब्द में थोड़ा-सा अन्तर है। तेरा कहना - सब प्राप्त होना, मेरा कहना - सब गँवाना। द्वापर से मेरा-मेरा कहा तो क्या हुआ? सब गँवा दिया ना। तन्दुरूस्ती भी चली गई, मन की शान्ति भी चली गई और धन भी चला गया। कहाँ विश्व के राजन और कहाँ छोटे-मोटे दफ्तर के क्लर्क बन गये

17.10.87

52

➢ जो जितनी जिम्मेवारी लेता, उतना ही बाप सहयोग देने का जिम्मेवार है। जब बाप जिम्मेवारी ले लेते तो मुश्किल हुआ या सहज? जब बाप को जिम्मेवारी दे दी, तो स्वयं नहीं उठानी चाहिए। जिसके निमित्त बनते, उनकी जिम्मेवारी अपनी समझते हो। तो मुश्किल हो जाती है। ज़िम्मेवार बाप है न कि आप। अपने-आप के ऊपर बोझ तो नहीं रख लेते? कइयों को बोझ उठाने की आदत होती है। कितना भी कहो फिर भी उठा लेते हैं। यह न हो जाय, ऐसा न हो जाय यह व्यर्थ का बोझ है, बोझ बाप के ऊपर छोड़ दो। बाप का बन बाप के ऊपर छोड़ने से सफ़लता भी ज्यादा, उन्नति भी ज्यादा और सहज हो जाएगा।

11-1-77

➢ यमुना के किनारे पर कौन रह सकेंगे? जिन्होंने सदा के लिए पुरानी दुनिया से किनारा किया है और बाप को सदा साथी बनाया है, वही यमुना के किनारे साथ महल वाले होंगे।

➢ श्री कृष्ण के साथ पढ़ने वाले कौन होंगे? पढ़ने पढ़ाने वाले साथी भी होंगे ना? जिसका सदैव पढ़ाई पढ़ाने और पढ़ने में विशेष पार्ट है वही वहाँ भी विशेष पढ़ाई के साथी बनेंगे। रास करने वाले कौन होंगे? जिन्होंने संगम पर बाप के साथ समान संस्कार मिलाने की रास मिलाई होगी। तो यहाँ जिनके बाप समान संस्कारों के रास मिलती है वे वहाँ रास करेंगे।

➢ रॉयल फैमली में कौन आयेंगे? जो सदैव अपनी प्यूरिटी की रॉयलटी में रहते हैं। कहाँ भी हद के आकर्षण में आँख नहीं डूबती।

21

2-2-77

➢ अपने आप से पूछो कि मैं सदा सुहागिन हूँ? सदा सुहागिन एक श्वास वा एक पल भी साथ नहीं छोड़ती है। सदा सुहागिन के मन के बोल हैं - साथ रहेंगे, साथ जीयेंगे, साथ मरेंगे। सदा सुहागिन के नयनों में, मुख में साजन की सूरत और सीरत समाई हुई होती

➢ सदा सुहाग के साथ सदा भाग्य। सिर्फ सुहाग नहीं लेकिन भाग्य भी अर्थात् - भाग्यवान हो। सदा भाग्यवान की निशानी है लाईट का क्राउन।

सदा भाग्यवान सदा खुश होगा। भाग्य कम तो खुशी भी कम, खुशी कम अर्थात् सदा भाग्यवान नहीं।

28-4-77

➢ जैसे दुनिया में आजकल विशेष सभी कम्पैनियन और कंपनी चाहते हैं। इसके पीछे ही अपना समय, तन-मन-धन लगाते हैं। तो आपको बाप जैसा कम्पैनियन और कम्पनी सारे कल्प में नहीं मिल सकेगी। लौकिक में कम्पैनियन धोखा भी दे देते, दु:ख भी देते, मूड भी बदलते, कभी हंसेंगे, कभी रुलायेंगे। लेकिन अलौकिक कम्पैनियन तो सदा हर्षाते हैं। कब मूड ऑफ नहीं करते। धोखे से बचाते हैं। सदा एक का हजार गुना देने वाला दाता है, फिर भी कम्पैनियन को न पहचानने कारण सदा साथ के बजाय किनारा कर लेते। नखरे बहुत करते हैं। कभी मन को मोड़ लेते, कभी बुद्धि से यहाँ वहाँ भटकने लग जाते हैं। कभी संकल्प से तलाक भी दे देते

➢ भिन्न-भिन्न समय पर भिन्न-भिन्न सम्बन्ध से, भिन्न-भिन्न अपने स्वरूप के स्मृति को इमर्ज रूप में अनुभव करो तो बाप का सदा साथ स्वत: ही अनुभव करेंगे और यह संगमयुग की ब्राह्मण जीवन सदा ही अमूल्य अनुभव होती रहेगी।

14.10.87

➢ सारा विश्व जिस श्रेष्ठ भाग्य के लिए पुकार रहा है कि हमारा भाग्य खुल जाए... आपका भाग्य तो खुल गया। इससे बड़ी खुशी की बात और क्या होगी! भाग्यविधाता ही हमारा बाप है - ऐसा नशा है ना! जिसका नाम ही भाग्यविधाता है उसका भाग्य क्या होगा! इससे बड़ा भाग्य कोई हो सकता है?

➢ सदैव वाह मेरा भाग्य और भाग्य-विधाता बाप ! - यही गीत गाते खुशी में उड़ते रहो। जिसका इतना श्रेष्ठ भाग्य हो गया उसको और क्या चाहिए?

➢ मकान अच्छा चाहिए, कार अच्छी चाहिए... नहीं। जिसको मन की खुशी मिल गई, उसे सर्व प्राप्तियाँ हो गई! कार तो क्या लेकिन कारून का खजाना मिल गया! कोई अप्राप्त वस्तु है ही नहीं। ऐसे भाग्यवान हो! विनाशी इच्छा क्या करेंगे। जो आज है, कल है ही नहीं - उसकी इच्छा क्या रखेंगे।

➢ कितना बड़ा भाग्य है! जहाँ कोई इच्छा नहीं, इच्छा मात्रम् अविद्या है - ऐसा श्रेष्ठ भाग्य भाग्यविधाता बाप द्वारा प्राप्त हो गया।

2-2-77

➢ अपने आप से पूछो कि मैं सदा सुहागिन हूँ? सदा सुहागिन एक श्वास वा एक पल भी साथ नहीं छोड़ती है। सदा सुहागिन के मन के बोल हैं - साथ रहेंगे, साथ जीयेंगे, साथ मरेंगे। सदा सुहागिन के नयनों में, मुख में साजन की सूरत और सीरत समाई हुई होती

➢ सदा सुहाग के साथ सदा भाग्य। सिर्फ सुहाग नहीं लेकिन भाग्य भी अर्थात् - भाग्यवान हो। सदा भाग्यवान की निशानी है लाईट का क्राउन।

सदा भाग्यवान सदा खुश होगा। भाग्य कम तो खुशी भी कम, खुशी कम अर्थात् सदा भाग्यवान नहीं।

28-4-77

➢ जैसे दुनिया में आजकल विशेष सभी कम्पैनियन और कंपनी चाहते हैं। इसके पीछे ही अपना समय, तन-मन-धन लगाते हैं। तो आपको बाप जैसा कम्पैनियन और कम्पनी सारे कल्प में नहीं मिल सकेगी। लौकिक में कम्पैनियन धोखा भी दे देते, दु:ख भी देते, मूड भी बदलते, कभी हंसेंगे, कभी रुलायेंगे। लेकिन अलौकिक कम्पैनियन तो सदा हर्षाते हैं। कब मूड ऑफ नहीं करते। धोखे से बचाते हैं। सदा एक का हजार गुना देने वाला दाता है, फिर भी कम्पैनियन को न पहचानने कारण सदा साथ के बजाय किनारा कर लेते। नखरे बहुत करते हैं। कभी मन को मोड़ लेते, कभी बुद्धि से यहाँ वहाँ भटकने लग जाते हैं। कभी संकल्प से तलाक भी दे देते

➢ भिन्न-भिन्न समय पर भिन्न-भिन्न सम्बन्ध से, भिन्न-भिन्न अपने स्वरूप के स्मृति को इमर्ज रूप में अनुभव करो तो बाप का सदा साथ स्वत: ही अनुभव करेंगे और यह संगमयुग की ब्राह्मण जीवन सदा ही अमूल्य अनुभव होती रहेगी।

14.10.87

➢ सारा विश्व जिस श्रेष्ठ भाग्य के लिए पुकार रहा है कि हमारा भाग्य खुल जाए... आपका भाग्य तो खुल गया। इससे बड़ी खुशी की बात और क्या होगी! भाग्यविधाता ही हमारा बाप है - ऐसा नशा है ना! जिसका नाम ही भाग्यविधाता है उसका भाग्य क्या होगा! इससे बड़ा भाग्य कोई हो सकता है?

➢ सदैव वाह मेरा भाग्य और भाग्य-विधाता बाप ! - यही गीत गाते खुशी में उड़ते रहो। जिसका इतना श्रेष्ठ भाग्य हो गया उसको और क्या चाहिए?

➢ मकान अच्छा चाहिए, कार अच्छी चाहिए... नहीं। जिसको मन की खुशी मिल गई, उसे सर्व प्राप्तियाँ हो गई! कार तो क्या लेकिन कारून का खजाना मिल गया! कोई अप्राप्त वस्तु है ही नहीं। ऐसे भाग्यवान हो! विनाशी इच्छा क्या करेंगे। जो आज है, कल है ही नहीं - उसकी इच्छा क्या रखेंगे।

➢ कितना बड़ा भाग्य है! जहाँ कोई इच्छा नहीं, इच्छा मात्रम् अविद्या है - ऐसा श्रेष्ठ भाग्य भाग्यविधाता बाप द्वारा प्राप्त हो गया।

➢ जैसे, अमृतवेले दिन का आरम्भ होते बाप से मिलन मनाते - मास्टर वरदाता बन वरदाता से वरदान लेने वाली श्रेष्ठ आत्मा हूँ, डायरेक्ट भाग्यविधाता द्वारा भाग्य प्राप्त करने वाली पद्मापद्म भाग्यवान आत्मा हूँ - इस श्रेष्ठ स्वरूप को स्मृति में लाओ।

➢ मुरली सुनते हो तो यह स्मृति रहे कि गॉडली स्टूडेन्ट लाइफ (ईश्वरीय विद्यार्थी जीवन) अर्थात् भगवान का विद्यार्थी हूँ, स्वयं भगवान मेरे लिए परमधाम से पढ़ाने लिए आये हैं। यही विशेष प्राप्ति है जो स्वयं भगवान आता है। इसी स्मृति-स्वरूप से जब मुरली सुनते हैं तो कितना नशा होता!

➢ सारे दिन के हर कर्म में बाप के साथ स्मृति-स्वरूप बनते चलो - कभी भगवान का सखा वा साथी रूप का, कभी जीवन-साथी रूप का, कभी भगवान मेरा मुरब्बी बच्चा है अर्थात् पहला-पहला हकदार, पहला वारिस है। कोई ऐसा बहुत सुन्दर और बहुत लायक बच्चा बाप होता है तो माँ-बाप को कितना नशा रहता है कि मेरा बच्चा कुल दीपक है वा कुल का नाम बाला करने वाला है! जिसका भगवान बच्चा बन जाए, उसका नाम कितना बाला होगा! उसके कितने कुल का कल्याण होगा!

➢ जब कभी दुनिया के वातावरण से या भिन्न-भिन्न समस्याओं से थोड़ा भी अपने को अकेला वा उदास अनुभव करो तो ऐसे सुन्दर बच्चे रूप से खेलो, सखा रूप में खेलो। कभी थक जाते हो तो माँ के रूप में गोदी में सो जाओ, समा जाओ। कभी दिलशिकस्त के स्मृति-स्वरूप का अनुभव करो - तो दिलशिकस्त से दिलखुश हो जायेंगे।

हैं। किसी भी व्यक्ति या वैभव के वशीभूत हो जाना अर्थात् प्रभावित हो जाना। तो इतना समय अपने कम्पैनियन को संकल्प से तलाक देना हुआ।

➢ याद रखो ऐसा कम्पैनियन जो नयनों पर बिठाकर ले जाए ऐसा कब मिलेगा? तो कम्पैनियन से सदा तोड़ निभाओ। अर्थात् कम्बाइन्ड रूप में रहो।

30-4-77

➢ जिस समय सोचते हो क्या करें? कैसे करें? माया पर जीत पाना मुश्किल है, यह सोचना अर्थात् किनारा करना। सर्वशक्तिवान बाप साथ हो तो क्या यह संकल्प आ सकता है?

➢ दुनिया में भी अगर कोई विशेष आत्माओं के साथ थोड़ा सा भी समय रहता है तो उससे नशा रहता है। अगर प्राईम-मिनिस्टर के साथ थोड़ा भी समय रहे तो कितना नशा रहता है। वह तो आज है कल नहीं। लेकिन यह कितना ऊँचा है, वह भी अविनाशी है। तो इतना नशा रहता है? सदा एक रस नशा - मैं बाप का, बाप मेरा।

➢ बाबा मदद करो यह भी नहीं। बाप ने अपने पास कुछ रखा है क्या? अगर दे ही दिया फिर मांगेंगे क्या? जन्मते ही बाप ताज, तख्त, तिलक सब दे देता है। फिर मांगे क्यों? सदैव यह सोचो कि हमारे जैसे खुश-नसीब कोई नहीं, न हुआ है न होगा। तो सदा झूमते रहेंगे।

30-4-77

➢ जैसे, अमृतवेले दिन का आरम्भ होते बाप से मिलन मनाते - मास्टर वरदाता बन वरदाता से वरदान लेने वाली श्रेष्ठ आत्मा हूँ, डायरेक्ट भाग्यविधाता द्वारा भाग्य प्राप्त करने वाली पद्मापद्म भाग्यवान आत्मा हूँ - इस श्रेष्ठ स्वरूप को स्मृति में लाओ।

➢ मुरली सुनते हो तो यह स्मृति रहे कि गॉडली स्टूडेन्ट लाइफ (ईश्वरीय विद्यार्थी जीवन) अर्थात् भगवान का विद्यार्थी हूँ, स्वयं भगवान मेरे लिए परमधाम से पढ़ाने लिए आये हैं। यही विशेष प्राप्ति है जो स्वयं भगवान आता है। इसी स्मृति-स्वरूप से जब मुरली सुनते हैं तो कितना नशा होता!

➢ सारे दिन के हर कर्म में बाप के साथ स्मृति-स्वरूप बनते चलो - कभी भगवान का सखा वा साथी रूप का, कभी जीवन-साथी रूप का, कभी भगवान मेरा मुरब्बी बच्चा है अर्थात् पहला-पहला हकदार, पहला वारिस है। कोई ऐसा बहुत सुन्दर और बहुत लायक बच्चा बाप होता है तो माँ-बाप को कितना नशा रहता है कि मेरा बच्चा कुल दीपक है वा कुल का नाम बाला करने वाला है! जिसका भगवान बच्चा बन जाए, उसका नाम कितना बाला होगा! उसके कितने कुल का कल्याण होगा!

➢ जब कभी दुनिया के वातावरण से या भिन्न-भिन्न समस्याओं से थोड़ा भी अपने को अकेला वा उदास अनुभव करो तो ऐसे सुन्दर बच्चे रूप से खेलो, सखा रूप में खेलो। कभी थक जाते हो तो माँ के रूप में गोदी में सो जाओ, समा जाओ। कभी दिलशिकस्त के स्मृति-स्वरूप का अनुभव करो - तो दिलशिकस्त से दिलखुश हो जायेंगे।

50

हैं। किसी भी व्यक्ति या वैभव के वशीभूत हो जाना अर्थात् प्रभावित हो जाना। तो इतना समय अपने कम्पैनियन को संकल्प से तलाक देना हुआ।

➢ याद रखो ऐसा कम्पैनियन जो नयनों पर बिठाकर ले जाए ऐसा कब मिलेगा? तो कम्पैनियन से सदा तोड़ निभाओ। अर्थात् कम्बाइन्ड रूप में रहो।

30-4-77

➢ जिस समय सोचते हो क्या करें? कैसे करें? माया पर जीत पाना मुश्किल है, यह सोचना अर्थात् किनारा करना। सर्वशक्तिवान बाप साथ हो तो क्या यह संकल्प आ सकता है?

➢ दुनिया में भी अगर कोई विशेष आत्माओं के साथ थोड़ा सा भी समय रहता है तो उससे नशा रहता है। अगर प्राईम-मिनिस्टर के साथ थोड़ा भी समय रहे तो कितना नशा रहता है। वह तो आज है कल नहीं। लेकिन यह कितना ऊँचा है, वह भी अविनाशी है। तो इतना नशा रहता है? सदा एक रस नशा - मैं बाप का, बाप मेरा।

➢ बाबा मदद करो यह भी नहीं। बाप ने अपने पास कुछ रखा है क्या? अगर दे ही दिया फिर मांगेंगे क्या? जन्मते ही बाप ताज, तख्त, तिलक सब दे देता है। फिर मांगे क्यों? सदैव यह सोचो कि हमारे जैसे खुश-नसीब कोई नहीं, न हुआ है न होगा। तो सदा झूमते रहेंगे।

30-4-77

23

➢ जब कोई के सहारे से वा कोई स्वयं आपको साथ ले जाए, तो फिर थकने की तो बात ही नहीं है। बाप तो याद के साथ की गोदी में ले जाते हैं। पैदल करते ही क्यों हो जो थकते हो। सदा और साथ की गोद से उतरते ही क्यों हो, जो चिल्लाते हो। क्या करे? करना कुछ भी नहीं है, फिर भी थकते हो। कारण? अपनी बेसमझी।

➢ जब स्वयं सर्वशक्तिवान साथी बन गया तो उसका परिणाम क्या दिखाई देगा? सदा विजयी।

➢ जो बाप के सदा साथी हैं वह सदा निर्विघ्न होगा और जो निर्विघ्न होगा वह सदा खुश रहेगा।

5-5-77

➢ जब साथ का अनुभव होगा तो जो बाप के गुण, बाप की शक्तियाँ वह आपकी हैं। जैसे बाप रूहानी है वैसे साथ में रहने वाले भी रूहानियत में रहेंगे। 11-5-77

➢ भगवान को साथी बनाओ तो हर मुश्किल सहज हो जाएगी।

➢ रास्ते चलते कोई व्यक्ति वा वैभव को आधार नहीं बनाओ। जो आधार ही स्वयं विनाशी है, वह अविनाशी प्राप्ति क्या करा सकता।

16-5-77

➢ बाप के साथ के नशे का कल्प पहले वाला यादगार भी अभी तक गाया जा रहा है। कौन सा? अक्षोणी सेना के सामने होते, बड़े-बड़े महावीर सामने होते भी पांडवों को किसका नशा था? बाप के साथ का।

इसलिए विघ्न खेल लगता, मुश्किल नहीं लगता। विघ्न अनुभवी और शक्तिशाली बना देता है।

23-1-87

➢ सदा बुद्धि का साथ हो और बाप के हर कार्य में सहयोग का हाथ हो। एक दो के सहयोगी की निशानी-हाथ में हाथ मिलाके दिखाते हैं ना। तो सदा बाप के सहयोगी बनना - यह है सदा हाथ में हाथ। और सदा बुद्धि से साथ रहना।

➢ सदा यह स्मृति रखो कि -गॉडली गार्डन में हाथ और साथ दे चल रहे हैं या बैठे हैं। रूहानी बीच पर हाथ और साथ दे मौज मना रहे हैं। तो सदा ही मनोरंजन में रहेंगे, सदा खुश रहेंगे, सदा सम्पन्न रहेंगे।

18.3.87

➢ जितना इस समय के महत्त्व को स्मृति में रखेंगे, तो समय की सर्व महानतायें अपने जीवन में प्राप्त करते रहेंगे। सबसे ज्यादा भाग्यवान कौन है? सभी कहेंगे - मैं भाग्यविधाता बाप का बच्चा भाग्यवान हूँ। क्योंकि यह रूहानी नशा है, यह बॉडी-कॉनसेस नहीं है। इसलिए, हर एक बाप के बच्चे एक दो से भाग्यवान, श्रेष्ठ हो। यह शुद्ध नशा है। इस नशे में भाग्य को देख भाग्यविधाता बाप याद रहता है।

➢ जो बाप के साथ वा पास रहते वह दुनिया के विकारी वायब्रेशन या आकर्षण के प्रभाव से दूर रहते हैं।

20.3.87

➢ जब कोई के सहारे से वा कोई स्वयं आपको साथ ले जाए, तो फिर थकने की तो बात ही नहीं है। बाप तो याद के साथ की गोदी में ले जाते हैं। पैदल करते ही क्यों हो जो थकते हो। सदा और साथ की गोद से उतरते ही क्यों हो, जो चिल्लाते हो। क्या करे? करना कुछ भी नहीं है, फिर भी थकते हो। कारण? अपनी बेसमझी।

➢ जब स्वयं सर्वशक्तिवान साथी बन गया तो उसका परिणाम क्या दिखाई देगा? सदा विजयी।

➢ जो बाप के सदा साथी हैं वह सदा निर्विघ्न होगा और जो निर्विघ्न होगा वह सदा खुश रहेगा।

5-5-77

➢ जब साथ का अनुभव होगा तो जो बाप के गुण, बाप की शक्तियाँ वह आपकी हैं। जैसे बाप रूहानी है वैसे साथ में रहने वाले भी रूहानियत में रहेंगे। 11-5-77

➢ भगवान को साथी बनाओ तो हर मुश्किल सहज हो जाएगी।

➢ रास्ते चलते कोई व्यक्ति वा वैभव को आधार नहीं बनाओ। जो आधार ही स्वयं विनाशी है, वह अविनाशी प्राप्ति क्या करा सकता।

16-5-77

➢ बाप के साथ के नशे का कल्प पहले वाला यादगार भी अभी तक गाया जा रहा है। कौन सा? अक्षोणी सेना के सामने होते, बड़े-बड़े महावीर सामने होते भी पांडवों को किसका नशा था? बाप के साथ का।

24

इसलिए विघ्न खेल लगता, मुश्किल नहीं लगता। विघ्न अनुभवी और शक्तिशाली बना देता है।

23-1-87

➢ सदा बुद्धि का साथ हो और बाप के हर कार्य में सहयोग का हाथ हो। एक दो के सहयोगी की निशानी-हाथ में हाथ मिलाके दिखाते हैं ना। तो सदा बाप के सहयोगी बनना - यह है सदा हाथ में हाथ। और सदा बुद्धि से साथ रहना।

➢ सदा यह स्मृति रखो कि -गॉडली गार्डन में हाथ और साथ दे चल रहे हैं या बैठे हैं। रूहानी बीच पर हाथ और साथ दे मौज मना रहे हैं। तो सदा ही मनोरंजन में रहेंगे, सदा खुश रहेंगे, सदा सम्पन्न रहेंगे।

18.3.87

➢ जितना इस समय के महत्त्व को स्मृति में रखेंगे, तो समय की सर्व महानतायें अपने जीवन में प्राप्त करते रहेंगे। सबसे ज्यादा भाग्यवान कौन है? सभी कहेंगे - मैं भाग्यविधाता बाप का बच्चा भाग्यवान हूँ। क्योंकि यह रूहानी नशा है, यह बॉडी-कॉनसेस नहीं है। इसलिए, हर एक बाप के बच्चे एक दो से भाग्यवान, श्रेष्ठ हो। यह शुद्ध नशा है। इस नशे में भाग्य को देख भाग्यविधाता बाप याद रहता है।

➢ जो बाप के साथ वा पास रहते वह दुनिया के विकारी वायब्रेशन या आकर्षण के प्रभाव से दूर रहते हैं।

20.3.87

49

नहीं करेंगे। सभी एक तरफ हैं मैं अकेला दूसरी तरफ हूँ, चाहे मैजारिटी दूसरे तरफ हों और विजयी रत्न सिर्फ़ एक हो फ़िर भी वह अपने को एक नहीं लेकिन बाप मेरे साथ है इसलिए बाप के आगे अक्षोणी भी कुछ नहीं है। जहाँ बाप है वहाँ सारा संसार बाप में है। बीज है तो झाड़ उसमें है ही।

➢ ऐसे नहीं कि जब समस्या आवे उस समय बाप के आगे भी कहेंगे - बाबा आप तो मेरे साथ हो ना। आप ही मददगार हो ना। बस अब आप ही हो। मतलब का सहारा नहीं लेंगे।

25-11-85

➢ बापदादा भी कहते हैं कि सदा बाप को हाथ में हाथ दे, फिर चलो। अकेले नहीं चलो। अकेले चलेंगे तो कभी बोर हो जायेंगे और कभी किसकी नज़र भी पड़ जायेगी। बाप के साथ चलेंगे तो एक तो कभी भी माया की नजर नहीं पड़ेगी और दूसरा साथ होने के कारण सदा ही खुशी-खुशी से मौज से खाते चलते मौज मनाते जायेंगे।

10-3-86

➢ जब बाप का साथ है तो घबराने की कोई बात ही नहीं। अकेला कोई होता है तो घबराता है। लेकिन अगर कोई साथ होता है तो घबराते नहीं, बहादूर बन जाते हैं। तो जहां बाप का साथ है, वहाँ विघ्न घबरायेगा या आप घबरायेंगे? सर्वशक्तिवान के आगे विघ्न क्या है? कुछ भी नहीं।

➢ बाप का साथ अर्थात् हुआ ही पड़ा है। किनारा करते तो छोटी बात भी मुश्किल लगती। इसलिए अन्तर्मुखी हो इन अनुभवों के अन्दर जाओ फिर शक्तिशाली अनुभव करेंगे।

19-5-77

➢ सदैव एक मंत्र याद रखो - बाप को दिल का सच्चा साथी बनाकर रखेंगे तो सदा अनुभव करेंगे खुशियों की खान मेरे साथ है।

➢ संगम युग की प्रालब्ध क्या है? बाप को पाना। और भविष्य की प्रालब्ध देवपद पाना। तो दोनों प्रालब्ध की स्मृति रहती है? जिसको बाप मिल गया उसको नशा कितना होगा, बाप से ऊपर और कुछ नहीं! बाप मिला सब कुछ मिला। सदा याद में रहने से जो भी प्राप्ति है, उसका अनुभव कर सकते हो

➢ अधिकारी बच्चों के मन से सदैव यही गीत निकलेंगे जो पाना था पा लिया।

➢ पाण्डवों को नशा था बाप हमारे साथ है। बाप के साथ का नशा होने के कारण चैलेन्ज करने वाले बने। चैलेन्ज की ना कि हम विजयी बनेंगे। चैलेन्ज का आधार था बाप का साथ।

21-5-77

➢ स्वयं सर्वशक्तिवान बाप, आप बच्चों का सेवक बन हर कदम में साथ निभाता है। अति स्नेह से सिर का ताज बनाकर नयनों का सितारा बनाकर, साथ ले जाते हैं। ऐसा भाग्य जगत् गुरु वा धर्मपिता का नहीं है, क्योंकि

नहीं करेंगे। सभी एक तरफ हैं मैं अकेला दूसरी तरफ हूँ, चाहे मैजारिटी दूसरे तरफ हों और विजयी रत्न सिर्फ़ एक हो फ़िर भी वह अपने को एक नहीं लेकिन बाप मेरे साथ है इसलिए बाप के आगे अक्षोणी भी कुछ नहीं है। जहाँ बाप है वहाँ सारा संसार बाप में है। बीज है तो झाड़ उसमें है ही।

➢ ऐसे नहीं कि जब समस्या आवे उस समय बाप के आगे भी कहेंगे - बाबा आप तो मेरे साथ हो ना। आप ही मददगार हो ना। बस अब आप ही हो। मतलब का सहारा नहीं लेंगे।

25-11-85

➢ बापदादा भी कहते हैं कि सदा बाप को हाथ में हाथ दे, फिर चलो। अकेले नहीं चलो। अकेले चलेंगे तो कभी बोर हो जायेंगे और कभी किसकी नज़र भी पड़ जायेगी। बाप के साथ चलेंगे तो एक तो कभी भी माया की नजर नहीं पड़ेगी और दूसरा साथ होने के कारण सदा ही खुशी-खुशी से मौज से खाते चलते मौज मनाते जायेंगे।

10-3-86

➢ जब बाप का साथ है तो घबराने की कोई बात ही नहीं। अकेला कोई होता है तो घबराता है। लेकिन अगर कोई साथ होता है तो घबराते नहीं, बहादूर बन जाते हैं। तो जहां बाप का साथ है, वहाँ विघ्न घबरायेगा या आप घबरायेंगे? सर्वशक्तिवान के आगे विघ्न क्या है? कुछ भी नहीं।

48

➢ बाप का साथ अर्थात् हुआ ही पड़ा है। किनारा करते तो छोटी बात भी मुश्किल लगती। इसलिए अन्तर्मुखी हो इन अनुभवों के अन्दर जाओ फिर शक्तिशाली अनुभव करेंगे।

19-5-77

➢ सदैव एक मंत्र याद रखो - बाप को दिल का सच्चा साथी बनाकर रखेंगे तो सदा अनुभव करेंगे खुशियों की खान मेरे साथ है।

➢ संगम युग की प्रालब्ध क्या है? बाप को पाना। और भविष्य की प्रालब्ध देवपद पाना। तो दोनों प्रालब्ध की स्मृति रहती है? जिसको बाप मिल गया उसको नशा कितना होगा, बाप से ऊपर और कुछ नहीं! बाप मिला सब कुछ मिला। सदा याद में रहने से जो भी प्राप्ति है, उसका अनुभव कर सकते हो

➢ अधिकारी बच्चों के मन से सदैव यही गीत निकलेंगे जो पाना था पा लिया।

➢ पाण्डवों को नशा था बाप हमारे साथ है। बाप के साथ का नशा होने के कारण चैलेन्ज करने वाले बने। चैलेन्ज की ना कि हम विजयी बनेंगे। चैलेन्ज का आधार था बाप का साथ।

21-5-77

➢ स्वयं सर्वशक्तिवान बाप, आप बच्चों का सेवक बन हर कदम में साथ निभाता है। अति स्नेह से सिर का ताज बनाकर नयनों का सितारा बनाकर, साथ ले जाते हैं। ऐसा भाग्य जगत् गुरु वा धर्मपिता का नहीं है, क्योंकि

25

आप श्रेष्ठ आत्माएं सम्मुख बाप की श्रीमत लेने वाली हो। प्रेरणा द्वारा व टचिंग द्वारा नहीं, मुख वंशावली हो।

➢ जब कोई नाउम्मीदवार से उम्मीदवार बनता है वा असम्भव से सम्भव बात होती है, तो कितना नशा और खुशी होती है! ऐसा भाग्य अपना सदैव स्मृति में रहता है?

24-5-77

➢ बाप जानते हैं, मेहनत भी बहुत करते हैं; त्याग भी किया है, सहन भी बहुत करते हैं। लेकिन जिससे स्नेह होता है उसकी छोटी-सी कमजोरी भी देख नहीं सकते हैं। सदा श्रेष्ठ बनाने की शुभ भावना रहती है। इसलिए यह सब देखते, सुनते हुए भी, सम्पन्न बनाने के लिए इशारा दे रहे हैं। बाप-दादा सदा बच्चों के साथ हर कदम में सहयोगी है और अन्त तक रहेंगे। बाप को किसी के प्रति घृणा नहीं होती।

➢ विनाश की घड़ी के कांटे आप हो।

30-6-77

➢ बाप-दादा सदा बच्चों के आगे प्रत्यक्ष हैं। बच्चों से छिप नहीं सकता। जबकि बाप है ही बच्चों के प्रति, जब तक बच्चों का स्थापना के कर्त्तव्य का पार्ट है तब तक बाप-दादा बच्चों के हर संकल्प और सेकेण्ड में साथ-साथ हैं।

की माला आप बच्चों का स्वागत करने वाली है।

27-2-85

➢ अकेले सोते हो तो कहते हाय ब्लडप्रेशर है, दर्द है। तब गोली लेनी पड़ती। बाप साथ हो, बस बाबा आपके साथ सो रहे हैं, यह है गोली। ऐसा भी फ़िर समय आयेगा जैसे आदि में दवाईयाँ नहीं चलती थी।

6-3-85

➢ संगमयुग कम्बाइण्ड रहने का युग है। ऐसी वण्डरफुल जोड़ी तो सारे कल्प में नहीं मिलेगी। चाहे लक्ष्मी नारायण भी बन जाएँ लेकिन ऐसी जोड़ी तो नहीं बनेगी ना! इसलिए संगमयुग का कम्बाइण्ड रूप है। यह सेकण्ड भी अलग नहीं हो सकता। अलग हुआ और गया।

24-3-85

➢ सच्चे साथी को मेहनत नहीं करनी पड़ती। यह कदम ऐसे उठाऊँ वा वैसे उठाऊँ। स्वत: ही बाप के कदम ऊपर कदम रखने के सिवाए ज़रा भी यहाँ वहाँ हो नहीं सकता। ऐसे सच्चे साथी बच्चों के मन में, बुद्धि में, दिल में क्या समाया हुआ है? मैं बाप का, बाप मेरा । बुद्धि में है जो बाप का बेहद के खज़ानों का वर्सा है वह मेरा। दिल में दिलाराम और दिलाराम की याद। और कुछ हो नहीं सकता तो जब बाप ही याद रूप में समाया हुआ है तो जैसी स्मृति वैसी स्थिति और वैसे ही कर्म स्वत: ही होते हैं।

30-3-85

➢ निश्चयबुद्धि कभी भी किसी भी कार्य में अपने को अकेला अनुभव

आप श्रेष्ठ आत्माएं सम्मुख बाप की श्रीमत लेने वाली हो। प्रेरणा द्वारा व टचिंग द्वारा नहीं, मुख वंशावली हो।

➢ जब कोई नाउम्मीदवार से उम्मीदवार बनता है वा असम्भव से सम्भव बात होती है, तो कितना नशा और खुशी होती है! ऐसा भाग्य अपना सदैव स्मृति में रहता है?

24-5-77

➢ बाप जानते हैं, मेहनत भी बहुत करते हैं; त्याग भी किया है, सहन भी बहुत करते हैं। लेकिन जिससे स्नेह होता है उसकी छोटी-सी कमजोरी भी देख नहीं सकते हैं। सदा श्रेष्ठ बनाने की शुभ भावना रहती है। इसलिए यह सब देखते, सुनते हुए भी, सम्पन्न बनाने के लिए इशारा दे रहे हैं। बाप-दादा सदा बच्चों के साथ हर कदम में सहयोगी है और अन्त तक रहेंगे। बाप को किसी के प्रति घृणा नहीं होती।

➢ विनाश की घड़ी के कांटे आप हो।

30-6-77

➢ बाप-दादा सदा बच्चों के आगे प्रत्यक्ष हैं। बच्चों से छिप नहीं सकता। जबकि बाप है ही बच्चों के प्रति, जब तक बच्चों का स्थापना के कर्त्तव्य का पार्ट है तब तक बाप-दादा बच्चों के हर संकल्प और सेकेण्ड में साथ-साथ हैं।

की माला आप बच्चों का स्वागत करने वाली है।

27-2-85

➢ अकेले सोते हो तो कहते हाय ब्लडप्रेशर है, दर्द है। तब गोली लेनी पड़ती। बाप साथ हो, बस बाबा आपके साथ सो रहे हैं, यह है गोली। ऐसा भी फ़िर समय आयेगा जैसे आदि में दवाईयाँ नहीं चलती थी।

6-3-85

➢ संगमयुग कम्बाइण्ड रहने का युग है। ऐसी वण्डरफुल जोड़ी तो सारे कल्प में नहीं मिलेगी। चाहे लक्ष्मी नारायण भी बन जाएँ लेकिन ऐसी जोड़ी तो नहीं बनेगी ना! इसलिए संगमयुग का कम्बाइण्ड रूप है। यह सेकण्ड भी अलग नहीं हो सकता। अलग हुआ और गया।

24-3-85

➢ सच्चे साथी को मेहनत नहीं करनी पड़ती। यह कदम ऐसे उठाऊँ वा वैसे उठाऊँ। स्वत: ही बाप के कदम ऊपर कदम रखने के सिवाए ज़रा भी यहाँ वहाँ हो नहीं सकता। ऐसे सच्चे साथी बच्चों के मन में, बुद्धि में, दिल में क्या समाया हुआ है? मैं बाप का, बाप मेरा । बुद्धि में है जो बाप का बेहद के खज़ानों का वर्सा है वह मेरा। दिल में दिलाराम और दिलाराम की याद। और कुछ हो नहीं सकता तो जब बाप ही याद रूप में समाया हुआ है तो जैसी स्मृति वैसी स्थिति और वैसे ही कर्म स्वत: ही होते हैं।

30-3-85

➢ निश्चयबुद्धि कभी भी किसी भी कार्य में अपने को अकेला अनुभव

➢ मेरा भाग्य क्या है - सोचने की भी आवश्यकता नहीं क्योंकि भाग्यविधाता बाप बन गया तो बच्चे को भाग्य के जायदादा की क्या कमी होगी! भाग्य के खजाने के मालिक हो गये ना। ऐसे भाग्यवान कभी धोखा नहीं खा सकते हैं। इसलिए सहज रास्ता -कदम पर कदम उठाओ।

19.12.84

➢ चाहे कहाँ भी हो लेकिन छत्रछाया के बीच रहने वाले बच्चे सदा सेफ रहते हैं। अगर हलचल में आये तो कुछ न कुछ चोट लग जाती है। लेकिन अचल रहे तो चोट के स्थान पर होते हुए भी बाल बांका नहीं हो सकता। इसलिए बापदादा का हाथ है, साथ है, तो बेफिकर बादशाह होकर रहो और खूब ऐसे अशान्त वातावरण में शान्ति की किरणें फैलाओ। नाउम्मीद वालों को ईश्वरीय सहारे की उम्मीद दिलाओ।

26.12.84

➢ आप भाग्यवान आत्माओं की श्रेष्ठ भावना, श्रेष्ठ कामना का श्रेष्ठ संकल्प दुआ के रूप में गाये जा रहे हैं।

16-2-85

➢ बापदादा जब बच्चों की मुहब्बत को देखते हैं तो बार-बार यही वरदान देते हैं -हिम्मते बच्चे मददे बाप। सफ़लता आपका जन्म सिद्ध अधिकार है ही है। बाप का साथ होने से हर परिस्थिति से ऐसे पार कर लेते जैसे माखन से बाल। सफलता बच्चों के गले की माला है। सफलता

➢ यही बेस्ट लाइफ है। सदा हंसते रहो और गाते रहो और बाप के साथ चलते रहो। ऐसा साथ सारे कल्प में नहीं मिल सकता। संगम पर भी अगर और किसी को ढूँढो तो मिलेगा? नहीं ना। बाप ने आपको ढूँढा या आपने? ढूँढते तो आप भी थे, रास्ता रांग लिया। ढूँढना तो था बाप को, ढूँढा भाइयों को इसलिए ढूँढ नहीं सके।

18.1.78

➢ जो सदा बाप के साथ है उसके आगे परिस्थिति भी स्वस्थिति के आधार पर परिवर्तन हो जाती है। पहाड़ भी राई बन जाता है। ऐसे अनुभव करेंगे जैसे कई बार यह सब बातें पार कर चुके हैं। नथिंग न्यू। नई बात में घबराना होता। लेकिन नथिंग-न्यू ऐसा अनुभव करने वाले सदा कमल पुष्प के समान रहते हैं।

➢ आलमाइटी अथॉरिटी हमारे साथ है। आलमाइटी के आगे कितनी भी बड़ी परिस्थिति चींटी के समान है। कैसी भी परिस्थिति हो लेकिन जो बाप के बने हैं उनका बाप ज़िम्मेवार है। सोचो नहीं- कहाँ रहेंगे, कैसे रहेंगे, क्या खायेंगे। सच्चे दिल का साथी बाप है। जब तक बाप है तब तक भूखे नहीं रह सकते। जब भक्तों को अनेक प्रकार के अनुभव होते हैं, वह तो भिखारी हैं उनका पेट भर जाता है तो आप तो अधिकारी हैं, आप भूखे कैसे रह सकते। इसलिए ज़रा भी घबराओ नहीं, क्या होगा? जो होगा वह अच्छा होगा। सिर्फ छोटा सा पेपर होगा कि कहाँ तक निश्चय है? पेपर सारे जीवन का नहीं होता, एक या दो घण्टे का पेपर होता है। अगर बाप-

➢ मेरा भाग्य क्या है - सोचने की भी आवश्यकता नहीं क्योंकि भाग्यविधाता बाप बन गया तो बच्चे को भाग्य के जायदादा की क्या कमी होगी! भाग्य के खजाने के मालिक हो गये ना। ऐसे भाग्यवान कभी धोखा नहीं खा सकते हैं। इसलिए सहज रास्ता -कदम पर कदम उठाओ।

19.12.84

➢ चाहे कहाँ भी हो लेकिन छत्रछाया के बीच रहने वाले बच्चे सदा सेफ रहते हैं। अगर हलचल में आये तो कुछ न कुछ चोट लग जाती है। लेकिन अचल रहे तो चोट के स्थान पर होते हुए भी बाल बांका नहीं हो सकता। इसलिए बापदादा का हाथ है, साथ है, तो बेफिकर बादशाह होकर रहो और खूब ऐसे अशान्त वातावरण में शान्ति की किरणें फैलाओ। नाउम्मीद वालों को ईश्वरीय सहारे की उम्मीद दिलाओ।

26.12.84

➢ आप भाग्यवान आत्माओं की श्रेष्ठ भावना, श्रेष्ठ कामना का श्रेष्ठ संकल्प दुआ के रूप में गाये जा रहे हैं।

16-2-85

➢ बापदादा जब बच्चों की मुहब्बत को देखते हैं तो बार-बार यही वरदान देते हैं -हिम्मते बच्चे मददे बाप। सफ़लता आपका जन्म सिद्ध अधिकार है ही है। बाप का साथ होने से हर परिस्थिति से ऐसे पार कर लेते जैसे माखन से बाल। सफलता बच्चों के गले की माला है। सफलता

46

➢ यही बेस्ट लाइफ है। सदा हंसते रहो और गाते रहो और बाप के साथ चलते रहो। ऐसा साथ सारे कल्प में नहीं मिल सकता। संगम पर भी अगर और किसी को ढूँढो तो मिलेगा? नहीं ना। बाप ने आपको ढूँढा या आपने? ढूँढते तो आप भी थे, रास्ता रांग लिया। ढूँढना तो था बाप को, ढूँढा भाइयों को इसलिए ढूँढ नहीं सके।

18.1.78

➢ जो सदा बाप के साथ है उसके आगे परिस्थिति भी स्वस्थिति के आधार पर परिवर्तन हो जाती है। पहाड़ भी राई बन जाता है। ऐसे अनुभव करेंगे जैसे कई बार यह सब बातें पार कर चुके हैं। नथिंग न्यू। नई बात में घबराना होता। लेकिन नथिंग-न्यू ऐसा अनुभव करने वाले सदा कमल पुष्प के समान रहते हैं।

➢ आलमाइटी अथॉरिटी हमारे साथ है। आलमाइटी के आगे कितनी भी बड़ी परिस्थिति चींटी के समान है। कैसी भी परिस्थिति हो लेकिन जो बाप के बने हैं उनका बाप ज़िम्मेवार है। सोचो नहीं- कहाँ रहेंगे, कैसे रहेंगे, क्या खायेंगे। सच्चे दिल का साथी बाप है। जब तक बाप है तब तक भूखे नहीं रह सकते। जब भक्तों को अनेक प्रकार के अनुभव होते हैं, वह तो भिखारी हैं उनका पेट भर जाता है तो आप तो अधिकारी हैं, आप भूखे कैसे रह सकते। इसलिए ज़रा भी घबराओ नहीं, क्या होगा? जो होगा वह अच्छा होगा। सिर्फ छोटा सा पेपर होगा कि कहाँ तक निश्चय है? पेपर सारे जीवन का नहीं होता, एक या दो घण्टे का पेपर होता है। अगर बाप-

27

दादा सदा साथ है, पेपर देने के टाइम पर एक बल एक भरोसा है तो बिल्कुल ऐसे पार हो जायेंगे जैसे कुछ था ही नहीं।

➢ अभी बेफिकर रहो। कुछ भी होगा तो पहले बाबा के सामने आयेगा। महावीर हो ना। कहानी सुनी है ना भट्ठी के बीच पूंगरे बच गये। क्या भी हो लेकिन आप सेफ हो सिर्फ़ माया प्रुफ़ की ड्रेस पड़ी होनी चाहिए।

4.2.78

➢ कोई भी प्रकार की परिस्थिति आवे उसको पार करने का सहज साधन है बाप-दादा का साथ। अगर नहीं तो मुश्किल लगेगा। कितना भी कोई निर्बल है लेकिन सर्वशक्तिवान का साथ है तो शक्तिशाली बन जाता है। अकेला नहीं समझो एक एक बहुत कमाल कर सकते हैं।

14.2.78

➢ हर समय बाप और सेवा में मगन रहने वाले, सदा श्रेष्ठ मर्यादाओं की लकीर से संकल्प में भी बाहर न निकलने वाले मर्यादा पुरुषोत्तम, ऐसे बच्चे सदा हर सेकेण्ड हर संकल्प में जन्म-जन्म साथ रहते हैं।

➢ जैसे आजकल भी अल्पकाल के स्टेट्स को पाने वाली आत्मायें कोई प्रेज़ीडेण्ट या प्राइम मिनिस्टर बनती हैं तो उनके साथ उनकी फैमिली का भी महत्त्व हो जाता है तो सदाकाल की श्रेष्ठ आत्मा के सम्बन्ध में आने वाली आत्माओं का महत्त्व कितना ऊँचा होगा। अभी थोड़ी सी हलचल होने दो फिर देखना आदि पुरानी आत्मायें जो सदा साथ का सम्बन्ध निभाती आई हैं उन्हों का कितना महत्त्व होता है।

➢ सिर्फ कदम पर कदम रखो। यही सहज साधन बताते हैं। सिर्फ कदम रखना आपका काम है, चलाना, पार पहुँचाना, कदम-कदम पर बल भरना, थकावट मिटाना यह सब साथी का काम है। सिर्फ कदम नहीं हटाओ। सिर्फ कदम रखना यह तो मुश्किल नहीं है ना। कदम रखना अर्थात् संकल्प करना। जो साथी कहेंगे, जैसे चलायेंगे वैसे चलेंगे। अपना नहीं चलायेंगे। अपना चलना अर्थात् चिल्लाना! तो ऐसा कदम रखना आता है ना। क्या यह मुश्किल है? जिम्मेवारी लेने वाला जिम्मेवारी ले रहे हैं तो उसके ऊपर जिम्मेवारी सौंपने नहीं आती है?

➢ हर संकल्प को वेराफाय करो। बाप का संकल्प सो मेरा संकल्प है।

➢ हद के साथ की आकर्षण चाहे किसी सम्बन्ध् की, चाहे किसी साधन की अपने तरफ आकर्षित करती है इसी आकर्षण के कारण साधन को वा विनाशी सम्बन्ध को अपना साथी बना लेते हो वा सहारा बना देते हो तब अविनाशी साथी से किनारा करते हो। और सहारा छूट जाता है।

➢ एक बार धोखा खाने वाला दुबारा धोखा नहीं खाता है। अगर बार-बार धोखा खाता है तो उसको भाग्यहीन कहा जाता है। अब तो स्वयं भाग्य विधाता ब्रह्मा बाप ने सभी ब्राह्मणों की जन्म पत्री में श्रेष्ठ भाग्य की लम्बी लकीर खींच ली है ना। भाग्य विधाता ने आपका भाग्य बनाया है। भाग्य विधाता बाप होने के कारण हर ब्राह्मण बच्चे को भाग्य के भरपूर भण्डार का वर्सा दे दिया है। तो सोचो-भाग्य के भण्डार के मालिक के बालक उसको क्या कमी रह सकती है।

दादा सदा साथ है, पेपर देने के टाइम पर एक बल एक भरोसा है तो बिल्कुल ऐसे पार हो जायेंगे जैसे कुछ था ही नहीं।

➢ अभी बेफिकर रहो। कुछ भी होगा तो पहले बाबा के सामने आयेगा। महावीर हो ना। कहानी सुनी है ना भट्ठी के बीच पूंगरे बच गये। क्या भी हो लेकिन आप सेफ हो सिर्फ़ माया प्रुफ़ की ड्रेस पड़ी होनी चाहिए।

4.2.78

➢ कोई भी प्रकार की परिस्थिति आवे उसको पार करने का सहज साधन है बाप-दादा का साथ। अगर नहीं तो मुश्किल लगेगा। कितना भी कोई निर्बल है लेकिन सर्वशक्तिवान का साथ है तो शक्तिशाली बन जाता है। अकेला नहीं समझो एक एक बहुत कमाल कर सकते हैं।

14.2.78

➢ हर समय बाप और सेवा में मगन रहने वाले, सदा श्रेष्ठ मर्यादाओं की लकीर से संकल्प में भी बाहर न निकलने वाले मर्यादा पुरुषोत्तम, ऐसे बच्चे सदा हर सेकेण्ड हर संकल्प में जन्म-जन्म साथ रहते हैं।

➢ जैसे आजकल भी अल्पकाल के स्टेट्स को पाने वाली आत्मायें कोई प्रेज़ीडेण्ट या प्राइम मिनिस्टर बनती हैं तो उनके साथ उनकी फैमिली का भी महत्त्व हो जाता है तो सदाकाल की श्रेष्ठ आत्मा के सम्बन्ध में आने वाली आत्माओं का महत्त्व कितना ऊँचा होगा। अभी थोड़ी सी हलचल होने दो फिर देखना आदि पुरानी आत्मायें जो सदा साथ का सम्बन्ध निभाती आई हैं उन्हों का कितना महत्त्व होता है।

28

➢ सिर्फ कदम पर कदम रखो। यही सहज साधन बताते हैं। सिर्फ कदम रखना आपका काम है, चलाना, पार पहुँचाना, कदम-कदम पर बल भरना, थकावट मिटाना यह सब साथी का काम है। सिर्फ कदम नहीं हटाओ। सिर्फ कदम रखना यह तो मुश्किल नहीं है ना। कदम रखना अर्थात् संकल्प करना। जो साथी कहेंगे, जैसे चलायेंगे वैसे चलेंगे। अपना नहीं चलायेंगे। अपना चलना अर्थात् चिल्लाना! तो ऐसा कदम रखना आता है ना। क्या यह मुश्किल है? जिम्मेवारी लेने वाला जिम्मेवारी ले रहे हैं तो उसके ऊपर जिम्मेवारी सौंपने नहीं आती है?

➢ हर संकल्प को वेराफाय करो। बाप का संकल्प सो मेरा संकल्प है।

➢ हद के साथ की आकर्षण चाहे किसी सम्बन्ध् की, चाहे किसी साधन की अपने तरफ आकर्षित करती है इसी आकर्षण के कारण साधन को वा विनाशी सम्बन्ध को अपना साथी बना लेते हो वा सहारा बना देते हो तब अविनाशी साथी से किनारा करते हो। और सहारा छूट जाता है।

➢ एक बार धोखा खाने वाला दुबारा धोखा नहीं खाता है। अगर बार-बार धोखा खाता है तो उसको भाग्यहीन कहा जाता है। अब तो स्वयं भाग्य विधाता ब्रह्मा बाप ने सभी ब्राह्मणों की जन्म पत्री में श्रेष्ठ भाग्य की लम्बी लकीर खींच ली है ना। भाग्य विधाता ने आपका भाग्य बनाया है। भाग्य विधाता बाप होने के कारण हर ब्राह्मण बच्चे को भाग्य के भरपूर भण्डार का वर्सा दे दिया है। तो सोचो-भाग्य के भण्डार के मालिक के बालक उसको क्या कमी रह सकती है।

45

➢ जहाँ सर्व शक्तिवान बाप साथ है, सर्व शक्तियाँ साथ हैं तो समस्या समाधान के रुप में बदल जायेगी।

10-4-84

➢ गुड-मार्निंग तो सब करते हैं लेकिन आपकी गाँड के साथ मार्निंग है तो गाँडली-मार्निंग हो गई ना। गाँड के साथ रात बिताई और गाँड के साथ मार्निंग मना रहे हो। तो सदा गाँड और गुड दोनों ही याद रहें। गाँड की याद ही गुड बनाती है। अगर गाँड की याद नहीं तो गुड नहीं बन सकते। आप सबकी सदा ही गाँडली लाइफ है, इसलिए हर सेकण्ड, हर संकल्प गुड ही गुड है।

1-5-84

➢ जहाँ बाप साथ है वहाँ सदा विजय है। सदा बाप के साथ के आधार से कोई भी कार्य करेंगे तो मेहनत कम और प्राप्ति ज्यादा अनुभव होगी। बाप से थोड़ा सा भी किनारा किया तो मेहनत ज्यादा प्राप्ति कम

11-5-84

➢ साथी अर्थात् सदा-साथ रहने वाले। हर कर्म में, संकल्प में साथ निभाने वाले। हर कदम पर कदम रख आगे बढ़ने वाले। एक कदम भी मनमत, परमत पर उठाने वाले नहीं। ऐसे सदा साथी के साथ निभानेवाले सदा सहज मार्ग का अनुभव करते हैं क्योंकि बाप वा श्रेष्ठ साथी हर कदम रखते हुए रास्ता स्पष्ट और साफ कर देते हैं।

1-4-78

➢ ब्राह्मण संसार में जहाँ देखे वहाँ तू ही तू का प्रैक्टीकल अनुभव होता है। इसी अनुभव को भक्तों ने सर्वव्यापी शब्दों में कहा है

29-11-78

➢ बाप अकेला कुछ नहीं करेगा। कब कुछ किया है क्या? बाप को बुलाया और हाज़िरा हज़ूर।

5-12-78

➢ सफ़लता का आधार साक्षी और साथीपन का अनुभव

➢ जीवन में साथी की तलाश करते हैं और साथी के आधार पर ही अपना जीवन बिताते हैं, अब कौन सा साथी बनाया है ? अविनाशी साथी। और कोई भी साथी समय पर वा सदा नहीं पहुँच सकता लेकिन बाप-दादा सदा और सेकेण्ड में पहुँच सकते। यह जन्म-जन्म का साथ है, भविष्य में भी बाप का तो साथ रहेगा ना। शिव बाप साक्षी हो जायेंगे और ब्रह्मा बाप साथी हो जायेंगे। अभी दोनों साथी हैं। ऐसे अनुभव करने वाले सदा खुश रहते हैं

7-12-78

➢ सिर्फ बाप के सम्बन्ध से नहीं लेकिन सर्व सम्बन्ध बाप के साथ हो गये अपना बनाना अर्थात् बाप का खुद बनना। तो सर्व सम्बन्ध से एक बाप दूसरा न कोई, जिसके सर्व सम्बन्ध बाप के साथ हो गये उसका शेष गुण क्या दिखाई देगा? वह सदा निर्मोही होगा।

➢ जहाँ सर्व शक्तिवान बाप साथ है, सर्व शक्तियाँ साथ हैं तो समस्या समाधान के रुप में बदल जायेगी।

10-4-84

➢ गुड-मार्निंग तो सब करते हैं लेकिन आपकी गाँड के साथ मार्निंग है तो गाँडली-मार्निंग हो गई ना। गाँड के साथ रात बिताई और गाँड के साथ मार्निंग मना रहे हो। तो सदा गाँड और गुड दोनों ही याद रहें। गाँड की याद ही गुड बनाती है। अगर गाँड की याद नहीं तो गुड नहीं बन सकते। आप सबकी सदा ही गाँडली लाइफ है, इसलिए हर सेकण्ड, हर संकल्प गुड ही गुड है।

1-5-84

➢ जहाँ बाप साथ है वहाँ सदा विजय है। सदा बाप के साथ के आधार से कोई भी कार्य करेंगे तो मेहनत कम और प्राप्ति ज्यादा अनुभव होगी। बाप से थोड़ा सा भी किनारा किया तो मेहनत ज्यादा प्राप्ति कम

11-5-84

➢ साथी अर्थात् सदा-साथ रहने वाले। हर कर्म में, संकल्प में साथ निभाने वाले। हर कदम पर कदम रख आगे बढ़ने वाले। एक कदम भी मनमत, परमत पर उठाने वाले नहीं। ऐसे सदा साथी के साथ निभानेवाले सदा सहज मार्ग का अनुभव करते हैं क्योंकि बाप वा श्रेष्ठ साथी हर कदम रखते हुए रास्ता स्पष्ट और साफ कर देते हैं।

44

1-4-78

➢ ब्राह्मण संसार में जहाँ देखे वहाँ तू ही तू का प्रैक्टीकल अनुभव होता है। इसी अनुभव को भक्तों ने सर्वव्यापी शब्दों में कहा है

29-11-78

➢ बाप अकेला कुछ नहीं करेगा। कब कुछ किया है क्या? बाप को बुलाया और हाज़िरा हज़ूर।

5-12-78

➢ सफ़लता का आधार साक्षी और साथीपन का अनुभव

➢ जीवन में साथी की तलाश करते हैं और साथी के आधार पर ही अपना जीवन बिताते हैं, अब कौन सा साथी बनाया है ? अविनाशी साथी। और कोई भी साथी समय पर वा सदा नहीं पहुँच सकता लेकिन बाप-दादा सदा और सेकेण्ड में पहुँच सकते। यह जन्म-जन्म का साथ है, भविष्य में भी बाप का तो साथ रहेगा ना। शिव बाप साक्षी हो जायेंगे और ब्रह्मा बाप साथी हो जायेंगे। अभी दोनों साथी हैं। ऐसे अनुभव करने वाले सदा खुश रहते हैं

7-12-78

➢ सिर्फ बाप के सम्बन्ध से नहीं लेकिन सर्व सम्बन्ध बाप के साथ हो गये अपना बनाना अर्थात् बाप का खुद बनना। तो सर्व सम्बन्ध से एक बाप दूसरा न कोई, जिसके सर्व सम्बन्ध बाप के साथ हो गये उसका शेष गुण क्या दिखाई देगा? वह सदा निर्मोही होगा।

29

➢ हर सम्बन्ध का सुख लो। सर्व सुखों के अधिकारी बन औरों को भी बनाओ। ऐसे अधिकारी समझने वाले सदा बाप को अपना साथी बनाकर चलते हैं।

6-1-79

➢ महारथियों की अवस्था का यादगार चित्र भी है - हरेक गोपी के साथ गोपी वल्लभ का चित्र देखा है। हरेक गोपी के मुख से यही निकलता कि मेरा गोपी वल्लभ। तो ऐसे सदा साथ का चित्र यह है स्थिति का यादगार चित्र। एक दो से अलग नहीं - सदा साथ है। बाप पर पूरा हरेक का अधिकार है। ऐसे अधिकारियों का यह चित्र है जिन्होंने सदा के लिए बाप को अपना साथी बना लिया है - यह है महारथियों की स्थिति का चित्र। महारथी अर्थात् सदा साथ रहने वाले। साथ निभाने का चित्र है - महारथियों के सिवाए और आत्माएं तो कब सन्मुख, कब किनारा कर लेती। सदा साथ का अनुभव नहीं कर सकती। साथ छूटता और साथ पकड़ते हैं - इसलिए उन्हों का यह यादगार नहीं कह सकते।

10-1-79

➢ लौकिक वा अलौकिक लेकिन आलमाइटी अथार्टी आपका साथी अर्थात् फेन्ड बनकर हर समय साथ निभाते हैं। ऐसा फैन्ड फिर कभी मिल नहीं सकता। कभी -फैन्डशिप निभाते हैं - कभी कम्बाइन्ड युगल रूप निभाते हैं - ऐसा कम्बाइन्ड स्वरूप विचित्र युगल रूप जो सदा आपको कहते हैं - सारा बोझ हमें दे दो - और तुम सदा हल्के रहो - जहाँ भी

➢ जो संगमयुग पर प्राप्तियाँ हैं वह और कोई युग में नहीं हो सकतीं। संगमयुग है ही मौजों के नज़ारों का युग। मौजें ही मौजें हैं ना! खाओ तो भी बाप के साथ मौजों में खाओ। चलो तो भी भाग्यविधाता बाप के साथ हाथ देते चलो। ज्ञान-अमृत पिओ तो भी ज्ञान दाता बाप के साथ-साथ पिओ। कर्म करो तो भी करावनहार बाप के साथ निमित्त करने वाले समझ करो। सोओ तो भी याद की गोदी में सोओ। उठो तो भी भगवान से रूह-रूहान करो। सारी दिनचर्या बाप और आप। और बाप है तो पाप नहीं है। तो क्या होगा! मौजें ही मौजें होंगी ना।

17-5-83

➢ जहाँ सदा बाप का साथ है वहाँ सहज सर्व प्राप्ति हैं। अगर बाप का साथ नहीं तो सर्व प्राप्ति भी नहीं क्योंकि बाप है सर्व प्राप्तियों का दाता। जहाँ दाता साथ है वहाँ प्राप्तियाँ भी साथ होंगी।

31-12-83

➢ जब बापदादा स्वयं सदा साथ रहने की आफर कर रहे हैं तो साथ लेना चाहिए ना! ऐसे साथ सारे कल्प में कभी नहीं मिलेगा, जो बाप आकर कहे मेरे साथ रहो। ऐसे भाग्य सतयुग में भी नहीं होगा। सतयुग में भी आत्माओं के संग रहेंगे। सारे कल्प में बाप का साथ कितना समय मिलता है? बहुत थोड़ा समय है ना। तो थोड़े समय में इतना बड़ा भाग्य मिले तो सदा रहना चाहिए ना।

5-3-84

➢ हर सम्बन्ध का सुख लो। सर्व सुखों के अधिकारी बन औरों को भी बनाओ। ऐसे अधिकारी समझने वाले सदा बाप को अपना साथी बनाकर चलते हैं।

6-1-79

➢ महारथियों की अवस्था का यादगार चित्र भी है - हरेक गोपी के साथ गोपी वल्लभ का चित्र देखा है। हरेक गोपी के मुख से यही निकलता कि मेरा गोपी वल्लभ। तो ऐसे सदा साथ का चित्र यह है स्थिति का यादगार चित्र। एक दो से अलग नहीं - सदा साथ है। बाप पर पूरा हरेक का अधिकार है। ऐसे अधिकारियों का यह चित्र है जिन्होंने सदा के लिए बाप को अपना साथी बना लिया है - यह है महारथियों की स्थिति का चित्र। महारथी अर्थात् सदा साथ रहने वाले। साथ निभाने का चित्र है - महारथियों के सिवाए और आत्माएं तो कब सन्मुख, कब किनारा कर लेती। सदा साथ का अनुभव नहीं कर सकती। साथ छूटता और साथ पकड़ते हैं - इसलिए उन्हों का यह यादगार नहीं कह सकते।

10-1-79

➢ लौकिक वा अलौकिक लेकिन आलमाइटी अथार्टी आपका साथी अर्थात् फेन्ड बनकर हर समय साथ निभाते हैं। ऐसा फैन्ड फिर कभी मिल नहीं सकता। कभी -फैन्डशिप निभाते हैं - कभी कम्बाइन्ड युगल रूप निभाते हैं - ऐसा कम्बाइन्ड स्वरूप विचित्र युगल रूप जो सदा आपको कहते हैं - सारा बोझ हमें दे दो - और तुम सदा हल्के रहो - जहाँ भी

30

➢ जो संगमयुग पर प्राप्तियाँ हैं वह और कोई युग में नहीं हो सकतीं। संगमयुग है ही मौजों के नज़ारों का युग। मौजें ही मौजें हैं ना! खाओ तो भी बाप के साथ मौजों में खाओ। चलो तो भी भाग्यविधाता बाप के साथ हाथ देते चलो। ज्ञान-अमृत पिओ तो भी ज्ञान दाता बाप के साथ-साथ पिओ। कर्म करो तो भी करावनहार बाप के साथ निमित्त करने वाले समझ करो। सोओ तो भी याद की गोदी में सोओ। उठो तो भी भगवान से रूह-रूहान करो। सारी दिनचर्या बाप और आप। और बाप है तो पाप नहीं है। तो क्या होगा! मौजें ही मौजें होंगी ना।

17-5-83

➢ जहाँ सदा बाप का साथ है वहाँ सहज सर्व प्राप्ति हैं। अगर बाप का साथ नहीं तो सर्व प्राप्ति भी नहीं क्योंकि बाप है सर्व प्राप्तियों का दाता। जहाँ दाता साथ है वहाँ प्राप्तियाँ भी साथ होंगी।

31-12-83

➢ जब बापदादा स्वयं सदा साथ रहने की आफर कर रहे हैं तो साथ लेना चाहिए ना! ऐसे साथ सारे कल्प में कभी नहीं मिलेगा, जो बाप आकर कहे मेरे साथ रहो। ऐसे भाग्य सतयुग में भी नहीं होगा। सतयुग में भी आत्माओं के संग रहेंगे। सारे कल्प में बाप का साथ कितना समय मिलता है? बहुत थोड़ा समय है ना। तो थोड़े समय में इतना बड़ा भाग्य मिले तो सदा रहना चाहिए ना।

5-3-84

43

➢ सर्वशक्तिवान बाप का साथ है तो हर कदम में आगे है। स्वयं भी सदा सम्पन्न और दूसरों को भी सम्पन्न बनाने की सेवा करो।

27.3.83

➢ जिसका साथी सर्वशक्तिवान बाप है उसको सदा ही सर्व प्राप्तियाँ हैं। उनके सामने कभी भी किसी प्रकार की माया नहीं आ सकती।

➢ सदा इसी स्मृति में रहो कि स्वयं भगवान हम आत्माओं को बधाई देते हैं। जो सोचा नहीं था वह पा लिया! बाप को पाया सब कुछ पाया। सर्व प्राप्ति स्वरूप हो गये। सदा इसी भाग्य को याद करो।

7-4-83

➢ हर कदम में सर्वशक्तिवान बाप का साथ है, ऐसा अनुभव करते हो? जहाँ सर्वशक्तिवान बाप है वहाँ सर्व प्राप्तियाँ स्वत: होंगी। जैसे बीज है तो झाड़ समाया हुआ है। ऐसे सर्वशक्तिवान बाप का साथ है तो सदा मालामाल, सदा तृप्त, सदा सम्पन्न होंगे। कभी किसी बात में कमजोर नहीं होंगे

14-4-83

➢ सदा एक बाप दूसरा न कोई, आत्मायें सहयोगी हैं लेकिन साथी नहीं है, साथी तो बाप है। सहयोगी को अपना साथी समझना यह रांग है। तो सदा सेवा के साथी लेकिन सेवा में साथी बाप है। निमित्त सहयोग देते हैं, ऐसा सदा स्मृति स्वरूप हो!

9-5-83

कोई मुश्किल कार्य आये तो वह मुझे अर्पण कर दो तो मुश्किल सहज हो जावेगा।

12-1-79

➢ भोजन बनाते हो, भोजन बनाने के समय पहले भोग लगाना है अर्थात् प्यारे ते प्यारे बाप को स्वीकार कराना है - इस स्मृति से भोजन बनाओ कि किसको खिलाना है! आजकल की दुनिया में अगर कोई प्राईमिनिस्टर वा प्रेजीडेन्ट आपके पास खाने आते हैं कितनी खुशी होती है लेकिन बाप के आगे यह सब क्या हैं! तो सदा बाप आपके साथ भोजन खाते हैं - भक्त बिचारे बार-बार घण्टियाँ बजा-बजा कर थक जाते हैं, बुलाते-बुलाते भूल भी जाते हैं - लेकिन बच्चों के साथ बाप का वायदा है सदा साथ रहेंगे। तुम्हीं से खावें, तुम्हीं से बैठें, तो इससे बड़ी खुशी और क्या चाहिए

➢ आपके नाम से भी अब अनेक भक्त अल्पकाल की खुशी में आ जाते हैं। आपके जड़ चित्रों को देख खुशी में नाचने लगते हैं। ऐसे खुशनसीब आप सब को खजाने बहुत मिले हैं, अब सिर्फ यूज करो अर्थात् चाबी लगाओ।

12-1-79

➢ तमोगुणी वातावरण से सेफ्टी का साधन - बाप का साथ

➢ सर्वशक्तिवान बाप का साथ है तो हर कदम में आगे है। स्वयं भी सदा सम्पन्न और दूसरों को भी सम्पन्न बनाने की सेवा करो।

27.3.83

➢ जिसका साथी सर्वशक्तिवान बाप है उसको सदा ही सर्व प्राप्तियाँ हैं। उनके सामने कभी भी किसी प्रकार की माया नहीं आ सकती।

➢ सदा इसी स्मृति में रहो कि स्वयं भगवान हम आत्माओं को बधाई देते हैं। जो सोचा नहीं था वह पा लिया! बाप को पाया सब कुछ पाया। सर्व प्राप्ति स्वरूप हो गये। सदा इसी भाग्य को याद करो।

7-4-83

➢ हर कदम में सर्वशक्तिवान बाप का साथ है, ऐसा अनुभव करते हो? जहाँ सर्वशक्तिवान बाप है वहाँ सर्व प्राप्तियाँ स्वत: होंगी। जैसे बीज है तो झाड़ समाया हुआ है। ऐसे सर्वशक्तिवान बाप का साथ है तो सदा मालामाल, सदा तृप्त, सदा सम्पन्न होंगे। कभी किसी बात में कमजोर नहीं होंगे

14-4-83

➢ सदा एक बाप दूसरा न कोई, आत्मायें सहयोगी हैं लेकिन साथी नहीं है, साथी तो बाप है। सहयोगी को अपना साथी समझना यह रांग है। तो सदा सेवा के साथी लेकिन सेवा में साथी बाप है। निमित्त सहयोग देते हैं, ऐसा सदा स्मृति स्वरूप हो!

9-5-83

42

कोई मुश्किल कार्य आये तो वह मुझे अर्पण कर दो तो मुश्किल सहज हो जावेगा।

12-1-79

➢ भोजन बनाते हो, भोजन बनाने के समय पहले भोग लगाना है अर्थात् प्यारे ते प्यारे बाप को स्वीकार कराना है - इस स्मृति से भोजन बनाओ कि किसको खिलाना है! आजकल की दुनिया में अगर कोई प्राईमिनिस्टर वा प्रेजीडेन्ट आपके पास खाने आते हैं कितनी खुशी होती है लेकिन बाप के आगे यह सब क्या हैं! तो सदा बाप आपके साथ भोजन खाते हैं - भक्त बिचारे बार-बार घण्टियाँ बजा-बजा कर थक जाते हैं, बुलाते-बुलाते भूल भी जाते हैं - लेकिन बच्चों के साथ बाप का वायदा है सदा साथ रहेंगे। तुम्हीं से खावें, तुम्हीं से बैठें, तो इससे बड़ी खुशी और क्या चाहिए

➢ आपके नाम से भी अब अनेक भक्त अल्पकाल की खुशी में आ जाते हैं। आपके जड़ चित्रों को देख खुशी में नाचने लगते हैं। ऐसे खुशनसीब आप सब को खजाने बहुत मिले हैं, अब सिर्फ यूज करो अर्थात् चाबी लगाओ।

12-1-79

➢ तमोगुणी वातावरण से सेफ्टी का साधन - बाप का साथ

31

➢ सदा यह याद रखो कि हम सर्वशक्तिवान के साथ हैं। अगर कोई बहादुर का साथ होता है तो कितना निर्भय रहते हैं, यह तो सर्वशक्तिवान का साथ है तो कितना निर्भय रहना चाहिए।

➢ सदा अपने भाग्य का सितारा चमकता हुआ देखो। दुनिया वाले आज भी आपके भाग्य का वर्णन कर रहे हैं, तो अपने भाग्य का सितारा देखते रहो।

30.1.79

➢ बाप का स्नेह बच्चों के साथ सदा है। सदा बच्चों की याद ही बाप को रहती है और कोई काम है क्या बाप को? बच्चों को याद करना, यही काम है ना। चाहे जाने या न जाने लेकिन बाप तो याद करते हैं। जैसे बाप का काम है बच्चों को याद करना वैसे बच्चों का भी काम है बाप को याद करना। सदा लवलीन रहो।

7.12.79

➢ बाबा कहा और साथ का अनुभव किया। कोई भी बात आये, सेकेण्ड में बाबा कहा और साथ का अनुभव कर लिया। यह बाबा शब्द ही जादू का शब्द है। तो जैसे जादू की रिंग या जादू की कोई चीज़ अपने साथ रखते हैं, वैसे बाबा शब्द अपने साथ रखो। तो कभी भी किसी भी कार्य में कोई भी मुश्किल नहीं आयेगी। अगर कोई बात हो भी जाए तो बाबा शब्द याद करने और कराने से निर्विघ्न हो जायेंगे। बाबा-बाबा का

➢ जब भी बाबा कहो तो हजार भुजाओं के साथ बाबा आपके साथ है।

11.1.83

➢ जहाँ सर्व शक्तिवान बाप साथ है वहाँ यह छोटी छोटी बातें ऐसे समाप्त हो जाती हैं जैसे कुछ भी थी ही नहीं। असम्भव भी सम्भव हो जाता है क्योंकि सर्व शक्तिवान के बच्चे बन गए। मक्खन से बाल समान सब बातें सिद्ध हो जाती हैं।

➢ बाप सर्वशक्तिवान हैं, तो बच्चों को बाप अपने से भी आगे रखते हैं। बाप ने कितना ऊंच बनाया है, क्या क्या दिया है - इसी का सिमरण करते-करते सदा हर्षित और शक्तिशाली रहेंगे।

13.1.83

➢ चाहे दुनिया की अक्षौणी आत्मायें एक तरफ हो जाएं, आप अकेले हो, फिर क्या होगा? बोलो, मैं अकेला नही हूँ, बाप मेरे साथ है। बापदादा खुश होते हैं ।

21.2.83

➢ ऐसा स्नेह का जादू बच्चे बाप को लगाते हैं जो बाप को सिवाए बच्चों के और कुछ सूझता ही नहीं। निरन्तर बच्चों को याद करते हैं। तुम सब खाते हो तो भी एक का आह्वान करते हो। तो कितने बच्चों के साथ खाना पड़े। कितने बारी तो भोजन पर ही बुलाते हो।

27.2.83

➢ सदा यह याद रखो कि हम सर्वशक्तिवान के साथ हैं। अगर कोई बहादुर का साथ होता है तो कितना निर्भय रहते हैं, यह तो सर्वशक्तिवान का साथ है तो कितना निर्भय रहना चाहिए।

➢ सदा अपने भाग्य का सितारा चमकता हुआ देखो। दुनिया वाले आज भी आपके भाग्य का वर्णन कर रहे हैं, तो अपने भाग्य का सितारा देखते रहो।

30.1.79

➢ बाप का स्नेह बच्चों के साथ सदा है। सदा बच्चों की याद ही बाप को रहती है और कोई काम है क्या बाप को? बच्चों को याद करना, यही काम है ना। चाहे जाने या न जाने लेकिन बाप तो याद करते हैं। जैसे बाप का काम है बच्चों को याद करना वैसे बच्चों का भी काम है बाप को याद करना। सदा लवलीन रहो।

7.12.79

➢ बाबा कहा और साथ का अनुभव किया। कोई भी बात आये, सेकेण्ड में बाबा कहा और साथ का अनुभव कर लिया। यह बाबा शब्द ही जादू का शब्द है। तो जैसे जादू की रिंग या जादू की कोई चीज़ अपने साथ रखते हैं, वैसे बाबा शब्द अपने साथ रखो। तो कभी भी किसी भी कार्य में कोई भी मुश्किल नहीं आयेगी। अगर कोई बात हो भी जाए तो बाबा शब्द याद करने और कराने से निर्विघ्न हो जायेंगे। बाबा-बाबा का

32

➢ जब भी बाबा कहो तो हजार भुजाओं के साथ बाबा आपके साथ है।

11.1.83

➢ जहाँ सर्व शक्तिवान बाप साथ है वहाँ यह छोटी छोटी बातें ऐसे समाप्त हो जाती हैं जैसे कुछ भी थी ही नहीं। असम्भव भी सम्भव हो जाता है क्योंकि सर्व शक्तिवान के बच्चे बन गए। मक्खन से बाल समान सब बातें सिद्ध हो जाती हैं।

➢ बाप सर्वशक्तिवान हैं, तो बच्चों को बाप अपने से भी आगे रखते हैं। बाप ने कितना ऊंच बनाया है, क्या क्या दिया है - इसी का सिमरण करते-करते सदा हर्षित और शक्तिशाली रहेंगे।

13.1.83

➢ चाहे दुनिया की अक्षौणी आत्मायें एक तरफ हो जाएं, आप अकेले हो, फिर क्या होगा? बोलो, मैं अकेला नही हूँ, बाप मेरे साथ है। बापदादा खुश होते हैं ।

21.2.83

➢ ऐसा स्नेह का जादू बच्चे बाप को लगाते हैं जो बाप को सिवाए बच्चों के और कुछ सूझता ही नहीं। निरन्तर बच्चों को याद करते हैं। तुम सब खाते हो तो भी एक का आह्वान करते हो। तो कितने बच्चों के साथ खाना पड़े। कितने बारी तो भोजन पर ही बुलाते हो।

27.2.83

41

महामन्त्र सदा स्मृति में रखो तो सदा ऐसे अनुभव करेंगे छत्रछाया के नीचे चल रहे हैं।

➢ जहाँ बाप साथ है, वहाँ कोई कुछ भी नहीं कर सकता। अगर कोई थोड़ा शोर करते हैं तो भी धीरे-धीरे ठण्डे हो जायेंगे। जैसे दीपावली के मच्छर निकलते हैं और समाप्त हो जाते हैं ना। आप सागर के बच्चे सागर हो, सारे विश्व को सच्चा आर्य बनाने वाले हो - तो कोई कर ही क्या सकता है। तालाब सागर में समाकर समाप्त हो जायेंगे। जितना आप लोग बाप को याद करते हो, बाप आपको पदमगुणा याद करते हैं। इसलिए रोज़ याद का रिटर्न देने के लिए चक्र लगाते हैं। बच्चे भले सोये भी पड़े हों, बाप सर्व बच्चों की देख-देख का अपना कार्य सदा ही करते हैं। कोई कैच करते हैं कोई नहीं करते हैं, वह हुआ बच्चों का पुरुषार्थ।

➢ जो सदा बाप के साथ रहते हैं उसकी हर सेकेण्ड में बहुत ही कमाई जमा होती रहती है।

➢ बाप-दादा सदा अमृतबेले हर बच्चे की सम्भाल करने के लिए, देखने के लिए विश्व-भ्रमण करते हैं।

15.12.79

➢ बाप-दादा कभी भी अकेले नहीं हैं। सदा बच्चों के साथ है। अकेले कहीं भी रह नहीं सकते। इसलिए यादगार में भी देखो पुरूषार्थी दिलवाला मन्दिर में अकेले हैं? बच्चों के साथ हैं ना। और लास्ट की रिज़ल्ट विजय माला - उसमें भी अकेले नहीं हैं। कभी किसको कभी किसको सदा साथ में

भरोसा! इसलिए विनाशी साथी बनाने से फायदा ही क्या!

8-4-82

➢ आपके एक संकल्प का भी इतना मूल्य है जो आज तक उसको वरदान के रूप में माना जाता है। भक्त लोग यही कहते हैं कि एक सेकण्ड का सिर्फ दर्शन दे दो। तो दर्शन समय की वैल्यु है, वरदान संकल्प की वैल्यु, आपके बोल की वैल्यु - आज भी दो वचन सुनने के लिए तड़पते हैं। आपके दृष्टि की वैल्यु आज भी नज़र से निहाल कर लो, ऐसे पुकारते रहते हैं। आपके हर कर्म की वैल्यु है। बाप के साथ श्रेष्ठ कर्म का वर्णन करते गद्गद् होते हैं। तो इतना अमूल्य है आपका हर सेकण्ड, हर संकल्प।

11-4-82

➢ बच्चों की खुशी में बाप की खुशी है। सफलता मूर्त हो ना! सफलता तो साथ है ही। जब बाप साथ है तो सफलता कहाँ जायेगी! जहाँ बाप है वहाँ सर्व सिद्धियाँ साथ हैं।

13-6-82

➢ मेरा बाबा और मैं बाबा का, कितने थोड़े से शब्द हैं और सेकण्ड की बात हैं। इसको ही कहा जाता है - सहजयोगी

6.1.83

महामन्त्र सदा स्मृति में रखो तो सदा ऐसे अनुभव करेंगे छत्रछाया के नीचे चल रहे हैं।

➢ जहाँ बाप साथ है, वहाँ कोई कुछ भी नहीं कर सकता। अगर कोई थोड़ा शोर करते हैं तो भी धीरे-धीरे ठण्डे हो जायेंगे। जैसे दीपावली के मच्छर निकलते हैं और समाप्त हो जाते हैं ना। आप सागर के बच्चे सागर हो, सारे विश्व को सच्चा आर्य बनाने वाले हो - तो कोई कर ही क्या सकता है। तालाब सागर में समाकर समाप्त हो जायेंगे। जितना आप लोग बाप को याद करते हो, बाप आपको पदमगुणा याद करते हैं। इसलिए रोज़ याद का रिटर्न देने के लिए चक्र लगाते हैं। बच्चे भले सोये भी पड़े हों, बाप सर्व बच्चों की देख-देख का अपना कार्य सदा ही करते हैं। कोई कैच करते हैं कोई नहीं करते हैं, वह हुआ बच्चों का पुरुषार्थ।

➢ जो सदा बाप के साथ रहते हैं उसकी हर सेकेण्ड में बहुत ही कमाई जमा होती रहती है।

➢ बाप-दादा सदा अमृतबेले हर बच्चे की सम्भाल करने के लिए, देखने के लिए विश्व-भ्रमण करते हैं।

15.12.79

➢ बाप-दादा कभी भी अकेले नहीं हैं। सदा बच्चों के साथ है। अकेले कहीं भी रह नहीं सकते। इसलिए यादगार में भी देखो पुरूषार्थी दिलवाला मन्दिर में अकेले हैं? बच्चों के साथ हैं ना। और लास्ट की रिज़ल्ट विजय माला - उसमें भी अकेले नहीं हैं। कभी किसको कभी किसको सदा साथ में

भरोसा! इसलिए विनाशी साथी बनाने से फायदा ही क्या!

8-4-82

➢ आपके एक संकल्प का भी इतना मूल्य है जो आज तक उसको वरदान के रूप में माना जाता है। भक्त लोग यही कहते हैं कि एक सेकण्ड का सिर्फ दर्शन दे दो। तो दर्शन समय की वैल्यु है, वरदान संकल्प की वैल्यु, आपके बोल की वैल्यु - आज भी दो वचन सुनने के लिए तड़पते हैं। आपके दृष्टि की वैल्यु आज भी नज़र से निहाल कर लो, ऐसे पुकारते रहते हैं। आपके हर कर्म की वैल्यु है। बाप के साथ श्रेष्ठ कर्म का वर्णन करते गद्गद् होते हैं। तो इतना अमूल्य है आपका हर सेकण्ड, हर संकल्प।

11-4-82

➢ बच्चों की खुशी में बाप की खुशी है। सफलता मूर्त हो ना! सफलता तो साथ है ही। जब बाप साथ है तो सफलता कहाँ जायेगी! जहाँ बाप है वहाँ सर्व सिद्धियाँ साथ हैं।

13-6-82

➢ मेरा बाबा और मैं बाबा का, कितने थोड़े से शब्द हैं और सेकण्ड की बात हैं। इसको ही कहा जाता है - सहजयोगी

6.1.83

रखते हैं।

16.1.80

➢ जब प्रत्यक्षता होगी तो सब अनुभव करेंगे कि यह कौन थे और क्या कर रहे थे। जिसके साथ सर्व शक्तिवान बाप है उसकी विजय निश्चित है। पाण्डवों का पति सर्व शक्तिवान है इसलिए पाण्डव सदा विजयी रहे। साथ कभी नहीं छोड़ना, अकेले हो जायेंगे तो माया वार करेगी। बाप के साथ रहेंगे तो माया बलिहार जायेगी।

21.1.80

➢ सबसे सच्चा मीत जो श्मशान के आगे भी साथ जाए। शरीरधारी मीत तो शमशान तक ही जायेंगे तो वे दु:ख हर्ता सुख कर्ता नहीं बन सकेंगे। थोड़ा-बहुत दु:ख के समय सहयोगी बन सकते हैं। सहयोग दे सकते हैं लेकिन दु:ख हर नहीं सकते। तो सच्चा मीत मिल गया है ना? सदा इसी अविनाशी मीत के साथ रहो तो मोहब्बत में मेहनत खत्म हो जायेगी। जब मोहब्बत करना आता है तो मेहनत क्यों करते हो। बाप-दादा को कभी-कभी हँसी आती है। जैसे किसी को बोझ उठाने का अभ्यास होता है उसका आराम से बिठाओ तो वह बैठ नहीं सकता। बार-बार बोझ की तरफ भागता है और फिर साँस भी फूलता है, तो पुकारते हैं - छुड़ाओ! तो सदा प्रीत और मीत में रहो तो मेहनत समाप्त हो जायेगी। मीत से किनारा नहीं करो। सदा के साथी बन करके चलो।

6.2.80

और वे मोहित होते जायेंगे। आप 'बाबा-बाबा कहते जायेंगे, महानता सुनाते जायेंगे और वे स्नेही बनते जायेंगे।

14-1-82

➢ खाओ लेकिन बाप के साथ-साथ खाओ, अलग नही खाओ। बाप के साथ खायेंगे, बाप के साथ मौज मनायेंगे तो स्वत: ही सदा लकीर के अन्दर अशोक वाटिका में होंगे।

22-1-82

➢ जब सदा बाप का साथ अनुभव होगा तो उसकी निशानी है - सदा विजयी । अगर ज़्यादा समय युद्ध में जाता है, मेहनत का अनुभव होता है तो इससे सिद्ध है - बाप का साथ नहीं।

19-3-82

➢ जीवन में सदा कोई न कोई साथी बनाते हैं। तो आपके जीवन का साथी कौन? (बाप) ऐसा सच्चा साथी कभी भी मिल नहीं सकता। कितना भी प्यारा साथी हो लेकिन देहधारी साथी सदा का साथ नहीं निभा सकते और यह रूहानी सच्चा साथी सदा साथ निभाने वाला है।

➢ कभी कोई मुश्किलात आये, बीमारी आये, खाना बनाने की मुश्किल हो तो साथी बनाने का संकल्प आयेगा या नहीं? कभी भी ऐसा संकल्प आये तो इसे व्यर्थ संकल्प समझ सदा के लिए सेकण्ड में समाप्त कर लेना। क्योंकि जिसे आज साथी समझकर साथी बनायेंगे कल उसका क्या

रखते हैं।

16.1.80

➢ जब प्रत्यक्षता होगी तो सब अनुभव करेंगे कि यह कौन थे और क्या कर रहे थे। जिसके साथ सर्व शक्तिवान बाप है उसकी विजय निश्चित है। पाण्डवों का पति सर्व शक्तिवान है इसलिए पाण्डव सदा विजयी रहे। साथ कभी नहीं छोड़ना, अकेले हो जायेंगे तो माया वार करेगी। बाप के साथ रहेंगे तो माया बलिहार जायेगी।

21.1.80

➢ सबसे सच्चा मीत जो श्मशान के आगे भी साथ जाए। शरीरधारी मीत तो शमशान तक ही जायेंगे तो वे दु:ख हर्ता सुख कर्ता नहीं बन सकेंगे। थोड़ा-बहुत दु:ख के समय सहयोगी बन सकते हैं। सहयोग दे सकते हैं लेकिन दु:ख हर नहीं सकते। तो सच्चा मीत मिल गया है ना? सदा इसी अविनाशी मीत के साथ रहो तो मोहब्बत में मेहनत खत्म हो जायेगी। जब मोहब्बत करना आता है तो मेहनत क्यों करते हो। बाप-दादा को कभी-कभी हँसी आती है। जैसे किसी को बोझ उठाने का अभ्यास होता है उसका आराम से बिठाओ तो वह बैठ नहीं सकता। बार-बार बोझ की तरफ भागता है और फिर साँस भी फूलता है, तो पुकारते हैं - छुड़ाओ! तो सदा प्रीत और मीत में रहो तो मेहनत समाप्त हो जायेगी। मीत से किनारा नहीं करो। सदा के साथी बन करके चलो।

6.2.80

34

और वे मोहित होते जायेंगे। आप 'बाबा-बाबा कहते जायेंगे, महानता सुनाते जायेंगे और वे स्नेही बनते जायेंगे।

14-1-82

➢ खाओ लेकिन बाप के साथ-साथ खाओ, अलग नही खाओ। बाप के साथ खायेंगे, बाप के साथ मौज मनायेंगे तो स्वत: ही सदा लकीर के अन्दर अशोक वाटिका में होंगे।

22-1-82

➢ जब सदा बाप का साथ अनुभव होगा तो उसकी निशानी है - सदा विजयी । अगर ज़्यादा समय युद्ध में जाता है, मेहनत का अनुभव होता है तो इससे सिद्ध है - बाप का साथ नहीं।

19-3-82

➢ जीवन में सदा कोई न कोई साथी बनाते हैं। तो आपके जीवन का साथी कौन? (बाप) ऐसा सच्चा साथी कभी भी मिल नहीं सकता। कितना भी प्यारा साथी हो लेकिन देहधारी साथी सदा का साथ नहीं निभा सकते और यह रूहानी सच्चा साथी सदा साथ निभाने वाला है।

➢ कभी कोई मुश्किलात आये, बीमारी आये, खाना बनाने की मुश्किल हो तो साथी बनाने का संकल्प आयेगा या नहीं? कभी भी ऐसा संकल्प आये तो इसे व्यर्थ संकल्प समझ सदा के लिए सेकण्ड में समाप्त कर लेना। क्योंकि जिसे आज साथी समझकर साथी बनायेंगे कल उसका क्या

39

इतनी ही कमाई में बिजी रहो। सदा बिजी रहने से किसी भी प्रकार की माया वार नहीं करेगी

2-1-82

➢ संगम पर बापदादा सदा आपके साथ हैं। क्योंकि अभी ही बाप बच्चों के आगे हाज़िर-नाज़िर होते हैं। याद किया और हाज़िर हुए। देखते हुए न देखो, सुनते हुए न सुनो, बाप की सुनो तो चलते चलेंगे। अच्छा -

10-1-82

➢ हर कर्म में आपका भाग्य है। देखते हो तो बाप को। यह आँखें मिली ही हैं बाप को देखने के लिए। कान मिले हैं बाप का सुनने के लिए। तो भाग्य हो गया ना! हर कर्मेन्द्रिय का भाग्य है। पाँव मिले हैं हर कदम पर कदम रखने के लिए। ऐसे हर कर्मेन्द्रिय का अपना-अपना भाग्य है। तो लिस्ट निकालो कि कितने भाग्य सारे दिन में प्राप्त होते हैं! बाप को देखा, बाप का सुना, बाप के साथ सोया, बाप के साथ खाया, सब कुछ बाप के साथ करते हो। सेवा की तो भी बाप का परिचय दिया, बाप से मिलाया...तो कितना भाग्य हो गया?

➢ विश्व के आगे बाप को दिखाते तो आप बच्चे हो ना! बच्चों द्वारा बाप दिखाई देता है। बैकबोन तो बाप है ही। अगर बाप बैकबोन न बने तो आप अकेले थक जाओ। मोह भी है ना। तो बच्चों की थकावट भी बाप नहीं देख सकते।

➢ जितना-जितना बाप की ज़िगर से महिमा करेंगे, तो आप महिमा करेंगे

➢ अपने को सदा बाप की याद की छत्रछाया के अन्दर अनुभव करते हो? जितना-जितना याद में रहेंगे उतना अनुभव करेंगे कि मैं अकेली नहीं लेकिन बाप-दादा सदा साथ है। कोई भी समस्या सामने आयेगी तो अपने को कम्बाइन्ड अनुभव करेंगे, इसलिए घबरायेंगे नहीं।

➢ बाप बड़ा है और आप छोटे बच्चे हो। बड़ों पर ही बोझ रखते हैं। बोझ बाप पर रख दिया तो सदा अपने को खुश अनुभव करेंगे।

➢ जो कुछ भी ड्रामा में होता है उसमें कल्याण ही भरा हुआ है, अगर यह स्मृति में सदा रहे तो कमाई जमा होती रहेगी।

➢ चाहे बाहर की रीति से नुकसान भी दिखाई दे लेकिन उस नुकसान में भी कल्याण समाया हुआ है, ऐसा निश्चय हो। जब बाप का साथ और हाथ है तो अकल्याण हो नहीं सकता।

7.3.81

➢ जिसकी दिल सदा एक दिलाराम बाप के साथ है। एक बाप दूसरा न कोई, ऐसी स्थिति में रहने वालों के लिए स्थान है दिलतख्त । तो किस स्थान पर रहते हो? अगर तख्त छोड़ देते हो तो फाँसी के तख्ते पर चले जाते।

9.3.81

➢ आपकी दिनचर्या भी सत् हो गई है। भोजन खाना, अमृत पीना सब सत् हो गया है। आपके चित्रों को भी उठाते हैं, बिठाते हैं, परिक्रमा लगवाते हैं, भोग लगाते हैं, अमृत रखते और पीते हैं। हर कर्तव्य वा हर

इतनी ही कमाई में बिजी रहो। सदा बिजी रहने से किसी भी प्रकार की माया वार नहीं करेगी

2-1-82

➢ संगम पर बापदादा सदा आपके साथ हैं। क्योंकि अभी ही बाप बच्चों के आगे हाज़िर-नाज़िर होते हैं। याद किया और हाज़िर हुए। देखते हुए न देखो, सुनते हुए न सुनो, बाप की सुनो तो चलते चलेंगे। अच्छा -

10-1-82

➢ हर कर्म में आपका भाग्य है। देखते हो तो बाप को। यह आँखें मिली ही हैं बाप को देखने के लिए। कान मिले हैं बाप का सुनने के लिए। तो भाग्य हो गया ना! हर कर्मेन्द्रिय का भाग्य है। पाँव मिले हैं हर कदम पर कदम रखने के लिए। ऐसे हर कर्मेन्द्रिय का अपना-अपना भाग्य है। तो लिस्ट निकालो कि कितने भाग्य सारे दिन में प्राप्त होते हैं! बाप को देखा, बाप का सुना, बाप के साथ सोया, बाप के साथ खाया, सब कुछ बाप के साथ करते हो। सेवा की तो भी बाप का परिचय दिया, बाप से मिलाया...तो कितना भाग्य हो गया?

➢ विश्व के आगे बाप को दिखाते तो आप बच्चे हो ना! बच्चों द्वारा बाप दिखाई देता है। बैकबोन तो बाप है ही। अगर बाप बैकबोन न बने तो आप अकेले थक जाओ। मोह भी है ना। तो बच्चों की थकावट भी बाप नहीं देख सकते।

➢ जितना-जितना बाप की ज़िगर से महिमा करेंगे, तो आप महिमा करेंगे

38

➢ अपने को सदा बाप की याद की छत्रछाया के अन्दर अनुभव करते हो? जितना-जितना याद में रहेंगे उतना अनुभव करेंगे कि मैं अकेली नहीं लेकिन बाप-दादा सदा साथ है। कोई भी समस्या सामने आयेगी तो अपने को कम्बाइन्ड अनुभव करेंगे, इसलिए घबरायेंगे नहीं।

➢ बाप बड़ा है और आप छोटे बच्चे हो। बड़ों पर ही बोझ रखते हैं। बोझ बाप पर रख दिया तो सदा अपने को खुश अनुभव करेंगे।

➢ जो कुछ भी ड्रामा में होता है उसमें कल्याण ही भरा हुआ है, अगर यह स्मृति में सदा रहे तो कमाई जमा होती रहेगी।

➢ चाहे बाहर की रीति से नुकसान भी दिखाई दे लेकिन उस नुकसान में भी कल्याण समाया हुआ है, ऐसा निश्चय हो। जब बाप का साथ और हाथ है तो अकल्याण हो नहीं सकता।

7.3.81

➢ जिसकी दिल सदा एक दिलाराम बाप के साथ है। एक बाप दूसरा न कोई, ऐसी स्थिति में रहने वालों के लिए स्थान है दिलतख्त । तो किस स्थान पर रहते हो? अगर तख्त छोड़ देते हो तो फाँसी के तख्ते पर चले जाते।

9.3.81

➢ आपकी दिनचर्या भी सत् हो गई है। भोजन खाना, अमृत पीना सब सत् हो गया है। आपके चित्रों को भी उठाते हैं, बिठाते हैं, परिक्रमा लगवाते हैं, भोग लगाते हैं, अमृत रखते और पीते हैं। हर कर्तव्य वा हर

35

कर्म का यादगार बन गया है।

➢ आलमाइटी अथार्टी आपका साथी है। सत्यता की शक्ति वाले हो। पाँच नहीं हो लेकिन विश्व का रचयिता आपका साथी है। इसी फलक से बोलो। मानेंगे, नहीं मानेंगे, कहें, कैसे कहें। यह संकल्प तो नहीं आते जहाँ सत्यता है, सत् बाप है वहाँ सदा विजय है। निश्चय के आधार पर अनुभवी मूर्त बन बोलो तो सफलता सदा आपके साथ है।

11.4.81

➢ सदा बाप के साथ अर्थात् सदा सन्तुष्ट। बाप और आप सदा कम्बाइन्ड हो तो कम्बाइन्ड की शक्ति कितनी बड़ी है, एक कार्य के बजाए हजार कार्य कर सकते हो। क्योंकि हजार भुजाओं वाला बाप आपके साथ है।

9.10.81

➢ प्रवृत्ति में कोई खिटखिट तो नहीं होती? कभी बर्तन, बर्तन में लगकर का तो नहीं होता? क्योंकि कोई भी आवाज़ होगा तो क्या कहेंगे? भगवान के बच्चे और बर्तन, बर्तन से टकराता है! वैसे तो बर्तन, बर्तन में लगेगा तो आवाज़ जरुर होगा लेकिन यहाँ आवाज़ नहीं हो सकता, क्यों? क्योंकि यहाँ बीच में बाप है! जहाँ बीच में बाप आ गया वहाँ आवाज़ होगा? जब बीच से बाप को निकाल देते हो फिर टक्कर होता है, आवाज़ होता है। तो सदा बाप को साथ रखो। बाप साथ होगा तो कोई भी बात अगर हुई भी तो ठीक हो जायेगी। वैसे भी जब किसी दो की बात में, तीसरा बीच में

पड़ता है तो बात खत्म हो जाती है ना। ऐसे ही बाप को बीच में रखेंगे तो बात बढ़ेगी नहीं, फैसला हो जायेगा।

29.10.81

➢ वैसे भी आजकल की दुनिया में कोई किसका कार्य नहीं करता वा सहयोगी नहीं बनता तो एक दो को कहते हैं भगवान के नाम से यह काम करो। वा खुदा के नाम से यह काम करो। क्योंकि समझते हैं, भगवान के नाम से सहयोग मिल जायेगा और सफलता भी मिल जायेगी। कोई असम्भव कार्य वा होपलेस बात होती है तो भी यही कहते हैं- भगवान का नाम लो तो काम हो जायेगा। इससे क्या सिद्ध होता है? असम्भव से असम्भव, ना उम्मीद से उम्मीदवार कार्य बाप ने आकर किये हैं तब तो अब तक भी यह कहावत चलती आती है। परन्तु आप सब तो हैं ही खुदाई खिदमतगार। सिर्फ भगवान का नाम लेने वाले नहीं लेकिन भगवान के साथी बन श्रेष्ठ कार्य करने वाले हैं। तो ऐसे खुदाई खिदमतगार बच्चों के हर कार्य सफल हुए ही पड़े हैं। खुदाई खिदमतगार के कार्य में कोई असम्भव बात नहीं। सब सम्भव और सहज है।

1-11-81

➢ सारे कल्प के अन्दर ऐसा कोई बिजनेसमैन होगा जो इतनी कमाई करे! सदा यह खुशी की याद रहती है कि हम ही कल्प-कल्प ऐसे श्रेष्ठ आत्मा बने हैं? तो सदा यही समझो कि इतने बड़े बिजनेसमैन हैं और

कर्म का यादगार बन गया है।

➢ आलमाइटी अथार्टी आपका साथी है। सत्यता की शक्ति वाले हो। पाँच नहीं हो लेकिन विश्व का रचयिता आपका साथी है। इसी फलक से बोलो। मानेंगे, नहीं मानेंगे, कहें, कैसे कहें। यह संकल्प तो नहीं आते जहाँ सत्यता है, सत् बाप है वहाँ सदा विजय है। निश्चय के आधार पर अनुभवी मूर्त बन बोलो तो सफलता सदा आपके साथ है।

11.4.81

➢ सदा बाप के साथ अर्थात् सदा सन्तुष्ट। बाप और आप सदा कम्बाइन्ड हो तो कम्बाइन्ड की शक्ति कितनी बड़ी है, एक कार्य के बजाए हजार कार्य कर सकते हो। क्योंकि हजार भुजाओं वाला बाप आपके साथ है।

9.10.81

➢ प्रवृत्ति में कोई खिटखिट तो नहीं होती? कभी बर्तन, बर्तन में लगकर का तो नहीं होता? क्योंकि कोई भी आवाज़ होगा तो क्या कहेंगे? भगवान के बच्चे और बर्तन, बर्तन से टकराता है! वैसे तो बर्तन, बर्तन में लगेगा तो आवाज़ जरुर होगा लेकिन यहाँ आवाज़ नहीं हो सकता, क्यों? क्योंकि यहाँ बीच में बाप है! जहाँ बीच में बाप आ गया वहाँ आवाज़ होगा? जब बीच से बाप को निकाल देते हो फिर टक्कर होता है, आवाज़ होता है। तो सदा बाप को साथ रखो। बाप साथ होगा तो कोई भी बात अगर हुई भी तो ठीक हो जायेगी। वैसे भी जब किसी दो की बात में, तीसरा बीच में

पड़ता है तो बात खत्म हो जाती है ना। ऐसे ही बाप को बीच में रखेंगे तो बात बढ़ेगी नहीं, फैसला हो जायेगा।

29.10.81

➢ वैसे भी आजकल की दुनिया में कोई किसका कार्य नहीं करता वा सहयोगी नहीं बनता तो एक दो को कहते हैं भगवान के नाम से यह काम करो। वा खुदा के नाम से यह काम करो। क्योंकि समझते हैं, भगवान के नाम से सहयोग मिल जायेगा और सफलता भी मिल जायेगी। कोई असम्भव कार्य वा होपलेस बात होती है तो भी यही कहते हैं- भगवान का नाम लो तो काम हो जायेगा। इससे क्या सिद्ध होता है? असम्भव से असम्भव, ना उम्मीद से उम्मीदवार कार्य बाप ने आकर किये हैं तब तो अब तक भी यह कहावत चलती आती है। परन्तु आप सब तो हैं ही खुदाई खिदमतगार। सिर्फ भगवान का नाम लेने वाले नहीं लेकिन भगवान के साथी बन श्रेष्ठ कार्य करने वाले हैं। तो ऐसे खुदाई खिदमतगार बच्चों के हर कार्य सफल हुए ही पड़े हैं। खुदाई खिदमतगार के कार्य में कोई असम्भव बात नहीं। सब सम्भव और सहज है।

1-11-81

➢ सारे कल्प के अन्दर ऐसा कोई बिजनेसमैन होगा जो इतनी कमाई करे! सदा यह खुशी की याद रहती है कि हम ही कल्प-कल्प ऐसे श्रेष्ठ आत्मा बने हैं? तो सदा यही समझो कि इतने बड़े बिजनेसमैन हैं और